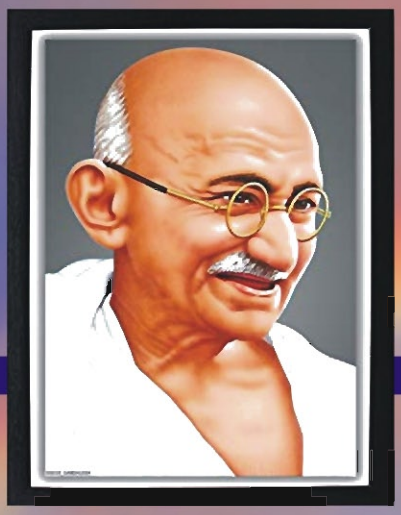

मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 04 | अक्टूबर, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

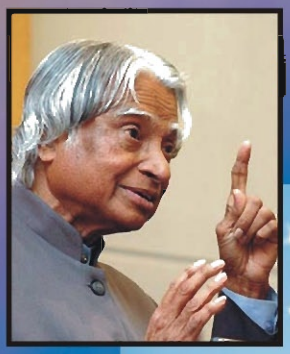

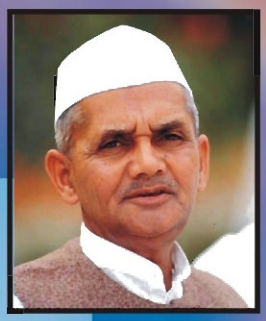

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा

राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

गांधी के सपनों का भारत

2 अक्टूबर 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का 153वाँ जन्मदिन है। एक रियासत के दीवान के घर जन्म लेकर, विदेशों में कानून की पढ़ाई कर समाजसेवा एवं राष्ट्रहित में अपना सब कुछ, यहाँ तक कि प्राण भी न्यौछावर कर देने वाले इस महापुरुष का जीवन एवं कर्म प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन करने वाले हैं। राजमहलों सरीखी सुविधाओं के साथ रह सकने वाले व्यक्ति के फक्कड़ फकीर बन अहर्निश सेवा एवं परोपकार में लगे रहने की व सच्ची कहानी सहज में मानने योग्य नहीं है। उन्हें इंसानों में एक चमत्कार बताते हुए महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, 'आने वाली पीढ़ियां शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेगी कि गांधी जी जैसा हाड़-मांस का पुतला कभी इस धरती पर हुआ होगा।

मैं सम्पूर्ण शिक्षा विभाग की ओर से राष्ट्रपिता को नमन करते हुए शिक्षक-भाई बहनों, मेरी Team Education से अपील करना चाहूंगा कि वे पूज्य बापू द्वारा दिखाए गए सत्य, अहिंसा एवं कर्त्तव्यपरायणता के मार्ग पर चलकर उनके सपनों के भारत को हकीकत में उजागर करें। कदाचित आप मेरे से उनके सपनों के भारत की परिकल्पना के बारे में जानना चाहेंगे तो सुनिए।

महात्मा गांधी ने कहा था-

'मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूंगा, जिसमें गरीब से गरीब भी यह महसूस करे कि यह देश उसका है और इसके निर्माण में उसकी जोरदार आवाज है। ऐसे भारत में ऊँच-नीच, वर्गों का भेद नहीं होगा, जिसमें सभी जातियाँ मेल मिलाप के साथ रहेगी, छुआछूत और नशेबाजी के लिए कोई स्थान नहीं होगा। स्त्रियों और पुरुषों के समान अधिकार होंगे। हम शेष दुनिया के साथ शान्ति के संबंध कायम करेंगे, न शोषण करेंगे और न शोषण होने देंगे और इसलिए हमारी सेना इतनी कम होगी, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। ऐसे तमाम हितों का, जो लाखों भोले-भाले लोगों के हितों विरुद्ध नहीं है, उदारता के साथ आदर किया जाएगा। व्यक्तिगत तौर पर मैं स्वदेशी और विदेशी के भेद से घृणा करता हूँ। यह है मेरे सपनों का भारत।'

आइए, पूज्य बापू के सपनों के भारत के निर्माण में सच्चे मन से लगकर भारत को विश्व गुरु बनने का गौरव प्राप्त करने में सहयोगी बनें। निसंदेह यह दायित्व 140 करोड़ भारतवासियों में सबका है लेकिन अनुकरणीय एवं हरावल भूमिका तो गुरुजन आपको ही निभानी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसमें आप सदैव आगे रहेंगे।

लम्बे ठहराव के पश्चात पुनः विद्यालय खुल गए हैं। कंधे पर बस्ता लटकाए स्कूल जाते मेरे बेटे-बेटियों (The Student) को जब मैं देखता हूँ तो मेरा मन खुशी से भर जाता है। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्त स्वस्थ, शिक्षित एवं समृद्ध समाज की स्थापना के लिए वे अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें। विद्यालय प्रशासन से मैं चाहूँगा कि कोरोना महामारी से मुकाबले के लिए जारी दिशा-निर्देशों (SOP) का कड़ाई से पालन करते/कराते हुए प्रभावी शिक्षण अधिगम का मार्ग प्रशस्त करें।

मैं, रीट-2021 के आयोजन की जो एक चुनौती थी को सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाने के लिए समस्त प्रशासनिक, पुलिस, परिवहन रोडवेज तथा शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारियों, कार्मिकों एवं शिक्षकों के साथ-साथ सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं सहित आमजन को धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने रीट-2021 को 'रीट महोत्सव' में बदल दिया था। बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार!

इस माह में नवरात्रि, दुर्गाष्टमी, दशहरा, करवा चौथ एवं बारावफात के महत्त्वपूर्ण त्यौहार है। दीपोत्सव दीपावली अगले माह में है। दीपावली पर घरों में साफ-सफाई की जाती है। मैं चाहता हूँ कि विद्यालयों में भी दीपावली से पूर्व विशेष स्वच्छता अभियान चलाकर स्वच्छ एवं स्वस्थ शैक्षिक वातावरण बनाने में मदद करें।

आप सबके प्रति मंगलभाव एवं शुभकामनाओं के साथ।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"लम्बे ठहराव के पश्चात पुनः विद्यालय खुल गए हैं। कंधे पर बस्ता लटकाए स्कूल जाते मेरे बेटे-बेटियों (The Student) को जब मैं देखता हूँ तो मेरा मन खुशी से भर जाता है। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्त स्वस्थ, शिक्षित एवं समृद्ध समाज की स्थापना के लिए वे अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें। विद्यालय प्रशासन से मैं चाहूँगा कि कोरोना महामारी से मुकाबले के लिए जारी दिशा-निर्देशों (SOP) का कड़ाई से पालन करते/कराते हुए प्रभावी शिक्षण अधिगम का मार्ग प्रशस्त करें।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 4 | आश्विन-कार्तिक, २०७८ | अक्टूबर, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अरुण कुमार शर्मा

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- दृढ़ प्रतिज्ञ थे, हैं और रहेंगे 5

प्रसंग विशेष

- सहृदयी एवं संवेदनशील व्यक्तित्व का यह पहलू भी.... 6
  वरिष्ठ सम्पादक

कक्षा की कसौटी-विद्यार्थी की मुस्कान

- शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य साइकोसोशियल बॉण्डिंग 7
  अरुण कुमार शर्मा (वरिष्ठ सम्पादक)

रपट

- अतिरिक्त मुख्य सचिव ने किया शिक्षकों को सम्मानित 8
  सीमा शर्मा

आलेख

- गाँधी होने के मायने 9
  भावना विशाल
- बापू का शिक्षा दर्शन और 'नयी तालीम' 10
  राजेन्द्र कुमार शर्मा 'मुसाफिर'
- महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन 12
  टीना रावल
- महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़े प्रेरक-प्रसंग 13
  कुम्भाराम चौधरी
- स्वदेशी से स्वराज : स्वराज से सुराज 14
  दीपक शर्मा
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : आदर्श व्यक्तित्व 16
  विजयलक्ष्मी
- विश्व विद्यार्थी दिवस 17
  सुमन पूनियां
- सपनों को उड़ान 19
  हिमांशु सोगानी
- बदलते परिवेश की बदलती शैक्षिक आवश्यकताएं 20
  इंद्रा
- राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण-2021 33
  रमेश कुमार हर्ष
- शिक्षक एक परामर्शदाता 35
  डॉ. रविबाला सोलंकी
- जो शिक्षा के लिए शहीद हो गए 36
  ओमप्रकाश सारस्वत
- सुखी-स्वस्थ जीवन का आधार 38
  हरपाल सिंह चौधरी
- शिक्षा में संस्कारों की प्रधानता आवश्यक है 39
  नटवर लाल पुरोहित

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : अगस्त, 2021 21-31
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 31
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 32
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-47
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 48
  मीरा मुखीजा
- हमारे भामाशाह 49-50

पुस्तक समीक्षा 40-42

- डॉ. अजय जोशी : चयनित व्यंग्य
  चयन एवं संपादन : चन्द्रकांता
  समीक्षक : **पूरन सरमा**
- संस्कारित बाल कहानियाँ
  लेखिका : करुणा श्री
  समीक्षक : **रामजी लाल घोड़ेला**
- द फिल्थि पीपल
  अनुवादक : भूपिन्द्र नायक
  मूल लेखक : मनोज कुमार स्वामी
  समीक्षक : **ओम प्रकाश तंवर**
- धागे के दो छोर
  रचयिता : सुरेन्द्र सिंह परमार
  समीक्षक : **लखन पाल सिंह**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

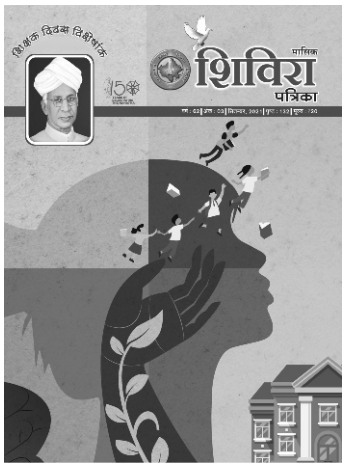

▼ चिन्तन

पात्रतायां विकासोऽयं ह्यनेकानेक-सम्पदाम्।
उपलब्धेर्विभूतीनां पन्थाश्च केवलः स्मृतः।।

अर्थात्- पात्रता का विकास ही अनेकानेक विभूतियों और सम्पदाओं की उपलब्धि का एकमात्र मार्ग है।

(प्रज्ञो. प्र.मं. अ. २.६.१)

पाठकों की बात

- सितंबर 21 मैं डॉक्टर मूलचंद बोहरा की रचना भाषा की बात पढ़कर भाषा शिक्षक के दायित्व के साथ-साथ इस बात का भी बोध हुआ की अन्य वैकल्पिक विषयों के साथ भाषा शिक्षण कितना महत्त्वपूर्ण है। उनके द्वारा भाषा शिक्षण की तकनीक के साथ-साथ भाषा शिक्षण के उद्देश्य एवं शिक्षण कौशलों का जो वर्णन किया गया है वह सराहनीय एवं प्रत्येक भाषा शिक्षक के लिए अनुकरणीय है। इसी अंक में 'अपनों से अपनी बात' एवं 'दिशाकल्प' में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय एवं निदेशक महोदय ने जिस अपनत्व के साथ शिक्षकों के द्वारा कोविड-19 में निर्वहन किए गए कर्त्तव्यों की तारीफ की है एवं भविष्य में निर्वाहित किए जा सकने वाले दायित्व के लिए विश्वास प्रकट किया है इससे हम सब शिक्षकों का आत्मबल बढ़ा है। आशा है हमें हमारे उच्चाधिकारियों से इसी प्रकार मार्गदर्शन एवं संबलन प्राप्त होता रहेगा।

प्रवीण रावल, डूंगरपुर

- सितम्बर-2021 की 'शिविरा' हर बार की तरह इस बार भी 'शिक्षक दिवस' पर विविध रचनाओं को समेटे रही। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय निरंतर विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने प्रयासों में जुटे हुए हैं, इसके लिए उनका कोटिशः साधुवाद! आदरणीय निदेशक महोदय ने 'दिशाकल्प' में शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को जो सम्मान दिया है और उनसे जो अपेक्षा की है, वह सराहनीय है। श्री जीवराज सिंह का आलेख 'बदलते परिवेश में बदले गुरुजन' सामयिक एवं शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी है। श्री कृष्ण बिहारी पाठक का आलेख 'विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व प्रशिक्षण' सभी के लिए पठनीय व अनुकरणीय है। शिक्षक दिवस विशेषांक में सम्मिलित समस्त लेखकों एवं साहित्यकारों की रचनाएँ उत्कृष्ट एवं पठनीय है, सभी को बहुत-बहुत बधाई।

पारस चन्द जैन, टोंक

- शिविरा पत्रिका का 'शिक्षक दिवस विशेषांक' माह सितम्बर 2021 को पढ़ने पर मन प्रसन्नता से भर गया। विविधताओं से भरे इस अंक में शैक्षिक चिंतन, हिन्दी कविताएँ, बाल साहित्य एवं अन्य स्थाई स्तंभ पढ़कर प्रसन्नता हुई। विशेषांक में संकलित विभिन्न विद्याओं की रचनाएँ ज्ञानवर्द्धक, पठनीय एवं अनुकरणीय है। 'ओलम्पिक खेल और भारत का प्रदर्शन'-पूनम राम सारण के आलेख में प्राचीन ओलम्पिक खेलों के संबंध में जानकारी तथा टोक्यो ओलम्पिक खेलों में भारत के प्रदर्शन व उपलब्धियों की जानकारी रोचक रही। वैसे पूर्ण अंक पठनीय एवं सहेजने के काबिल है।

सोहन लाल डागा, बीकानेर

- माह सितम्बर 2021 का शिविरा पत्रिका का 'शिक्षक दिवस विशेषांक' आवरण पृष्ठ एवं विविध कलेवर से सुसज्जित स्वरूप में आकर्षक एवं बहूपयोगी बन पड़ा है। निदेशक महोदय का पाथेय 'शिक्षा और शिक्षक सम्मान' सहित शैक्षिक चिंतन, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, राजस्थानी विविधा, बाल साहित्य आदि पठनीय होने के साथ-साथ मननीय एवं अनुकरणीय भी है। विविध प्रकार की सामग्री को एक पुस्तक रूप में उपलब्ध कराने का यह स्तुत्य प्रयास वर्ष 2015 से प्रारम्भ हुआ है। जिससे इस बहूपयोगी सामग्री के पाठक परिवार का व्याप बढ़ा है। शैक्षिक चिंतन में हंसराज सिंह तंवर, श्री बजरंग प्रसाद मजेजी और श्री संदीप जोशी के आलेख बरबस ध्यानाकर्षण योग्य लगे। मायड़ भाषा में डॉ. मदनगोपाल लढ़ा और श्री संग्राम सिंह लोढ़ा की रचना भावपूर्ण होने के साथ ही मन पर अमिट छाप भी छोड़ती है। विशेषांक तैयार करने में लगी शिविरा की टीम को बहुत-बहुत साधुवाद कि विविध रूप सौंदर्य लिए हुए पुष्प गुच्छ पाठकों को उपलब्ध कराते हुए विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को सत्साहित्य की ओर लगाव बढ़ाया है।

गोमाराम जीनगर, बीकानेर

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

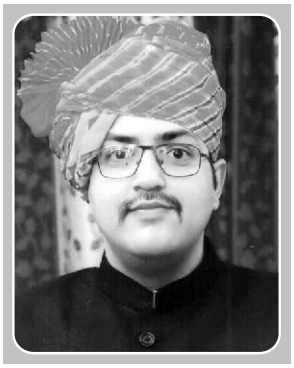

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

दृढ़ प्रतिज्ञ थे, हैं और रहेंगे

चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के समयान्तराल के बाद सितम्बर माह से विद्यालयों में कक्षा-कक्ष अध्ययन-अध्यापन शुरू होना अत्यंत सुखद है। शिक्षा के मंदिर 'विद्यालय' में विद्यार्थी और शिक्षक की जुगलबंदी से नये शैक्षिक प्रतिमान बनते हैं। विद्यालय, विद्यार्थी के जीवन राग में शिक्षा का संगीत प्रवाहित कर नई जीवनदृष्टि विकसित करने में सहायक होते हैं।

मैं कामना करता हूँ कि हमारे शिक्षक, अभिभावक और विद्यार्थी शाला संचालन में समस्त आवश्यक सावधानियाँ रखेंगे। मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) अपनाते हुए हम कोरोना के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई जीतेंगे। हमारे विद्यालयों में जिस समृद्ध शैक्षिक वातावरण के लिए शिक्षक, अभिभावक और विद्यार्थी प्रतीक्षारत थे उन सुनहरे पलों को अक्षुण्ण बनाएं रखने हेतु हम अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति और प्रबल मनोयोग से कार्य करते रहेंगे। विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ थे, हैं और रहेंगे। कोरोना काल में भी विभाग द्वारा विद्यार्थियों के सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को ऑनलाइन और डिजिटल रूप में निर्बाध प्रभावी रूप से संचालित किया गया। राज्य के इन प्रयासों की देश के अन्य राज्यों में सराहना हुई है इसके लिए मैं अपने समस्त शिक्षकों और साथियों को बधाई देता हूँ।

अक्टूबर माह विशिष्ट माह है इस माह में हम अपने 'राष्ट्रपिता' महात्मा गाँधी, पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री और 'मिसाइल मैन' नाम से विख्यात माननीय पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जन्म दिवस मनाते हैं। महापुरुषों के जन्म दिवस हमारे जीवन में प्रेरणा देते हैं हमें उनके आदर्शों को अपनाते हुए अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास करते रहना चाहिए।

आप सभी स्वस्थ और प्रसन्न रहते हुए अपने कर्त्तव्य का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से करें।

मंगलकामनाओं के साथ,

(सौरभ स्वामी)

"मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) अपनाते हुए हम कोरोना के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई जीतेंगे। हमारे विद्यालयों में जिस समृद्ध शैक्षिक वातावरण के लिए शिक्षक, अभिभावक और विद्यार्थी प्रतीक्षारत थे उन सुनहरे पलों को अक्षुण्ण बनाएं रखने हेतु हम अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति और प्रबल मनोयोग से कार्य करते रहेंगे।"

Rajasthan Education Department

परिचय

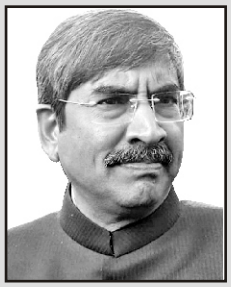

श्री पवन कुमार गोयल

अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा)

अनुशासन प्रिय, संवेदनशील प्रशासक श्री पवन कुमार गोयल (RR : 88) भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं। आपका जन्म दिनांक 01 फरवरी, 1963 तथा गृह राज्य राजस्थान है।

आपके द्वारा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील विभागों को नेतृत्व प्रदान किया गया है, जिसमें आपने अपनी प्रशासनिक क्षमता की विशिष्ट छाप छोड़ी है। आप योजनाओं के निर्माण से लेकर उनके सफल क्रियान्वयन तक शीघ्र और गुणवत्तापूर्ण रूप से सम्पन्न करवाने में दक्ष माने जाते हैं।

आप अत्यन्त विनम्र, सहृदयी, संवेदनशील होने के साथ-साथ न्यायप्रिय और अनुशासन प्रिय हैं। विभिन्न विभागों के प्रेरक नेतृत्व देने की कड़ी में आप पूर्व में शिक्षा के सारथी का दायित्व निभाते हुए डायरेक्टर, सेकेण्डरी एजूकेशन डिपार्टमेंट, राजस्थान; कमिश्नर, कॉलेज एजेकेशन, राजस्थान; प्रिंसिपल सेक्रेट्री टू गवर्नमेंट, स्कूल एजेकेशन डिपार्टमेंट रहे हैं।

शिक्षा विभाग का सौभाग्य है कि अब वर्तमान में आप एडिशनल चीफ सेक्रेट्री, स्कूल एजूकेशन डिपार्टमेंट एण्ड लैंग्वेज एण्ड लाइब्रेरी डिपार्टमेंट एण्ड पंचायती राज (एलीमेंट्री एजूकेशन) डिपार्टमेंट राजस्थान, जयपुर है, और आप श्री का प्रेरक और विलक्षण नेतृत्व मिल रहा है। आशा है आपके नेतृत्व में शिक्षा विभाग (स्कूल शिक्षा) राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में न केवल नए आयाम स्थापित करेगा अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाएगा।

सहृदयी एवं संवेदनशील व्यक्तित्व का यह पहलू भी....

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान-2021 हेतु प्रदेश के तीन शिक्षकों श्री दीपक जोशी, वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान), राउमावि., डांडूसर, बीकानेर; श्री जय सिंह वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक, राउमावि. देवरोड, झुंझुनूं, श्रीमती अचला वर्मा, व्याख्याता (गणित), बिरला बालिका विद्यापीठ पिलानी, झुंझुनूं का चयन हुआ।

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान समारोह 2021 का आयोजन ऑनलाइन हुआ जिसमें महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने वर्चुअल माध्यम से इन शिक्षकों को सम्मानित किया। राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान-2021 से सम्मानित इन शिक्षकों को महामहिम महोदय की ओर से माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा) राजस्थान सरकार श्रीमान पवन कुमार गोयल द्वारा सम्मानित किया।

सम्मान समारोह के उपरान्त माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा) महोदय सम्मानित शिक्षकों व उनके परिजनों से सहज व आत्मीय भाव से मिले। सम्मानित शिक्षकों व उनके परिजनों के साथ फोटो लेने के विनम्र आग्रह पर उनके साथ फोटो सैशन का वह दृश्य और अधिक रोचक व चित्ताकर्षक बन गया, जब उन्होंने सम्मानित शिक्षक श्री दीपक जोशी की नन्ही बालिका को अपनी गोद में लेकर फोटो खिंचवाए, भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठतम अधिकारी का ऐसा सरल व स्नेहिल व्यवहार उपस्थित महानुभावों के हृदय में अमिट छाप छोड़ गया तथा सभी शिक्षकों को अपने शिक्षार्थियों के साथ ऐसे ही स्नेहपूर्ण व्यवहार की प्रेरणा दे गया। माननीय का यह उदार व्यवहार दर्शाता है कि प्रदेश का शिक्षा रूपी शिशु न केवल संवेदनशील हाथों में है बल्कि स्नेहिल गोद में पुष्पित, पल्लवित भी है। ऐसी संवेदनशीलता राज्य के प्रत्येक शिक्षक को प्रेरणा प्रदान करती है।

–वरिष्ठ संपादक शिविरा

Rajasthan Education Department

कक्षा की कसौटी-विद्यार्थी की मुस्कान

शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य साइकोसोशियल बॉण्डिंग

❒ अरुण कुमार शर्मा

सरोज मैडम की कक्षा में प्रवेश करते ही के चेहरे पर मुस्कान की महक कक्षा के माहौल को खुशनुमा कर देती है। वहीं दूसरी ओर विज्ञान जैसे व्यावहारिक विषय को पढ़ाने के लिए सुरेश सर पूरी तैयारी के साथ अपने सिर के बाल संवार, दाढ़ी मूछों को करीने से सैट करके, मुस्कान बिखेरते हुए कक्षा में जोश के साथ आते हैं पर विद्यार्थियों में अनजाना सा भय ना जाने क्यों हर रूप से खड़ा रहता है। सरोज मैम से जिज्ञासा भरे प्रश्न करने वाले भोलू और भाविका, सुरेश सर की कक्षा में जुबान भी नहीं हिलाते। सुरेश सर की पूरी तैयारी प्रतिफल नहीं दे पाती और ठीकरा विज्ञान और गणित विषय के जटिल होने पर जा ठहरता है। ऐसा नहीं है कि सुरेश सर, सरोज मैम के मुकाबिल समर्पित नहीं है, उन्हें तथ्यों का ज्ञान नहीं है, परंतु विद्यार्थियों के साथ सहजता और मनो-सामाजिक बंधन की कहीं कोई कमी रही होगी, जिससे विद्यार्थी उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से सहज स्वीकार करने में झिझकते हैं। कक्षा की कसौटी, विद्यार्थी की मुस्कान ही होती है और विद्यार्थी की मुस्कान उनके चेहरे पर दिखाई देती है । जब उनका मन, शिक्षक को एवं उसके पढ़ाए जाने वाले अध्ययन बिंदुओं के साथ सहज रूप से स्वीकार करता है। सरोज मैम और सुरेश सर का यह दृष्टांत इसी सीखने के लिये आवश्यक मनो-सामाजिक बंधन को अभिव्यक्त करता है।

यद्यपि अधिगम की प्रक्रिया अनवरत होती है तथापि अधिगम को उचित दिशा देने के लिए मानकों का अपना महत्व होता है। जन्म के साथ शिशु सीखना प्रारंभ करता है । विभिन्न प्राधिकार और अनुभव से उसे ज्ञान प्राप्त होता रहता है परंतु औपचारिक शिक्षा अथवा शिक्षक की आवश्यकता ज्ञान को सही दिशा देने में, ज्ञान की उपयोगिता परिभाषित करने के साथ ही ज्ञान को सहज बनाने में अत्यावश्यक हो जाती है। सीखने की संक्रिया में सीखने वाले और सीखे जाने वाले के मध्य संक्रिया होती है इस संक्रिया की दिशा एवं दशा तय करने वाला शिक्षक होता है।

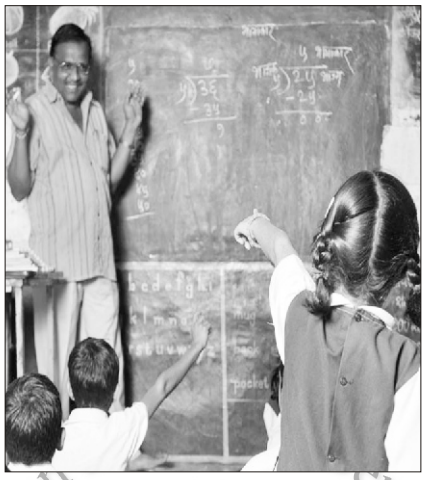

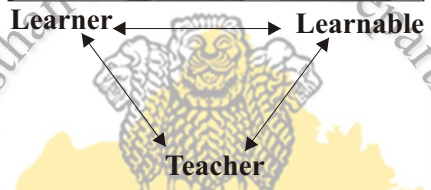

सीखने वाले के, सीखे जाने वाले तक की यात्रा में उसका पथ प्रदर्शक शिक्षक होता है। ऐसे में शिक्षार्थी एवं शिक्षक के मध्य सहज संबंध स्थापित होना आवश्यक होगा, जिससे कि शिक्षक एक प्राधिकारी (Authority) के रूप में उसे मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य होगा। क्या सीखना है? क्यों सीखना है? और कैसे सीखना है? शिक्षार्थी के लिए इन प्रश्नों का एकमेव प्रत्युत्तर है -शिक्षक।

समाज का निर्माण एकाधिक व्यक्तियों से होता है। शिक्षक जब शिक्षार्थी के साथ किसी बंधन द्वारा बंध जाता है तो यह द्वैत एक समाज की इकाई का निर्माण करता है। जिस प्रकार समाज की इकाई परिवार होती है, उसी प्रकार शिक्षार्थी एवं शिक्षक ज्ञान यात्रा हेतु एक प्रारंभिक सामाजिक इकाई होते हैं। सहज स्वीकार्यता के लिए परिवार के सदस्यों के मध्य भी मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य बंध होना आवश्यक होता है। बहुत सी बार ऐसा देखा गया है कि शिशु अपने माता के अधिक करीब होता है, पिता से झिझक रखता है। इसके विपरीत कुछ शिशु ऐसे भी होते हैं, जो अपने पिता के साथ अधिक सहज होते हैं, माता के साथ सामान्य रूप से व्यवहार करते हैं। यह जो स्वीकार्यता का बंधन है यह मनो- सामाजिक बंधन (Psychosocial Bonding) कहलाता है। सीखने के संप्रत्यय में भी कक्षा की कसौटी, यही मनोसामाजिक बंधन होता है। इसलिए औपचारिक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्यता का यह स्वरूप सहज होना चाहिए।

शिक्षार्थी के लिए, शिक्षक को सहज एवं स्वाभाविक रूप से ज्ञान, व्यक्तित्व एवं विश्वास के साथ मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक बंधन जिसे मनो-सामाजिक बंधन (Psychosocial Bonding) बनना आवश्यक होता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य बना यह बंधन उन्हें पारस्परिक रूप से एक दूसरे को सहज स्वीकार्य बनाता है, जिससे अधिगम के प्रतिफल आसानी से प्राप्त होते हैं। शिक्षक की कही बात, शिक्षार्थी द्वारा सहज स्वीकार की जाती है। साथ ही शिक्षार्थी की शंकाओं को अभिव्यक्ति प्राप्त होने में किसी प्रकार की कोई हुज्जत नहीं होती है। शिक्षक, शिक्षार्थी के हाव-भाव से ही उनकी जिज्ञासाओं को सहज समझने की क्षमता रखने लगता है। इसलिए कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ कक्षा में प्रवेश करते ही शिक्षक को इस प्रकार के सहज बंधन की स्थापना करनी चाहिए।

सरोज मैम के साथ सहज रूप से अपनी शंकाओं को अभिव्यक्त करने वाले भोलू, भाविका और अन्य विद्यार्थी, जब सुरेश सर के साथ भी वही मनोसामाजिक बंधन स्थापित कर लेंगे, शंकाओं की सहज अभिव्यक्ति और सुरेश सर के बताए गये संप्रत्ययों को सहज स्वीकार्य करना प्रारंभ कर लेंगे। कक्षा में बच्चों में मुस्कान अपनी महक स्थापित करने लगेगी और साथ ही अधिगम आसान हो जाएगा।

वरिष्ठ संपादक-शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9828460156

रपट

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2021

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने किया शिक्षकों को सम्मानित

❒ सीमा शर्मा

राष्ट्र का भविष्य बच्चों के हाथों में और परोक्ष रूप से शिक्षकों के हाथों में निहित है। शिक्षक राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकों की श्रेष्ठ समाज तथा राष्ट्र निर्माण की भूमिका के महत्त्व के फलस्वरूप उन्हें सम्मान स्वरूप देश के पहले उपराष्ट्रपति तथा दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस (5 सितम्बर) को प्रत्येक वर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष शिक्षक दिवस (दिनांक 05.09.2021) को राष्ट्रीय स्तर पर कुल 44 शिक्षकों को महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2021' से सम्मानित किया गया। इन 44 शिक्षकों में से 3 शिक्षकों का चयन राजस्थान से किया गया, जो सभी राज्यों से अधिक था। इन शिक्षकों द्वारा वर्तमान परिवेश में कोरोना सहित अन्य व्याप्त विभिन्न चुनौतियों के बीच शिक्षा को अनुभवात्मक अधिगम गतिविधियों के माध्यम से प्रासंगिक तथा मनोरंजक बनाया गया। विभिन्न विषयों के कठिन बिन्दुओं को आसान एवं रुचिकर बनाया गया। इनके नवाचारों द्वारा गणित व विज्ञान जैसे कठिन विषयों का सुगम विधियों से अध्ययन कर विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

राज्य से चयनित वरिष्ठ अध्यापक श्री दीपक जोशी, राउमावि. डांडूसर, बीकानेर, वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक श्री जयसिंह, राउमावि. देवरोड, सूरजगढ़, झुंझनूं व श्रीमती अचला वर्मा, व्याख्याता बिरला बालिका विद्यापीठ, पिलानी, सूरजगढ़, झुंझुनूं ने क्रमश: विज्ञान, शारीरिक शिक्षा तथा गणित जैसे विषयों को प्रासंगिक व रुचिकर बनाते हुए नए आयाम स्थापित किए व विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए शिक्षण में अभूतपूर्व योगदान दिया। श्री दीपक जोशी ने विज्ञान विषय के प्रति छात्रों मे रुचि व जागरूकता बढ़ाई जिससे छात्रों ने कई मॉडल बनाकर विज्ञान प्रदर्शनी में पुरस्कार प्राप्त किए व इन्होंने अपने यू-टयूब चैनल के माध्यम से भी कोरोना काल में छात्रों को अध्ययन करवाया। श्री जय सिंह, शारीरिक शिक्षक ने विद्यालय की बेकार पड़ी जमीन पर एक करोड़ रुपये की लागत से खेल मैदान विकसित किया। यहाँ छात्रों को नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिससे छात्रों ने राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन किया। खेलों में मिली सुविधा व असाधारण मार्गदर्शन से विद्यार्थियों ने अपने विद्यालयों तथा शिक्षा विभाग का नाम जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। श्रीमती अचला वर्मा ने गणित में सूत्र समझाने के लिए कई नए तरीके अपनाए जिससे गणित जैसा कठिन विषय भी विद्यार्थियों के लिए सरल व मजेदार बन गया। इन शिक्षकों को 5 सितंबर 2021 को 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' हेतु चयनित किया गया जिसका आयोजन एन.आई.सी. केन्द्र दिल्ली द्वारा ऑनलाइन किया गया। समारोह की अध्यक्षता महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने की। समारोह से पूर्व प्रदेश से राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार हेतु चयनित शिक्षकों हेतु दो दिवसीय पूर्वाभ्यास कार्यक्रम एन.आई.सी. केन्द्र जयपुर में रखा गया जिसके नोडल अधिकारी संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, जयपुर संभाग, जयपुर थे। मुख्य कार्यक्रम के पश्चात अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमान पवन कुमार गोयल ने दिनांक 06.09.2021 को अपने कार्यालय में प्रदेश के सम्मानित शिक्षकों को भी पुष्प गुच्छ भेंटकर, मेडल पहनाकर व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयसिंहपुरा, सांगानेर,
जयपुर (राज.)
मो: 9460069730

गाँधी जयन्ती विशेष

गाँधी होने के मायने

❒ भावना विशाल

डॉ. जे.एच. होम्स ने एक बार कहा था कि गाँधीजी गौतम बुद्ध के बाद महान भारतीय थे व ईसा मसीह के बाद महानतम व्यक्ति थे। गाँधीजी का यह मूल्यांकन उनके व्यक्तित्व की विराटता को देखते हुए और भी अधिक सत्य संगत हो जाता है। गाँधीजी अपनी सादगी, सरलता और उच्च कोटि के मानवीय गुणों के चलते मोहनदास करमचंद गाँधी से किस प्रकार महात्मा बने और सनातन संस्कृति के मूल्यों को धारण करके हम सबके लिए हमारे प्रिय 'बापू' बन गए, इस बात का साक्षी हमारा गौरवपूर्ण इतिहास रहा है।

गाँधीजी सर्वकालिक हैं, सार्वभौमिक हैं। 'बापू' कल भी हमारे देश, हमारे समाज ही नहीं वरन् समूचे विश्व पटल पर वांछनीय थे और वे आज भी हम सब के लिए अपरिहार्य है। विशेषकर आज की युवा पीढ़ी के लिए गाँधीजी को पढ़ना, उन्हें जानना, समझना आज के समय की महती आवश्यकता बन चुका है। आखिर वे कौन से गुण हैं जो गाँधीजी को महान बनाते हैं? एक साधारण सा सीधा-साधा, छोटा सा दिखने वाला मनुष्य किस प्रकार महानता के नूतन आयाम प्रतिस्थापित करता है, यह सब आज हमें सीखने की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को लेखनी में बांधना कदाचित संभव नहीं है किंतु उनके कुछ गुण जो विशेष ध्यान देने योग्य हैं यहाँ संक्षिप्त में चर्चा प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम तो गाँधीजी महापुरुष होने के साथ-साथ सत्पुरुष (संत) भी थे। गाँधीजी ने अपने आदर्शों की छाप अपने आसपास के जनमानस पर अपने आचरण के द्वारा अंकित की, ना कि कोरे उपदेशों और प्रवचनों द्वारा। उन्होंने मानव कल्याण हेतु लक्षित हर उत्तम व्यवहार व श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले स्वयं को ही उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

'यदि हम अग्नि में तप कर सोना बनने की उक्ति का प्रचार करते हैं तो आवश्यक है कि हम स्वयं को उस अग्नि में तपा कर अपने भीतर का

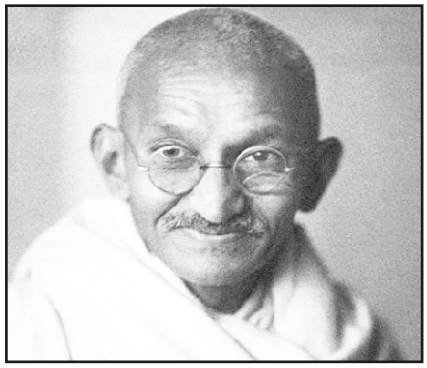

स्वर्ण प्रस्तुत करें।' गाँधीजी की यही श्रेष्ठता उन्हें दुर्लभ बनाती है।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के शब्दों में 'बहुत अच्छा होना भी बड़ा खतरनाक है' यह उक्ति गाँधीजी के संदर्भ में बहुत ही सटीक जान पड़ती है।

गाँधीजी ने सदा ही आत्मा के बल पर जोर दिया। उनके ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्याग्रह के सिद्धांत उनके भीतर प्रकाशित इसी आत्मा की शक्ति के परिचायक हैं। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में व्याप्त वाचिक, शारीरिक व मानसिक हिंसा बापू के इस सिद्धांत के समक्ष बहुत ही तुच्छ मालूम पड़ती है।

गाँधीजी की हिंदू धर्म में गहरी आस्था थी उनका मानना था कि ईश्वर एक है। वे प्रार्थना को 'आत्मा का आहार' मानते थे और इसी कारण से उन्होंने हमेशा ही प्रार्थना की आवश्यकता एवं महत्त्व पर बल दिया। गाँधीजी के अनुसार हिंदू धर्म व्यावर्तक नहीं है। इस धर्म में सभी धर्मों का पूर्ण रूप से सम्मान किया जाता है। सर्व धर्म समभाव एवं सर्व धर्म समावेशी होना, यह दोनों गुण हमारी संस्कृति के मूल में हैं।

इसके अतिरिक्त गाँधीजी ने स्वदेशी पर बल दिया। वे चाहते थे कि समाज का प्रत्येक वर्ग आत्मनिर्भर बने और एक ही पंक्ति में खड़ा हो। गाँधीजी का यह विचार किसी भी राष्ट्र तथा अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता के लिए अति आवश्यक है। गाँधीजी अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व देते थे। उनका मानना था यदि प्रत्येक व्यक्ति मात्र अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप संग्रह करेगा तो मनुष्य मात्र को संसाधनों की कमी से कभी नहीं जूझना पड़ेगा। वे समाज के प्रत्येक वंचित व्यक्ति तक उसके हिस्से का अधिकार और सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित करना चाहते थे। फिर बात चाहे स्त्री शिक्षा की हो या दलित शिक्षा की, श्रमिकों के अधिकारों की या किसानों की। गाँधीजी हर किसी के दुख को अपना दुख मानते थे।

गाँधीजी के अनुसार स्वतंत्रता मात्र सरकार बनाने तक सीमित नहीं होती। कोई भी व्यक्ति पूर्णतः स्वतंत्र तब होता है जब शारीरिक स्वतंत्रता के साथ-साथ मानसिक व वैचारिक स्वतंत्रता का भी भली भाँति उपभोग कर पाता है। इसके अतिरिक्त अपने अलावा दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करना भी, वास्तविक स्वतंत्रता का ही एक रूप है।

हमें आज अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए बापू के विचारों को आत्मसात करने की आवश्यकता है। उनके बताए मूल्यों को अपने जीवन में उतार कर ही हम एक विकसित व शांतिपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं। हमने बापू को खो दिया किंतु आवश्यक है कि हम उनकी विरासत, उनके आदर्शों को ना खोए।

अंत में डॉक्टर फ्रांसिस नीलसन के शब्दों में: ''गांधीजी कर्म में डायोजीनिस, विनम्रता में सेंट फ्रांसिस और बुद्धिमानी में सुकरात थे। इन्हीं गुणों के बल पर गाँधीजी ने दुनिया के सामने उजागर कर दिया कि अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए ताकत का सहारा लेने वाले राजनेताओं के तरीके कितनी शूद्र हैं। इस प्रतियोगिता में राज्य की शक्तियों के भौतिक विरोध की तुलना में आध्यात्मिक सत्यनिष्ठा विजय होती है।''

अंततः हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि गाँधी होना, मात्र एक मनुष्य होना नहीं है, गाँधीजी एक विचारधारा हैं, युगों के समक्ष दृढ़ता से स्थापित गुणों की पाठशाला हैं।

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लखासर,
पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राज.)-335803
मो: 9680213565

Rajasthan Education Department

गाँधी जयन्ती विशेष

बापू का शिक्षा दर्शन और 'नयी तालीम'

❒ राजेन्द्र कुमार शर्मा 'मुसाफिर'

आज हम 21वीं सदी में अद्भुत वैज्ञानिक और तकनीकी विकास देख रहे हैं। वैश्वीकरण के इस युग में दुनियावी दूरियाँ खत्म हो गई है। मानव ने विज्ञान की उपलब्धियों के माध्यम से बहुत कुछ हासिल कर लिया है। अंधाधुंध विकास की दौड़ के कारण प्रकृति इंसान को चुनौतियाँ भी दे रही है। एक तरफ इंसान भौतिक प्रगति कर रहा है परन्तु दूसरी तरफ मानवीयता और नैतिक मूल्यों का ह्रास भी बढ़ता जा रहा है। इसी कारण गाँधी विचारधारा की लहर सम्पूर्ण विश्व में लहराती हुई दिखाई दे रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती वर्ष के समय पूरी दुनिया गाँधी के बताए मूल्यों को याद कर रही है। क्योंकि आज भी गाँधी हर क्षेत्र में हमें रास्ता दिखाते नजर आते हैं। गाँधीजी के विचारों में एक ऐसे समाज की रचना है जिसमें मानवीय मंगल सर्वोच्च हो। इस बात को पुष्ट करने के लिए नेल्सन मंडेला का यह कथन विचारणीय है, उन्होंने कहा था- 'मानवता के प्रति समर्पण को लेकर हममे से किसी की उनसे तुलना नहीं हो सकती। गाँधी दर्शन 21 वीं सदी में मानवता को राह दिखाने वाली चाबी होगी।' गाँधीजी के बारे में ऐसे ही विचार मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने व्यक्त किए। उन्होंने लिखा है- 'अगर मानवता को आगे बढ़ाना है तो गाँधी उसके लिए बेहद जरूरी है।'

बहुद्देशीय औपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में अभी भी हमारे देश में माता-पिता और शिक्षार्थियों की अवधारणाएँ स्पष्ट नहीं है। शिक्षार्जन कर, क्या सरकारी या निजी क्षेत्र में नौकरी करना ही शिक्षा का लक्ष्य है? यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, जो सैद्धांतिक रूप से तो सब जानते हैं। परन्तु व्यवहार में छूट जाती है। वह है, शिक्षा-व्यवस्था के माध्यम से नैतिक आदर्शों पर चलने वाले सुयोग्य नागरिक तैयार करना। नई शिक्षा नीति 2020 और गाँधीजी के शिक्षा सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में इस पर विचार किया जाना प्रासंगिक है। संसार के अधिकांश लोग बापू को केवल महान राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि समाज सुधारक के रूप में भी जानते हैं। जहाँ समाज सुधार की बात हो वहाँ शिक्षा की बात सबसे पहले होगी। क्योंकि समाज में मानवीयता का पहला पाठ शिक्षण संस्थानों में ही सिखाया जा सकता है।

गाँधीजी का शिक्षा दर्शन : गाँधीजी महान शिक्षा दार्शनिक भी थे। शिक्षा और दर्शन में गहरा सम्बन्ध है। अनेक महान शिक्षाशास्त्री स्वयं महान दार्शनिक भी रहे हैं। शैक्षिक समस्या के प्रत्येक क्षेत्र में उस विषय के दार्शनिक आधार की आवश्यकता अनुभव की जाती है। डिवी शिक्षा तथा दर्शन के संबंध को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि दर्शन की जो सबसे गहन परिभाषा हो सकती है, वह यह है कि 'दर्शन शिक्षा विषयक सिद्धांत का अत्यधिक सामान्यीकृत रूप है।' दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा उपाय प्रस्तुत करती है। दर्शन पर शिक्षा की निर्भरता इतनी स्पष्ट और कहीं नहीं दिखाई देती जितनी कि पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं के संबंध में। जो बात पाठ्यक्रम के संबंध में है, वही बात शिक्षण-विधि के संबंध में कही जा सकती है। शिक्षा का क्या प्रयोजन है और मानव जीवन के मूल उद्देश्य से इसका क्या संबंध है, यही शिक्षा दर्शन का महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।

गाँधीजी का कहना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। उनका मूलमंत्र था- 'शोषण-विहीन समाज की स्थापना के लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए।' शिक्षाविद् और राजनीतिज्ञ हुमायूँ कबीर के शब्दों में, 'राष्ट्र के लिए गाँधीजी की अनेक देनों में से नवीन शिक्षा के प्रयोग की देन सबसे महान है। यह तरुण व्यक्तियों को सहयोग, प्रेम और सत्य के आधार पर एक समुदाय के रूप में रहने की शिक्षा देकर नए समाज के लिए नागरिकों को तैयार करने का प्रयत्न करती है।' सभी महान शिक्षाशास्त्री मानते हैं कि पढ़ाई व्यक्तित्व निर्माण के लिए है, न कि महज सर्टिफिकेट के लिए। गाँधीजी एक पक्षीय अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के पक्ष में नहीं थे, जिसमें महज किताबी शिक्षा देकर क्लर्क बनाने का लक्ष्य था। गाँधीजी ने स्कूली और विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के मूलभूत सिद्धांत रखे जो बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के आधार थे। यहाँ हम गाँधीजी द्वारा सुझाई गई स्कूली शिक्षा प्रणाली पर विचार करेंगे, जिसका नाम उन्होंने 'नयी तालीम' रखा था।

नयी तालीम या बुनियादी शिक्षा : 22-23 अक्टूबर, 1937 को वर्धा में अखिल भारतीय शैक्षिक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की थी। उद्घाटन भाषण में गाँधीजी ने अपने शैक्षिक दर्शन के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को रखा। वहाँ हुई खुली चर्चा में डॉ. जाकिर हुसैन, आचार्य विनोबा भावे, काका कालेलकर व अन्य विद्वानों ने भाग लिया। क्लास रूम केन्द्रित पढ़ाई के बदले श्रम केन्द्रित और मूल्य केन्द्रित पढ़ाई का नाम 'नयी तालीम' है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, 'बुनियादी तालीम' तथा 'बेसिक शिक्षा' के नामों से भी जाना जाता है। गाँधीजी ने कहा था कि नयी तालीम का विचार भारत के लिए उनका अंतिम एवं सर्वश्रेष्ठ योगदान है। वस्तुतः महात्मा गाँधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अनमोल है। गाँधीजी के जीवनपर्यन्त चले सत्य के अन्वेषण एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु सक्रिय प्रयोगों के माध्यम से लम्बे समय तक विचारों के गहन मंथन के परिणामस्वरूप नयी तालीम का दर्शन एवं प्रक्रिया का प्रादुर्भाव हुआ। सम्मेलन के आखिरी दिन बुनियादी शिक्षा के लिए निम्नांकित प्रस्ताव पारित किए गए-

1. बच्चों को सात वर्ष तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जाए।
2. मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए।
3. शिक्षा हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य पर केन्द्रित हो। हस्तशिल्प का चुनाव बच्चों की योग्यताओं और गुणों के साथ परिवेश को ध्यान में रखकर किया जाए।
4. हाथ के काम के साथ शिक्षा देने से शिक्षकों का वेतन भार भी कम किया जाएगा।

इन प्रस्तावों के पारित होने के बाद डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में समिति ने रिपोर्ट दी और राष्ट्रीय शैक्षिक योजना तैयार की गई, जो देशभर में वर्धा योजना, नयी तालीम तथा बुनियादी शिक्षा के नाम से प्रसिद्ध हुई। सन 1938 से ही बुनियादी शिक्षा में अनेक प्रयोग

Rajasthan Education Department

प्रारम्भ हो गए थे। यह शिक्षा योजना निश्चित और स्पष्ट सिद्धांतों से स्वतः ही व्याख्यायित है। जैसे–

- समाज हित में विद्यार्थी में निहित मानवीय गुणों का विकास करना।
- शिक्षा के जरिए बच्चों का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना।
- विद्यार्थी को आत्मनिर्भर नागरिक बनाना अर्थात शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाना।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा करने से अध्ययन में बच्चे का जुड़ाव बेहतर करना।
- 14 वर्ष तक के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा का अधिकार देने में राज्य के कर्त्तव्य का सिद्धांत।

गाँधीजी ने वास्तविक शिक्षा की व्याख्या करते हुए कहा था, 'शिक्षा से मेरा अभिप्राय है– बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास।' नयी तालीम योजना में मातृभाषा, गणित, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विषय शामिल थे। इनके अतिरिक्त आधारभूत शिल्प जैसे– कृषि, कताई–बुनाई, लकड़ी, धातु, चमड़े इत्यादि का काम। चित्रकारी और संगीत के साथ शारीरिक शिक्षा का प्रावधान भी किया गया। गाँधीजी प्रायः कहा करते थे कि शारीरिक शिक्षा शारीरिक अभ्यास द्वारा दी जाती है, वैसे ही आत्मा का प्रशिक्षण भी आत्मा के अभ्यास से ही संभव है। उन्होंने शिक्षकों की जिम्मेदारी तय करते हुए कहा कि शिक्षकों को अपने व्यवहार का सदैव ध्यान रखना चाहिए। शिक्षक का जीवन चरित्र आदर्शों की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए। यदि शिक्षक असत्य बोलता है तो वह बच्चों को सत्य बोलने का नहीं कह सकता। कोई कायर शिक्षक अपने विद्यार्थियों को निर्भीक नहीं बना सकता।

आज जब हम शिक्षा के क्षेत्र में बापू के उद्घोषित सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह के आदर्शों की बात करते हैं तो निश्चित ही कड़वी सच्चाई का सामना करना पड़ता है। शिक्षा क्षेत्र में भी भौतिकवादी सोच हावी हो चुकी है। सरकारी क्षेत्र से इतर गैर सरकारी क्षेत्र में विद्यार्थी और शिक्षण संस्थानों में उपभोक्ता और क्रेता का सम्बन्ध ही रह गया है। जब शिक्षा व्यवसाय का रूप ले चुकी हो और शिक्षा का बाजार खुल गया हो वहाँ गाँधीजी की नई तालीम को लागू करना चुनौतीपूर्ण जरूर है। फिर भी राष्ट्रपिता गाँधी के सिद्धांतों पर आधारित भारत की रचना करनी हो तो गाँधीजी के शिक्षा सिद्धांतों को लागू किया जाना आवश्यक है। यह हकीकत है कि आज कोई भी पढ़ा–लिखा व्यक्ति शारीरिक श्रम नहीं करना चाहता। शारीरिक श्रम के प्रति हीन भावना, भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का ही दोष है। दूसरी बात केवल किताबी ज्ञान के कारण वह हाथ का कार्य करने की योग्यता भी नहीं रखता। ऐसे में गाँधीजी के सिद्धांत बेहद प्रासंगिक हो जाते हैं। बड़ी बात यह भी है कि गाँधीजी, शिक्षा द्वारा सामाजिक असमानताओं को दूर करना चाहते थे। वे चाहते थे कि प्रत्येक पढ़ा–लिखा व्यक्ति यह समझे कि शारीरिक श्रम श्रेयस्कर है। आज के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर कल के युवा बन कुछ कमाने योग्य भी हो सकें। देश की तत्कालीन आर्थिक परिस्थितियों में बुनियादी शिक्षा महत्त्वपूर्ण थी और आज भी बेरोजगारी को देखते हुए उतनी की महत्त्वपूर्ण है। गंभीरता से देखा जाए तो आजादी के बाद शिक्षा नीतियाँ बनी हैं, उनमें गाँधीजी के शिक्षा सिद्धांतों को विभिन्न बदले रूपों में शामिल किया भी गया है।

'मेरे सपनों का भारत' पुस्तक गाँधीजी के आलेखों व भाषणों का संकलन है। इसमें संकलित 11 सितम्बर 1937, के आलेख में वे लिखते हैं, 'हाथ का काम इस सारी योजना का केन्द्र बिन्दु होगा। हाथ की तालीम का मतलब यह नहीं होगा कि विद्यार्थी पाठशाला के संग्रहालय में रखने लायक वस्तुएँ बनाए या ऐसे खिलौने बनाएँ जिनका कोई मूल्य नहीं। उन्हें ऐसी वस्तुएँ बनाना चाहिए जो बाजार में बेची जा सके। कारखानों के प्रारंभिक काल में जिस तरह बच्चे मार के भय से काम करते थे उस तरह हमारे बच्चे यह काम नहीं करेंगे। उसे इसलिए करेंगे कि इससे उन्हें आनंद मिलता है और उनकी बुद्धि को स्फूर्ति मिलती है।'

इसी तरह 9 अक्टूबर 1937 को उन्होंने लिखा 'मैं भारत के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत को दृढ़तापूर्वक मानता हूँ। मैं यह भी मानता हूँ कि इस लक्ष्य को पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है कि हम बच्चों को कोई उपयोगी उद्योग सिखाएँ और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास सिद्ध करें। ऐसा किया जाए तो हमारे गाँवों के लगातार बढ़ रहे नाश की प्रक्रिया रुकेगी और ऐसी न्यायपूर्ण समाज व्यवस्था की नींव पड़ेगी जिसमें अमीरों और गरीबों के अस्वाभाविक विभेद की गुंजाइश नहीं होगी और हर एक को जीवन, मजदूरी और स्वतंत्रता के अधिकारों का आश्वासन दिया जा सकेगा।

गाँधीजी नारी शिक्षा के भी हिमायती थे। 'शिक्षा का आश्रमी आदर्श' में वे लिखते हैं कि लड़कों और लड़कियों को एक साथ शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षार्थियों का समय मुख्यतः शारीरिक काम में बीतना चाहिए और यह काम भी शिक्षक की देखरेख में होना चाहिए। शारीरिक काम को शिक्षा का अंग माना जाए। हर लड़के और लड़की की रुचि को पहचान कर उसे काम सौंपना चाहिए। लड़का या लड़की समझने लगे तभी से उसे साधारण ज्ञान देना चाहिए। उसका यह ज्ञान अक्षर ज्ञान से पहले शुरू होना चाहिए। उन्होंने कहा कि लिखने से पहले बच्चा पढ़ना सीखें यानी अक्षरों को चित्र समझकर उन्हें पहचानना सीखें और फिर चित्र खींचे। जिस आनन्ददायी शिक्षा पर हर शिक्षानीति में बल दिया जाता है वह गाँधीजी की देन माननी चाहिए। उन्होंने कहा था, बच्चे जो सीखें, उसमें उन्हें रस आना चाहिए। बच्चों को शिक्षा खेल जैसी लगनी चाहिए। खेलकूद भी शिक्षा का अंग है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गाँधीजी के शैक्षिक दर्शन में सुयोग्य और आत्मनिर्भर नागरिक बनाने का सपना देखा गया था। शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी के नैतिक गुणों के विकास पर बल दिया गया था। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि गाँधीजी के शैक्षिक दर्शन में प्रकृतिवाद के साथ आदर्शवाद सन्निहित है, जिसकी आज महती आवश्यकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में अत्याधुनिक तकनीकी संसाधनों की उपेक्षा नहीं की जा सकती परन्तु हमें यह भी देखना है कि तकनीक केवल साधन है, साध्य नहीं। साध्य है– मानवीय मूल्यों की रक्षा करने वाली और विद्यार्थियों के आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
शहीद जीडीआर श्री रामकुमार सिंह राजकीय माध्यमिक विद्यालय लादड़िया, चूरू (राज.)
मो: 7976822790

Rajasthan Council of Educational Research and Training

गाँधी जयंती विशेष

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन

❒ टीना रावल

विश्व के अधिकांश लोग महात्मा गाँधी को महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं, परन्तु वे एक महान व्यावहारिक शिक्षाविद् भी थे।

महात्मा गाँधी का दर्शन मात्र वैचारिक आदर्शवाद नहीं अपितु व्यावहारिक व रचनात्मक आदर्शवाद का पक्षधर रहा है। 'गाँधीवादी विचारधारा' महात्मा गाँधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक, सामाजिक विचारधाराओं का समूह है जो उन्होंने 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा फिर उसके बाद फिर से अपनाई थी। निश्चित ही उनके इस आधारभूत दर्शन का प्रभाव उनके शिक्षा संबंधी विचारों पर भी रहा है। उनके अनुसार 'शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक संकायों को बाहर निकालती है और बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता करती है।' वास्तविक शिक्षा से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास होता है। साक्षर होना शिक्षा प्राप्ति का साधन (माध्यम) है, जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है। इसलिए केवल 'साक्षरता' ही शिक्षा नहीं मानी जा सकती है। उनका मानना था कि किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा में परिवर्तन अति आवश्यक है।

1. सत्य व अहिंसा– सत्य और अहिंसा के आदर्श गाँधीजी के दर्शन के मूल आधार हैं तथा यह आज भी मानव जाति के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। गाँधी जी ने औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से ही सत्य, शांति और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही पर्यावरण पर भी ध्यान केन्द्रित किया। 'नई शिक्षा नीति' पर महात्मा गाँधी के सिद्धांत आज सफल हो रहे हैं। उनके अनुसार शिक्षा की परिभाषा है– 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या वह है जो मुक्त अर्थात स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करती है।

2. रचनात्मकता व आत्मनिर्भरता– गाँधीजी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो छात्रों का शारीरिक, मानसिक व आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना सके। एक औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करने वाला 14 वर्षीय बालक किसी कौशल में प्रवीण हो जाना चाहिए, जिससे वह कुछ जीविकोपार्जन के योग्य भी हो सके। शिक्षा द्वारा छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी किया जाना चाहिए। इस हेतु वर्तमान शिक्षा में एन.सी.सी., एन.एस.एस. व स्काउट गाइड का

संचालन किया जा रहा है। किसी प्राकृतिक आपदा में राहत कार्य हेतु तथा सामाजिक कार्यों में सहभागिता हेतु इन्हें प्रशिक्षित भी किया जाता है। गाँधीजी द्वारा स्वयं चरखा चलाना, खादी निर्माण व उसका प्रयोग इत्यादि सभी रचनात्मक व आत्मनिर्भर गतिविधियों को बढ़ावा देने के आदर्श थे।

3. बुनियादी शिक्षा : नई तालीम : सन 1937 में गाँधी जी ने वर्धा में हो रहे अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन, जिसे 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' कहा जाता है, में नई तालीम के नाम से एक जीवन दर्शन तथा उद्योग केन्द्रित शिक्षा पद्धति देश के समक्ष प्रस्तुत की जो अहिंसक, समतामूलक व न्यायाधिष्ठित समाज निर्माण का उद्देश्य रखती है। महात्मा गाँधी का यह मानना था कि किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जो शिक्षा से संबंधित न हो। इसलिए गाँधीजी ने आहार विज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वच्छता व स्वास्थ्य से संबंधित विषयों का गंभीरता से अध्ययन किया तथा खाना बनाना, कपड़े धोना, प्रेस करना, सफाई व अन्य दूसरे गृहकार्य इत्यादि को भी सीखा। टॉलस्टाय आश्रम की पाठशाला में गाँधीजी ने शिक्षा में उद्योग को शामिल किया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधीजी की नई तालीम देखकर कहा था–'इसमें स्वराज की चाबी मौजूद है।'

4. शिक्षा के उद्देश्य व सिद्धांत– गाँधीजी ने कहा था कि संपूर्ण देश में 6 से 14 वर्ष तक के बालकों की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षा में उनके इस सिद्धांत को व्यवहारिक रूप से लागू किया भी जा रहा है। उनके अनुसार शिक्षा किसी लाभप्रद हस्तशिल्प से प्रारंभ होनी चाहिए जो बालक को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बना सके। उन्होंने पाठ्यक्रम में आधारभूत शिल्प जैसे–कताई, बुनाई, कृषि, काष्ठकला, चर्मकार्य, मिट्टी का काम, मछलीपालन इत्यादि को जोड़ने पर बल दिया। वर्तमान में कुछ व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी विद्यालयों में चल रहे हैं, जिनका लाभ विद्यार्थी उठा सकते हैं साथ ही कौशल विकास की अवधारणा को व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए भी संस्थान कार्यरत हैं। यद्यपि वर्तमान समय में शिक्षा के निजी संस्थानों में महंगे पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों की प्राथमिकता में रहते हैं, जिसके फलस्वरूप वे डिग्री प्राप्ति के पश्चात भी स्वयं का कोई उद्यम अथवा संतोषजनक आजीविका जुटाने में असफल हो जाते हैं। क्योंकि वे केवल एक उच्च नौकरी पाने की आकांक्षा रखते हैं।

5. नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में गाँधी दर्शन– महात्मा गाँधी ने लगभग एक शताब्दी पूर्व नई शिक्षा नीति के सिद्धांत देकर एक नई शिक्षा प्रणाली का सपना देखा था, जिसे वर्तमान समय में (कुछ पहलुओं को) लागू करने का पूर्ण प्रयास भी किया जा रहा है। व्यक्ति के विकास पर ध्यान इस नीति की मूल संकल्पना है। एनईपी सीखने के बहुआयामी पक्षों पर जोर देता है और छात्रों को यह सुनिश्चित करने के लिए सही उपकरण प्रदान करता है कि वे क्या करने में सक्षम हैं। गाँधीजी के द्वारा परिभाषित शरीर, मन व आत्मा का विकास एनईपी की नीतियों के साथ होना संभव है।

अतः स्पष्ट है कि गाँधीजी की एक शताब्दी पूर्व व्यावहारिक रूप से प्रयोग की गयी शिक्षा संबंधी नीतियाँ वर्तमान समय में बहुत उपयोगी व प्रासंगिक है।

व्याख्याता
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चाकसू, जयपुर (राज.)
मो: 8949213108

Rajasthan Education Department

गाँधी जयन्ती विशेष

महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़े प्रेरक-प्रसंग

❒ कुम्भाराम चौधरी

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गाँधीजी के बारे में कहा था कि भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़-माँस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था। गाँधीजी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ऐसे महान व्यक्तित्व का जन्म 02 अक्टूबर 1869 में पोरबंदर में हुआ था। उनके पिता करमचंद गाँधी पोरबंदर रियासत के दीवान थे और उनकी माँ का नाम पुतलीबाई था। मात्र 13 वर्ष की उम्र में गाँधीजी का विवाह कस्तूरबा गाँधी से हुआ था। उनके जीवन से जुड़े अनेक ऐसे प्रसंग है जो हमें सत्य, अहिंसा, करुणा, आत्मनिर्भरता, विनम्रता, ईमानदारी, दानशीलता, देशप्रेम की प्रेरणा देते हैं। कुछ प्रेरणात्मक प्रसंग जो आज भी सकारात्मक ऊर्जा से भर देते हैं।

व्यर्थ का खर्च– गाँधीजी भोजन के साथ शहद का भी नियमपूर्वक सेवन करते थे। एक बार उन्हें लंदन के दौरे पर जाना पड़ा। मीरा बहन भी साथ जाया करती थी, इत्तेफाक से लंदन दौरे के समय वह शहद की शीशी ले जाना भूल गई। मीरा बहन ने शहद की नई शीशी वहीं से खरीद ली। जब गाँधीजी भोजन करने बैठे तो नई शीशी देख कर मीरा बहन पर बिगड़ गए और बोले, तुमने यह नई शीशी क्यों मंगवाई? मीरा बहन ने डरते हुए कहा, बापू मैं शहद की वह शीशी लाना भूल गई थी। बापू बोले यदि एक दिन मैं भोजन नहीं करता तो क्या मर जाता। तुम्हें पता होना चाहिए कि हम लोग जनता के पैसे से जीवन चलाते हैं और जनता का एक-एक पैसा बहुमूल्य होता हैं वह पैसा फिजूल खर्च नहीं करना चाहिए।

संयम की सीख– 1926 की बात है। गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर थे। उनके साथ अन्य सहयोगियों के अलावा काका साहेब कालेलकर भी थे। वे सुदूर दक्षिण में नागर कोइल

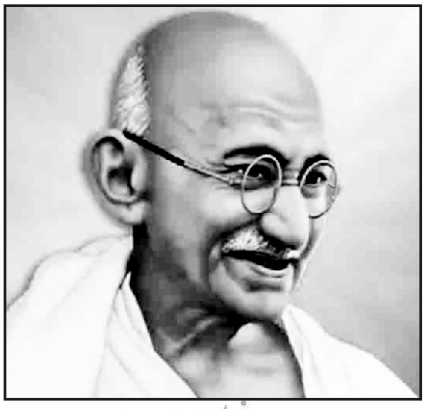

पहुँचे। वहाँ से कन्याकुमारी काफी पास था। इस दौरे से पहले के किसी दौरे में गाँधीजी कन्याकुमारी हो आए थे। वहाँ के मनोरम दृश्य ने उन्हें काफी प्रभावित किया था। गाँधीजी जहाँ ठहरे थे, उस घर के गृहस्वामी को बुलाकर उन्होंने कहा 'काका को मैं कन्याकुमारी भेजना चाहता हूँ। उनके लिए मोटर का प्रबंध कर दीजिए।' कुछ देर बाद उन्होंने देखा कि काका साहेब अभी घर में ही बैठे हैं, तो उन्होंने गृहस्वामी को बुलाया और पूछा काका के जाने का प्रबंध हुआ या नहीं किसी को काम सौंपने के बाद उसके बारे में दर्याफ्त करते रहना बापू की आदत में शुमार नही था। फिर भी उन्होंने ऐसा किया। यह स्पष्ट कर रहा था कि कन्याकुमारी से गाँधीजी काफी प्रभावित थे। स्वामी विवेकानन्द भी वहाँ जाकर भावावेश में आ गए थे और समुद्र में कूद कर कुछ दूर के एक बड़े पत्थर तक तैरते गए थे।

काका साहेब ने बापू से पूछा 'आप भी आएंगे न'? बापू ने कहा, 'बार-बार जाना मेरे नसीब में नहीं है एक दफा हो आया इतना ही काफी है।'

इस जवाब से काका साहेब को दुःख हुआ वे चाहते थे बापू भी साथ जाए बापू ने काका साहेब को नाराज देखकर गंभीरता से कहा देखो इतना बड़ा आंदोलन लिए बैठा हूँ। हजारों कार्यकर्ता देश के कार्य में लगे हुए हैं। अगर मैं रमणीय दृश्य देखने का लोभ संवरण करूँ तो सबके सब कार्यकर्ता मेरा ही अनुकरण करने लगेंगे। अब हिसाब लगाओ कि इस तरह कितने लोगों की सेवा से देश वंचित होगा। मेरे लिए संयम रखना ही अच्छा है।

राष्ट्र भाषा से प्रेम– भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ पत्रकार गाँधी जी के पास आए और उनसे अंग्रेजी भाषा में बात करने लगे। मगर गाँधीजी ने सभी को रोका और कहा कि मेरा देश अब आजाद हो गया है। अब मैं हमारी हिन्दी भाषा ही बोलूंगा। गुजराती होने के बावजूद भी गाँधीजी हिन्दी ही बोलते थे। राष्ट्र भाषा के विषय में उनका एक विचार है। 'कोई भी देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।'

आत्म सम्मान– अब्दुल्ला के निमंत्रण पर गाँधीजी पानी के जहाज पर सवार होकर दक्षिण अफ्रीका की धरती पर उतरे। वह डरबन पहुँचे और 07 जून 1893 को प्रिटोरिया जाने के लिए ट्रेन पर चढ़े। गाँधीजी के पास ट्रेन का फर्स्ट क्लास का टिकट था। प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद उन्हें कोच में अपमानित होना पड़ा। ट्रेन जब पीतर मारिटजबर्ग पहुँचने वाली थी तो उन्हें थर्ड क्लास डिब्बे में जाने के लिए कहा गया। लेकिन गाँधीजी ने प्रथम श्रेणी का टिकट बताकर इनकार कर दिया तो उन्हें जबर्दस्ती स्टेशन पर ट्रेन से धक्का देकर उतार दिया गया था। गाँधीजी के सामान को ट्रेन के बाहर फेंक दिया गया। उस वक्त फर्स्ट क्लास कंपार्टमेंट में सिर्फ गोरे लोग ही सफर कर सकते थे। बस उसी समय से सत्याग्रह की नींव पड़ी। गाँधीजी ने माना अपने आत्म सम्मान की रक्षा करना व्यक्ति की पहली जिम्मेदारी है।

नकल करना अपराध है– बात उन दिनों की है जब गाँधीजी अल्फ्रेड हाइस्कूल में अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण कर रहे थे एक बार उनके स्कूल में निरीक्षण के लिए विद्यालय निरीक्षक आए हुए थे। उनके शिक्षक ने छात्रों को हिदायत दे रखी थी कि निरीक्षक पर आप सब का अच्छा प्रभाव पड़ना चाहिए। जब निरीक्षक गाँधीजी की क्लास में आए तो उन्होंने बच्चों की परीक्षा के लिए छात्रों को पाँच शब्द बताकर

Rajasthan Education Department

उनकी वर्तनी लिखने को कहा, निरीक्षक की बात सुनकर सारे बच्चे लिखने में लग गए जब बच्चे वर्तन लिख ही रहे थे तो शिक्षक ने देखा कि गाँधीजी ने एक शब्द की वर्तनी गलत लिखी है उन्होंने गाँधीजी को संकेत कर बगल वाले छात्र से नकल कर वर्तनी ठीक लिखने को कहा किन्तु गाँधीजी ऐसा कहाँ करने वाले थे। उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्हें नकल करना अपराध लगा। निरीक्षक के जाने के बाद उन्हें शिक्षक से डाँट खानी पड़ी।

सदा सत्य बोलो– गाँधीजी के बड़े भाई कर्ज में फंस गए थे। अपने भाई के कर्ज से मुक्त कराने के लिए गाँधीजी ने अपना सोने का कड़ा बेच दिया और उसके पैसे अपने भाई को दे दिए। मार खाने के डर से गाँधीजी ने अपने माता–पिता से झूठ बोला कि कड़ा कहीं गिर गया है, किन्तु झूठ बोलने के कारण गाँधीजी का मन स्थिर नहीं हो पा रहा था। उन्हें अपनी गलती का अहसास हो रहा था और उनकी आत्मा उन्हें बार–बार यह बोल रही थी की झूठ नहीं बोलना चाहिए। गाँधीजी ने अपना अपराध स्वीकार किया और उन्होंने सारी बात एक कागज में लिखकर पिताजी को बता दी। गाँधीजी ने सोचा कि जब पिताजी को मेरे इस अपराध की जानकारी होगी तो वह उन्हें बहुत पीटेंगे। लेकिन पिता ने ऐसा कुछ नहीं किया वह बैठ गए और उनकी आँखों से आँसू आ गए। गाँधीजी को इस बात से बहुत चोट लगी। उन्होंने महसूस किया कि प्यार हिंसा से ज्यादा असरदार दंड दे सकता है।

ऐसे थे बापूजी जो सत्य पर आजीवन अडिग रहे। गाँधीजी सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य के रूप में मानते थे। सत्य हमेशा हितकर और आनन्दयुक्त है। गाँधीजी ने सत्य ही ईश्वर है, के सिद्धांत को माना और उसका प्रचार–प्रसार किया। ईश्वर को नकारने वाले तो बहुत है परन्तु सत्य को नकारने वाला पैदा नहीं हुआ। सत्य ही वास्तविकता का द्योतक है।

चल पड़े जिधर दो डग जग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर

'मैं लाखों–करोड़ों भारतीयों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ 'जो सत्य है अथवा उस सत्य की जो ईश्वर है।'

प्रधानाचार्य
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल
निवाई, टोंक (राज.)
मो: 9414558271

गाँधी जयन्ती विशेष

स्वदेशी से स्वराज : स्वराज से सुराज

❐ दीपक शर्मा

महात्मा गाँधी के शब्दों में 'स्वदेशी केवल रोटी ,कपड़ा और मकान का नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन का दृष्टिकोण है। स्वदेशी देश की प्राणवायु है। स्वराज और स्वाधीनता की गारण्टी है। गरीबी, भुखमरी और गुलामी से मुक्ति का उपाय है स्वदेशी। स्वदेशी के अभाव में राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक स्वातंत्र्य सर्वथा असम्भव है।' स्वतन्त्रता आन्दोलन की समस्त प्रेरणा व उर्जा स्वदेशी भाव ने प्रदान की।

वन्दे मातरम् का जयघोष आजादी का नारा बना। किसी भी देश के सम्मान और स्वाभिमान की पहचान वहाँ का झंडा होता है। किसी भी देश का सैनिक अपने वतन के झंडे के लिए अपना सर्वस्व बलिदान दे देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ये शब्द, झंडे इत्यादि वो प्रतीक हैं जिनसे जनमानस की भावनाएँ जुड़ती हैं और उन भावनाओं का वृहद् स्तर पर प्रकटीकरण उस समाज और राष्ट्र की दशा व दिशा तय करता है। ठीक इसी प्रकार चरखा स्वराज और सुराज का प्रतीक बना। जो लोग यह कहते हैं कि 'क्या चरखे से आजादी पाई' तो उस काल में राष्ट्र की आजादी और उस आजादी को अक्षुण्ण बनाए रखने के प्रतीक के रूप में चरखे का वही महत्त्व है जो 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन में 'रोटी और कमल' का रहा है। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में चरखे का स्वदेशी के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

महात्मा गाँधी ने एक दूरदर्शी और समझदार राजनीतिज्ञ के बतौर भारत की आजादी में स्वदेशी का भाव जाग्रत करने के लिए घर–घर में पाए जाने वाले चरखे को हथियार के रूप में प्रयोग किया। हम भारत के इतिहास पर नजर डालते हैं, तो देखने में आता है कि अंग्रेज, फ्रांसीसी, डच, पुर्तगाली भारत में व्यापार करने ही आए थे। उनकी नजर 'सोने की चिड़िया' भारत पर थी। यूरोप अपनी औद्योगिक क्रान्ति का माल भारत की विशाल जनसंख्या में खपा कर लाभ अर्जित करना चाहता था। कालान्तर में

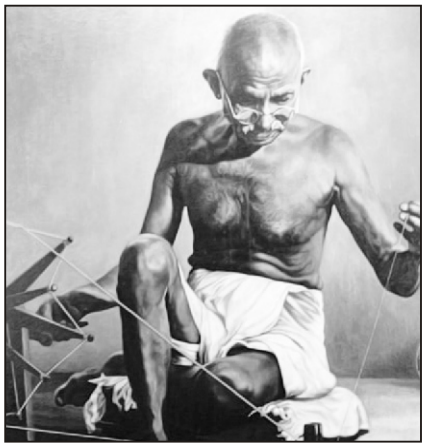

यूरोप के इन व्यापारियों ने एक तरफा मुक्त व्यापार के लिए भारतवासियों की कमजोरी का लाभ उठा कर यहाँ अपने–अपने उपनिवेश स्थापित कर लिए और अपने शासनकाल में ऐसे कानून बना दिए जिससे हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूर्णतः ध्वस्त हो गई। दादाभाई नौरोजी की पुस्तक 'Poverty And Un-British Rule In India' इसका महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

लार्ड कर्जन द्वारा 19 जुलाई 1905 में बंगाल विभाजन किया। इस विभाजन की घोषणा के विरोध में कोलकाता के टाउनहाल में 7 अगस्त 1905 को 'स्वदेशी आन्दोलन' की घोषणा करते हुए बहिष्कार प्रस्ताव पारित हुआ। इन नेताओं ने विदेशी माल का बहिष्कार, स्वदेशी माल को अंगीकार कर राष्ट्रीय शिक्षा एवं सत्याग्रह के महत्त्व पर बल दिया। उस समय आन्दोलन ना केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार था, अपितु सरकारी स्कूल, अदालतों, उपाधियों, सरकारी नौकरियों का बहिष्कार भी इसमें सम्मिलित था। इसी कारण से बंगाल विभाजन को अंग्रेजों को रद्द करना पड़ा। महात्मा गाँधी को यह बात भली भांति ज्ञात थी।

महात्मा गाँधी के शब्दों में स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के कारखानों में बनी वस्तुओं से नहीं अपितु स्वदेशी से मेरा मतलब भारत के बेरोजगार लोगों के हाथ की बनी वस्तुओं से है।

Rajasthan Education Department

शुरू में यदि इन वस्तुओं में कोई कमी रहती है तो भी हमें इन्हीं वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए तथा स्नेहपूर्वक उत्पादन करने वाले से उसमें सुधार करवाना चाहिए। ऐसा करने से बिना किसी प्रकार का समय और श्रम खर्च किए देश और देश के लोगों की सच्ची सेवा हो सकेगी।

जो हमारी चेतना में उपभोग नहीं, उपयोग का भाव जाग्रत करे, जिसमें हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाए ना कि इच्छाओं की, वह है स्वदेशी। भाषा, भूषा (पहनावा), भेषज (औषधियाँ), शिक्षा, रीति-रिवाज, भौतिक उपयोग की वस्तुओं, कृषि, न्याय व्यवस्था आदि। किसी भी देश को यदि आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, सुरक्षा आदि के क्षेत्र में समर्थ व महाशक्ति बनना है, तो स्वदेशी को अपनाना ही होगा। स्वदेशी के बिना हमारा आर्थिक शोषण नहीं रुक सकेगा।

भारत की उन्नति और वैभव भारत की शिक्षा पर ही निर्भर है। अंग्रेजों के शासन काल से पहले भारत हर क्षेत्र में महाशक्ति था। दुनिया के अनेक देशों में भारत के व्यापारिक मार्ग को खोजने की होड़ लगी थी। कारण सिर्फ एक- भारत से व्यापार कर लाभ अर्जित करना। इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड के अनेक इतिहासकारों के अनुसार भारत सर्वसम्पन्न देश, ऋषियों का देश, हीरे जवाहरातों का देश था। भारतीय संस्कृति और सभ्यता दुनिया की सर्वश्रेष्ठ और प्राचीनतम सभ्यताओं मे से एक रही है। इन सबका आधार है - भारत के शिक्षक और शिक्षा प्रणाली।

प्राचीन भारत में दो हजार से ज्यादा गुरुकुल और विद्यालय थे, जो कि स्वदेशी शिक्षा पद्धति का आधार थे। इन विद्यालयों में भारत ही नहीं अपितु दुनिया के छात्र अध्ययन करते थे। बाल्यकाल से ही विषम परिस्थितियों में जीवन जीने के लिए अभ्यस्त कराने के साथ-साथ उच्चतर आदर्शों और नैतिक मूल्यों का पालन करने की शिक्षा दी जाती थी। अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम रखते हुए समाज और राष्ट्र के लिए अपना अधिकतम योगदान कैसे दिया जा सकता है, इसकी प्रयोगशाला थे गुरुकुल। गुरुकुल और आश्रम केवल शिक्षा का केन्द्र मात्र नहीं थे, अपितु ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति, समाज जीवन की शिक्षा और जीवन जीने की कला के सतत् अनुसंधान के केन्द्र थे। जहाँ गुरु और शिष्य साथ मिल कर समाजोपयोगी अनुसंधान में रत रहते थे। गुरु का शिष्य के प्रति भाव कैसा कि द्रोणाचार्य ने अपने पुत्र अश्वत्थामा के स्थान पर योग्य शिष्य अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाया और गुरु के प्रति शिष्य की श्रद्धा ऐसी कि मूलशंकर गुरु बिरजानन्द के आदेश पर अपना सम्पूर्ण जीवन समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने में लगा देते हैं ऐसे शिष्य दयानन्द सरस्वती ने वेद वाक्य 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के लिऐ जीवन सपर्पित कर दिया। विदेशी भाषाएँ केवल भाषा ज्ञान तक ही उचित है। भारतीय संस्कृति का आधार भारतीय भाषाओं में शिक्षा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ऐसी शिक्षा दी जाती रही थी, कि विद्यार्थी पढ़ लिख कर आत्मनिर्भर बनता था। कभी भी बेरोजगारी या राज सत्ता से नौकरी माँगते हुए भीड़ नही रही है। स्वदेशी शिक्षा के माध्यम से मानव श्रम के सर्वश्रेष्ठ नियोजन की प्रणाली रही है, भारतीय शिक्षा। विद्यार्थी आवश्यकता के अनुरूप खेती, कुटीर उद्योग, राजकार्य में सहयोग आदि के कार्य कर लिया करते थे। भारतीय गुरुकुलों में शस्त्र संचालन और सैन्य संचालन की शिक्षा दी जाती थी। इसी निपुणता के कारण यूनानी आक्रांता सिकन्दर के भारत आक्रमण के समय चाणक्य के नेतृत्व में गुरुकुल सैन्य छावनियों में परिवर्तित हो गए थे। ऐसी स्वदेशी शिक्षा प्रणाली को स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान पुनः प्रारम्भ किया गया।

> 'इनसान महान पैदा नहीं होता है, उसके विचार उसे महान बनाते हैं। विचार और काम की शुद्धता और सरलता ही महान लोगों को आम लोगों से अलग करती है। वे वही काम करते हैं, जो दूसरे करते हैं, लेकिन उनका मकसद समाज में बदलाव लाना होता है।'
>
> -महात्मा गाँधी

सौभाग्य से राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकार समय-समय पर समयानुकुल शिक्षा नीति लागू करती रही है।

समाज जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी भारत को पुनः स्वदेशी तकनीकी पर लौटना चाहिए। आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग कर, ना केवल हम रोजगारों का सृजन कर सकते हैं, अपितु निर्यात को बढ़ा कर आय भी अर्जित कर सकते हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में बढ़ते हुए अंग्रेजी दवाओं के व्यय और उनके प्रतिकूल प्रभाव को रोकने के लिए पुनः आयुर्वेद और घरेलू उपचार को प्रभावी बनाना होगा। इस हेतु हमारी सरकार ने घर-घर औषधीय पौधों (Medicinal Plant) के वितरण करने की योजना पर काम भी शुरू किया है जो कि आने वाले समय में दूरगामी परिणाम लाएगा।

कृषि के क्षेत्र में कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों का आयात करना पड़ता है, जिससे भारत की विदेशी मुद्रा का भंडार समाप्त होता है और इन रासायनिक पदार्थों के हानिकारक परिणाम प्राणी जगत पर आने लगे हैं। इसलिए भारत पुनः स्वदेशी जैविक कृषि की ओर अग्रसर हो रहा है। इससे पशुओं की रक्षा और उनके महत्त्व की समझ में जागृति आई है, साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए जैविक उत्पाद आवश्यक भी है।

महात्मा गाँधी के सपनों का भारत बनाने के लिए स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग किया जाए। देश के स्वाभिमान के लिए हमें स्वदेश निर्मित खाद्य सामग्री, साबुन, तेल, पदवेश, कपड़ों आदि का श्रद्धापूर्वक प्रयोग करना ही चाहिए। जहाँ तक हस्तनिर्मित स्वदेशी वस्तुएँ उपलब्ध हो तो वही उपयोग में लानी चाहिए और यदि व्यवस्था बन सके तो स्वयं कुटीर उत्पाद तैयार कर सकते हैं। 'स्वदेशी आन्दोलन महात्मा गाँधी के स्वतंत्रता आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु था। उन्होंने इसे स्वराज की आत्मा कहा था।' यह ना केवल स्वराज की गारंटी है और इससे भी आगे बढ़कर सुराज की स्थापना का एक मात्र मंत्र है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक
समग्र शिक्षा, बून्दी
मो: 9461655253

Rajasthan Education Department

कलाम जयंती विशेष

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : आदर्श व्यक्तित्व

❒ विजयलक्ष्मी

एक बेहतरीन शिक्षक, एक राइटर, मिसाइल मैन और राष्ट्रपति जैसी तमाम उपलब्धियाँ हासिल करने वाले डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम का जन्म दिवस प्रतिवर्ष 15 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस दिन को यूनाइटेड नेशन ने 2010 में वर्ल्ड स्टूडेंट्स डे घोषित किया था। तब से हर साल 15 अक्टूबर को स्टूडेंट्स डे के रूप में मनाया जाता है।

आसमान की ऊँचाइयों को छूने के लिए हवाई जहाज और अन्य साधनों से भी जरूरी चीज है हौंसला, हौंसला आपकी सोच को वह उड़ान देता है जिसका शिखर कामयाबी की चोटी पर है। कामयाबी के शिखर तक पहुँचने की आपने यूं तो हजारों कहानियाँ पढ़ी होगी लेकिन ऐसी ही एक जीती जागती कहानी है पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम था। जैनुलाब्दीन और आशीयम्मा के घर 15 अक्टूबर 1931 को एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में तमिलनाडु के रामेश्वरम में कलाम का जन्म हुआ था। डॉ. कलाम का जीवन बेहद संघर्षपूर्ण था। भारत की नई पीढ़ी के लिए वे प्रेरणास्वरूप है। वह ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारत को एक विकसित देश बनाने का सपना देखा था। जिसके लिए उन्होंने कहा कि 'आपके सपने के सच हो सकने के पहले आपको सपना देखना है।' एक वैमानिक इंजीनियर होने के अपने सपने को पूरा करने के लिए उनकी विशाल इच्छा ने उन्हें सक्षम बनाया। एक गरीब परिवार से होने के बावजूद उन्होंने कभी भी अपनी पढ़ाई को नहीं रोका। डॉक्टर कलाम ने तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से विज्ञान में ग्रेजुएशन एवं मद्रास इंस्टीट्यूट से वैमानिकी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। वे एक महान भारतीय वैज्ञानिक थे जिन्होंने भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में वर्ष 2002 से 2007 तक देश की सेवा की। वह भारत के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे क्योंकि एक वैज्ञानिक और राष्ट्रपति के रूप में देश के लिए उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया।

इसरो के लिए दिया गया उनका योगदान

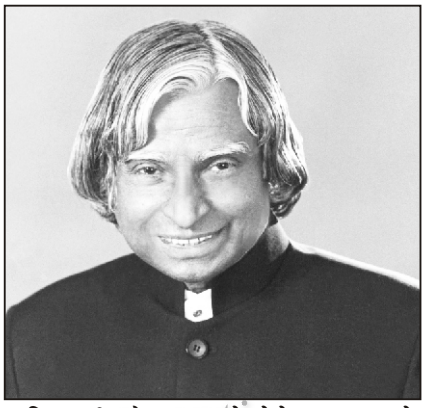

अविस्मरणीय है। बहुत सारे प्रोजेक्ट्स का उनके द्वारा नेतृत्व किया गया। जैसे रोहिणी-1 का लाँच, प्रोजेक्ट डेविल और प्रोजेक्ट वेलियंट, मिसाइलों का विकास अग्नि और पृथ्वी आदि। भारत की परमाणु शक्ति को सुधारने में उनके महान योगदान के लिए उन्हें भारत का 'मिसाइल मैन' कहा जाता है। अपने समर्पित कार्यों के लिए उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया।

कलाम साहब ने अपने जीवन में कई ऐसे कार्य किए हैं जिनके कारण सभी धर्मों और संप्रदायों के लोग आज भी उनको याद करते हैं। उनके द्वारा लिखी गई किताबें आज भी लोगों और युवाओं के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है जैसे-

- इंडिया 2020 : ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम।
- विंग्स ऑफ फायर : एनऑटो बायोग्राफी।
- इगनाइटेड माइंड्स : अनलीजिंग द पावर विद इन इंडिया।
- द ल्यूमिनस स्पार्क्स : अ बायोग्राफी इन वर्स एंड कलर्स।
- गाइडिंग सोल्स : डायलॉग्स ऑन द परपज ऑफ लाइफ।
- मिशन ऑफ इंडिया : विजन ऑफ इंडियन यूथ।
- इंस्पायरिंग थॉट्स : कोटेशन सीरिज।
- यू आर बोर्न टो ब्लॉसम : टेक माय जर्नी बियोंड।
- द साइंटिफिक इंडियन फर्स्ट सेंचुरी गाइड : टू द वर्ल्ड अराउंड अस।
- फैलियर टू सक्सेस : लीजेंडरी लाइव।

वह हमेशा कहते थे कि 'लिखना मेरा प्यार है अगर आप किसी चीज से प्यार करते हैं। आप उसके लिए बहुत सारा समय निकाल लेते हैं। मैं रोज 2 घण्टे लिखता हूँ, आमतौर पर मध्य रात्रि में शुरू करता हूँ, कभी-कभी मैं 11:00 बजे से लिखना शुरू करता हूँ।'

वे दूरदर्शिता पूर्ण विचारों से युक्त व्यक्ति थे। जिन्होंने हमेशा देश के विकास का लक्ष्य देखा। 'भारत 2020' के शीर्षक की अपनी किताब में उन्होंने देश के विकास के बारे में कार्य योजना को स्पष्ट किया। उनके अनुसार देश की असली संपत्ति युवा है। इसी वजह से वह हमेशा उनको प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहे। वे कहते थे कि राष्ट्र को नेतृत्व में आदर्श की जरूरत है जो युवाओं को प्रेरित कर सके। डॉ. कलाम ने देश में भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए 'व्हाइट कैन आई गिव मूवमेंट' नाम से युवाओं के लिए एक मिशन की शुरूआत की।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम वैज्ञानिक उपलब्धियों और अन्य मेधावी कार्यों के अलावा बच्चों के बीच अपने प्यार तथा स्नेह के लिए भी जाने जाते थे। वे बच्चों की आँखों का तारा थे। उच्च विचार व सादा जीवन शैली से डॉक्टर कलाम ने हमारे राष्ट्र को जो मजबूती दिलाई उसका कोई सानी नहीं है वह भारत के सच्चे सपूत थे।

साधारण परिवार में जन्म लेकर उन्होंने देश का सर्वोच्च पद ही हासिल नहीं किया बल्कि वैज्ञानिक बनकर विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में दुनिया में भारत का गौरव बढ़ाया। उनकी जीवन गाथा किसी रोचक उपन्यास के नायक की कहानी से कम नहीं है। ऐसे लोग धरती पर कभी कभार ही जन्म लेते हैं। ऐसे भारतीय 'मिसाइल प्रोग्राम के जनक' और 'जनता के राष्ट्रपति' के रूप में लोकप्रिय हुए।

'सपने वो नहीं है जो आप नींद में देखे, सपने वो है जो आपको नींद ही नहीं आने दे।'

व्याख्याता (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेड़ली सैयद, अलवर (राज.)
मो: 8058558561

Rajasthan Education Department

कलाम जयन्ती विशेष

विश्व विद्यार्थी दिवस

❒ सुमन पूनियां

'आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, पर अपनी आदतें तो बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देगी।'

हाँ, ऐसी महान सोच रखने वाले भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष 15 अक्टूबर को विश्व विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) द्वारा 15 अक्टूबर को भारत रत्न प्राप्तकर्ता डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के 79वें जन्म दिवस पर शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयासों को सम्मानित करने के लिए विश्व विद्यार्थी दिवस (World Student's Day) मनाए जाने की घोषणा की थी।

इसके उपरान्त प्रतिवर्ष उनकी जयंती को 'विश्व विद्यार्थी दिवस' के तौर पर मनाया जाता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक महान वैज्ञानिक ही नहीं अपितु एक उम्दा शिक्षक भी थे। जो हमेशा युवाओं को प्रेरित करते थे, वे अपने लेखन व भाषणों के माध्यम से जीवन में बेहतर करने के लिए छात्रों को हमेशा प्रोत्साहित करते थे। डॉ. कलाम के छात्रों के प्रति इस प्रेम भावना व उनके द्वारा विज्ञान व तकनीक में किए गए योगदान को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा उनके जन्म दिवस को विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाए जाने का निर्णय किया गया।

डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् जिले के धनुषकोडी गाँव में हुआ। डॉ. कलाम का पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम था जिन्हें 'मिसाइल मैन' के नाम से प्रसिद्धि मिली। एक छात्र के रूप में उनका जीवन काफी चुनौतीपूर्ण था। उन्हें अपने जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण वे बचपन में घर-घर जाकर अखबार बेचते थे लेकिन अपनी पढ़ाई के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ही वे अपने जीवन में हर तरह की बाधाओं को पार करने में सफल रहे और अपने जीवन में हर चुनौती को पार करते हुए राष्ट्रपति जैसे भारत के सबसे बड़े संवैधानिक पद पर आसीन हुए। आज उनके जीवन के संघर्ष व उपलब्धियों की गाथा युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत है जो भारत की आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने का कार्य करेगी।

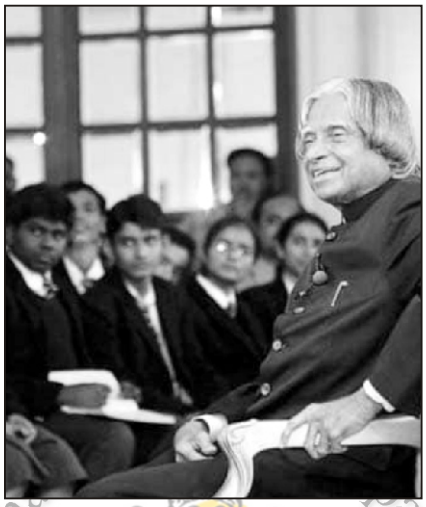

डॉ. कलाम का व्यक्तिगत जीवन अनुशासन प्रिय था। आप बातचीत में बड़े विनोद प्रिय स्वभाव के थे। अपनी बात को बड़ी सरलता व साफगोई से सामने रखते थे लेकिन बात बहुत सटीक तौर पर करते थे। आप सर्व धर्म समभाव के प्रतीक थे। आपके लिए जाति, धर्म, वर्ग, समुदाय मायने नहीं रखता था। आप सभी मुद्दों को मानवीयता की कसौटी पर परखते हैं आप इन्सान के जीवन को ऊँचा उठाते हुए उसे बेहतरीन की ओर ले जाना चाहते थे।

डॉ. अब्दुल कलाम सन 2002 से 2007 तक देश के 11वें राष्ट्रपति रहे। वे विख्यात वैज्ञानिक, विचारक और शिक्षक भी थे। आपने बहुत सी प्रेरणादायक पुस्तकें लिखी जिनमें आपकी आत्मकथा 'विंग्स ऑफ फायर' (अग्नि की उड़ान) ने अत्यधिक लोकप्रियता हासिल की, इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन संघर्ष की कहानी ही नहीं, बल्कि संघर्षों की कहानी के साथ अग्नि, पृथ्वी, त्रिशूल और नाग मिसाइलों के विकास की भी कहानी है, जिसने अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को मिसाइल सम्पन्न देश के रूप में जगह दिलाई। यह पुस्तक हर युवा की पसंद है जो उन्हें ऊर्जावान एवं प्रेरित करने का कार्य करती है। जिसका कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

डॉ. कलाम का मानना था कि छात्र की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है प्रश्न करना, उन्हें प्रश्न करने दें। बच्चों से बातचीत पर आधारित प्रश्नोत्तरी शैली में लिखी पुस्तक 'हम होंगे कामयाब' में उन्होंने लिखा कि बच्चे समाज व राष्ट्र का भविष्य होते हैं। बच्चे जितने शिक्षित, संस्कारी व चरित्रवान होते है, समाज व राष्ट्र का भी उतना ही चारित्रिक विकास होता है। बच्चों की जिज्ञासाएँ अद्भुत व अनुपम होती है व उनकी सोच को व्यापकता प्रदान करती है। डॉ. कलाम को उनकी उपलब्धियों व राष्ट्र के प्रति योगदान के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कार व सम्मान से नवाजा गया। लगभग 40 विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि दी और भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण, पद्म विभूषण और भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया।

डॉ. कलाम अपने वैज्ञानिक व राजनैतिक जीवन के दौरान खुद को एक शिक्षक ही माना करते थे। छात्रों को सम्बोधित करना ही उनका सबसे प्रिय कार्य था। वे चाहे फिर किसी गाँव के छात्र हो या फिर किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय के छात्र हो। शिक्षण के प्रति उनका कुछ ऐसा रुझान था कि एक समय उन्होंने अपने जीवन में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार जैसे कैबिनेट श्रेणी का पद छोड़कर एक शिक्षक का पद चुन लिया।

डॉ. कलाम छात्रों/युवाओं को बार-बार कहते थे कि महानायक बनने के लिए बड़े सपने देखना आवश्यक है। सपने देखो और जागती आँखों से देखो, 'सपने वो नहीं होते, जो आप सोते वक्त देखते हैं, सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।' स्वप्न ही हमें भविष्य की दृष्टि और लक्ष्य दिखाते हैं। स्वप्न देखेंगे तो उन्हें पूरा करने के लिए चिन्तन-मनन शुरू होगा फिर वही चिन्तन श्रम साधना से हमें सकारात्मक सार्थक परिणाम की ओर ले जाएगा, उनका कहना था कि लक्ष्य हमेशा बड़ा होना चाहिए। बड़ा लक्ष्य हमें स्वयं की श्रेष्ठता से समाज व राष्ट्र की प्रगति

को उज्ज्वल शिखर की ओर ले जा सकता है वो कहते थे कि जीवन संग्राम में बाधाएँ तो सभी के समक्ष उपस्थित होती है, परन्तु आप इन बाधाओं व मुश्किलों को लाँघकर हमेशा गतिशील बने रहे। डॉ. कलाम विद्यार्थियों को प्रेरित करते थे कि 'बोल कर नहीं, करके दिखाओ क्योंकि लोग सुनना नहीं, देखना ज्यादा पसंद करते हैं।'

डॉ. कलाम का जीवन का दर्शन

संकल्प– हर सुबह पाँच बातें खुद से करें

1. मैं सबसे अच्छा हूँ।
2. मैं यह कर सकता हूँ।
3. भगवान हमेशा मेरे साथ है।
4. मैं एक विजेता हूँ।
5. आज का दिन मेरा है।

सोच– हमेशा पॉजीटिव रहो

1. FAIL- First Attempt in Learning
2. END- Effort Never Dies
3. NO- Next Opportunity

संदेश– तीन चीजों पर ध्यान दो

1. सफलता का रहस्य ?– सही निर्णय
2. सही निर्णय कैसे ?– अनुभव से
3. अनुभव से कैसे ?– गलत निर्णय से

युवाओं के लिए संदेश

1. जिन्दगी में लक्ष्य तय करना।
2. ज्ञान को प्राप्त करना।
3. कठिन मेहनत करना।
4. अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहना।

जनप्रेरक

1. 'इंतजार करने वालों को केवल उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।'
2. 'अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तुम्हें सूरज की तरह जलना होगा।'
3. 'पहली जीत के बाद आराम मत करिए, क्योंकि दूसरी बार आप हार जाएंगे तो लोग कहेंगे कि पहली जीत किस्मत से मिली थी।'
4. 'यदि आप ड्यूटी को सैल्यूट करोगे तो आपको किसी भी व्यक्ति को सैल्यूट करने की जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन यदि आप अपनी ड्यूटी को पोल्यूट करेंगे तो आपको हर किसी को सैल्यूट करना पड़ेगा।'
5. 'एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है, जबकि एक अच्छा दोस्त एक लाइब्रेरी के बराबर होता है।'
6. 'खुश रहने का बस एक ही मंत्र है 'उम्मीद बस खुद से रखो' किसी अन्य से नहीं।'
7. 'जिस दिन हमारे सिग्नेचर ऑटोग्राफ में बदल जाए, उस दिन मान लीजिए आप कामयाब हो गए।'
8. 'ब्लेक कलर (काला रंग) भावनात्मक रूप से बुरा होता है, लेकिन हर ब्लेक बोर्ड स्टूडेंट्स की जिन्दगी ब्राइट बनाता है।'
9. 'यह संभव है कि हम सबके पास समान प्रतिभा न हो, लेकिन अपनी प्रतिभाओं को विकसित करने का हम सभी के पास समान अवसर होता है।'
10. 'बारिश में सभी पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं, लेकिन आज बादलों से भी ऊँचा उड़कर खुद को बारिश से खुद को बचाता है।'
11. 'प्रशंसा सार्वजनिक रूप से करें, लेकिन आलोचना निजी तौर पर करें।'
12. 'मनुष्य के लिए कठिनाइयों का होना बहुत जरूरी है क्योंकि कठिनाइयों के बिना सफलता का आनन्द नहीं लिया जा सकता।'
13. 'देश का सबसे अच्छा दिमाग, क्लास रूम की आखिरी बैंचों पर मिल सकता है।'
14. 'अपने मिशन में कामयाबी चाहते हैं तो सिर्फ और सिर्फ अपने लक्ष्य पर निशाना लगाएं।
15. 'शिक्षक एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य को आकार देता है। अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं, तो मेरे लिए यह सबसे बड़ा सम्मान होगा।'

डॉ. कलाम का जीवन एक आदर्श के रूप में हमारे समक्ष है। उन्होंने जो भी दूसरों से कहा उसे पहले अपने जीवन में अपनाया। सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति उनके जीवन में पूर्णतः चरितार्थ होती है। बच्चों के प्रिय डॉ. कलाम का यही प्रयास रहता था कि वे जहाँ भी जाएं बच्चों व युवा विद्यार्थियों से मिलें, उनसे अनौपचारिक चर्चा करें, उनके साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करें, उनकी हमेशा इच्छा रहती थी कि वे विद्यार्थियों के बीच में रहें और अपने जीवन के अंतिम क्षणों में डॉ. कलाम शिलांग मेघालय में आई.आई.एम. संस्थान के छात्रों को 'जीवन योग्य ग्रहों' पर व्याख्यान देते हुए अचानक बेहोश होकर गिर पड़े और हृदयाघात के कारण 64 वर्ष की आयु में 27 जुलाई 2015 को परलोक सिधार गए। अपने अंतिम समय में भी विद्यार्थियों व देश के लिए समर्पित थे। कलाम का व्यक्तित्व व कार्य निःसंदेह सदी के लिए प्रेरणादायक है। आज हम सभी को उनसे सरलता, विनम्रता, पढ़ने-लिखने की लगन, मेहनत, ईमानदारी, प्रगति और कर्त्तव्यनिष्ठता जैसे मोतियों को अपने जीवन में पिरोने की आवश्यकता है। भारत वर्ष के ऐसे सच्चे सपूत को हमारा कोटि-कोटि नमन।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लसेड़ी,
राजगढ़, चूरू (राज.) **मो: 9462360281**

प्रेरक प्रसंग

अब्दुल कलाम अपने जीवन में खुद को कभी बड़ा व्यक्ति नहीं मानते थे वे अपने को सबके बराबर एक समान समझते थे। जब उन्हें वाराणसी में आईआईटी (BHU) के दीक्षांत समारोह में बुलाया गया तो उन्होंने देखा की स्टेज में 5 कुर्सियाँ लगी हुई है जिसमें बीच वाली कुर्सी बड़ी और उन सबसे ऊँची भी थी जिस पर उन्हें बैठने को कहा गया तो कलाम साहब ने उस पर बैठने से मना कर दिया और कहा कि मैं भी आप लोगों के बराबर का ही व्यक्ति हूँ अगर सम्मान करना है तो इस पर कुलपति जी को बैठाइए, फिर ऊँची कुर्सी वहाँ से हटा दी जाती है। जिसके बाद अब्दुल कलाम भी सबके बराबर वाली कुर्सी पर ही बैठे। इस तरह अब्दुल कलाम अपने को सबके बराबर ही मानते थे यही नहीं अपनी इसी समानता के भाव के चलते अब्दुल कलाम सभी धर्मों के साहित्य का अध्ययन भी किया करते थे। यानी उनके लिए कोई भी ग्रन्थ छोटा या बड़ा नहीं था बस ज्ञान जहाँ से मिले ले लेना चाहिए, यही उनकी सोच थी।

सुभाष चौधरी
व्याख्याता
रा. जवाहर उ.मा.वि. भीनासर, बीकानेर
मो. 8114489352

Rajasthan Government

विश्व बालिका दिवस विशेष

सपनों को उड़ान

❒ हिमांशु सोगानी

11 अक्टूबर, 2012 बालिकाओं को लिंगभेद व अपने अधिकारों के प्रति सजगता व संरक्षण का दिवस हैं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बालिकाओं की आजादी को आसमां देने के लिए बाल विवाह की समाप्ति के ध्येय की विश्वव्यापी आवाज के साथ बालिका दिवस की शुरूआत की गई। लेकिन एक दशक बाद भी हम बाल विवाह समेत विविध क्षेत्रों में भेदभाव से बालिका को मुक्त नहीं कर पाए हैं। अभी वैश्विक स्तर पर बालिकाओं के सपनों को उड़ान देने के लिए तीव्र प्रयासों की असीम जरूरत है।

विश्व स्तर पर बालिका दिवस मनाने की पहल एक गैर सरकारी संगठन प्लान इंटरनेशनल द्वारा एक अभियान के रूप में की गई। इस संगठन द्वारा 'क्योंकि मैं एक लड़की हूँ' नाम से एक अभियान शुरू किया गया। अभियान को अन्तरराष्ट्रीय उड़ान देने के लिए कनाडा सरकार के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र की 55 वीं आम सभा में प्रस्ताव पारित किया गया और इसके लिए 11 अक्टूबर का दिन चुना गया।

इस दिन को मनाने का मूल उद्देश्य बालिकाओं के सामने आने वाली चुनौतियों और उनके अधिकारों के संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। सदियों से चल रही बालविवाह, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाओं को मानव समाज से जड़ से मिटाना है। महिला सशक्तिकरण, उन्हें उनके अधिकार प्रदान करने में मदद करना, तरक्की के अधिक अवसर प्रदान करना, शिक्षा, पोषण, कानूनी अधिकार, चिकित्सा देखभाल, लिंग भेदभाव व हिंसा से सुरक्षा आदि ताकि वे दुनिया भर में उनके सामने आने वाली चुनौतियों का सामना कर सके। वे अपनी जरूरतों को पूरा कर सके। साथ ही दुनियाभर में लड़कियों के प्रति होने वाली लैंगिक असमानताओं को खत्म करने के बारे में जागरूकता फैलाना भी इसका उद्देश्य है।

बालिकाओं के लिए बढ़ते अन्तरराष्ट्रीय कदम–संयुक्त राष्ट्र ने बालिका प्रोत्साहन व समाज में गर्ल चाइल्ड के भविष्य को लेकर प्रतिवर्ष रखी गई थीम ने प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है। यूएनओ ने गर्ल चाइल्ड के

सपनों को उड़ान देने के लिए प्रतिवर्ष थीम में सकारात्मक बदलाव कर प्रगति को इस प्रकार प्रकट किया है–

- वर्ष 2012– बालविवाह को समाप्त करना।
- वर्ष 2013– लड़कियों की शिक्षा के लिए नवाचार
- वर्ष 2014 – किशोर लड़कियों को सशक्त बनाना : हिंसा के चक्र को समाप्त करना
- वर्ष 2015– किशोरियों की शक्ति : 2030 के लिए विजन
- वर्ष 2016–लड़कियों की प्रगति = लक्ष्यों की प्रगति : लड़कियों के लिए क्या मायने रखता है।
- वर्ष 2017 –एमपावर गर्ल्स : बिफोर, क्रेश के दौरान और उसके बाद
- वर्ष 2018– उसके साथ: एक कुशल लड़की बल
- वर्ष 2019 –गर्लफार्स : अनस्क्रिप्टेड एंड अनस्टापेबल
- वर्ष 2020 – हमारी आवाज और समान भविष्य

क्या है 2021 के बालिका दिवस की थीम– विगत एक दशक से मनाए जा रहे अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस की प्रति वर्ष थीम रखी जाती है। इस बार इंटरनेशनल डे आफ गर्ल चाइल्ड 2021 की थीम है 'With Her : A Skilled Girl Force' यानी कि उसके साथ : एक कुशल लड़की का बल। इस प्रकार इस साल संयुक्त राष्ट्र बालिकाओं के हूनर को प्रोत्साहित करने की ओर अग्रसर रहेगा।

प्रदेश में : ये योजनाएँ दे रही बालिकाओं के सपनों को उड़ान

बालिकाओं के साथ लैंगिक असमानताओं को दूर करने व उनको पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए राजस्थान सरकार व शिक्षा विभाग की अनेक महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ संचालित है। जो बालिका प्रोत्साहन की सफलता के पायदानों को छू रही है। जिनमें निम्न प्रमुख है–

1. गार्गी पुरस्कार योजना
2. नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना
3. नि:शुल्क स्कूटी वितरण योजना
4. मुख्यमंत्री हमारी बेटी योजना
5. मुख्यमंत्री राजश्री योजना
6. ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना
7. बालिका प्रोत्साहन योजना
8. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
9. कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय
10. केजीबीवी छात्रावास योजना
11. एनपीईजीईएल योजना
12. महिला समाख्या कार्यक्रम

सेना में बराबरी का मिला तोहफा– इस साल भारत सरकार ने भारतीय सेनाओं में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के माध्यम से लड़कियों को सशस्त्र बलों में शामिल करने का निर्णय लिया है। एनडीए के माध्यम से महिलाओं को स्थायी कमीशन दिया जाएगा। इस प्रकार सेनाओं में सेवाओं से लिंग भेदभाव समाप्ति की ओर अग्रसर है।

अभी हाल ही में सम्पन्न टोक्यो ओलम्पिक व पैराओलम्पिक में भारत की मीराबाई चानू, अवनी लेखरा, भवीना पटेल व सविता पूनियां आदि बेटियों ने दिखा दिया कि भारत लिंग विषमता से उभर कर विश्व में अग्रिम पंक्ति में आ खड़ा है।

प्राध्यापक (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोठीनातमाम,
टोंक (राज.)
मो: 9983724227

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

बदलते परिवेश की बदलती शैक्षिक आवश्यकताएं

❐ इंद्रा

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते कांतेव चापि रमत्यपनीय खेदम। लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं किं किं न साधयति कल्पतेव विद्या।।

अर्थात विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, पत्नी की तरह थकान दूर करके मन को रिझाती है, शोभा प्राप्त कराती है और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है। सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह विद्या क्या-क्या सिद्ध नही करती?

शिक्षा अचेतन मन को चेतन कर उसे कर्म की ओर प्रवृत्त करती है। प्रतापगढ़ से डॉ. माणिक जी अपनी बसेड़ा की डायरी में लिखते हैं- शिक्षा किताब, कक्षा और परीक्षा के अलावा भी बहुत कुछ है और यकीनन जीवन के हर कदम पर इसकी सार्थकता परिलक्षित भी होती है। साथ ही अपनी डायरी में वे ये भी लिखते हैं कि खाली ईमारत स्कूल कैसे हो सकती है, जब तक उसमें कर्मठ और चिंतनशील अध्यापक न हो। यह पंक्ति विद्यालय और विद्यालय से इतर शिक्षा की सफलता में भी सौ फीसदी खरी उतरती है।

किसी भी विद्यालय की प्रगति सही मायने में उस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों और वहाँ पर कार्यरत अध्यापक-कर्मचारियों की ही प्रगति है। बदलते परिवेश में शिक्षा प्राप्ति के स्रोत व परिणाम भी बदलते नजर आ रहे हैं। विद्यालय में आने वाले हर बालक-बालिका को भेड़-बकरियों की टोली के समान एक ही छड़ी से हाँका जा रहा है, विद्यालय से निकलने वाले हर विद्यार्थी और उनके माता-पिता की एक ही अभिलाषा रहती है कि वो 99% मार्क्स लेकर आए। क्योंकर अध्यापक व अभिभावक यह भूल जाते हैं कि महज किताबी ज्ञान को रटकर परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही शिक्षा नही है, क्यों वे बच्चों को अंकों और श्रेणियों में उलझाकर उनके भविष्य को पीछे की ओर धकेलते हैं।

अध्ययन-अध्यापन दोनों ही श्रेष्ठ कर्म हैं। एक हमें अंधेरे से बाहर लाता है तो दूसरा हमें अंधेरे में हीरे तराशने का अनुभव और आनंद देता है। किंतु बदलते परिवेश में शिक्षा के उद्देश्यों को अधिकतम प्राप्त करने के लिए हमें विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करने के तरीकों में भी बदलाव लाने की पूर्ण आवश्यकता प्रतीत होती है। विद्यालय में समय को कालांशों में विभक्त कर विषय व पुस्तक प्रधान शिक्षा देने की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। विद्यार्थी को विद्यालय आने से पहले ही पता होता है अमुक समय में हमें अमुक विषय की पुस्तक बैग से निकालकर पढ़ाई करनी है चाहे उसके लिए उसका मन और चित्त उसमें प्रवृत्त भले ही हो अथवा ना हो। इस बंधी-बंधाई परिपाटी ने शनै: शनै: विद्यार्थी का विद्यालय और शिक्षा के प्रति मोह भंग तो किया ही है, परिवार और समाज भी इसके परिणामों से अछूता नही रहा।

हालांकि वर्तमान समय में डी-स्कूलिंग व जीरो पीरियड जैसे कुछ संप्रत्यय और नो बैग डे जैसी कुछ युक्तियाँ उभरकर आई है जिनके प्रयोग से हम शिक्षा की सफलता के प्रतिशत में बढ़ोतरी कर सकते हैं, लेकिन फिर भी कुछ और नए तरीके हमें ईजाद करने व अपनाने होंगे जिससे कि विद्यालय और उसकी चारदीवारी का उपयोग विद्यार्थियों को इतना ऊपर ले जाए कि वे चारदीवारी से बाहर झांककर किसी की मदद कर सके। पुस्तकालय की पुस्तकें पुरानी होकर बिखरे या दीमक-चूहों की भेंट चढ़े, इससे तो अच्छा यह हो कि वे उन नन्हें बच्चों के हाथों की बारिश की नाव बने जो उन्हें मुश्किल हालात में भी उबरने का साहस प्रदान करती है।

इन्ही चिन्तन और मनन की श्रेणी में कुछ विचार मेरे भी मस्तिष्क में उभरे जिन्हें मैं आपके साथ साझा करना चाहूँगी। अक्सर शिक्षक-प्रशिक्षणों में कालांश की शुरुआत रोचक गतिविधि से करने पर बल दिया जा रहा है, इसी के चलते जीरो पीरियड की अवधारणा भी विकसित हो रही है और यह वाकई में बहुत अच्छा है कि विद्यालय में प्रार्थना सभा और उपस्थिति के पश्चात पहला कालांश विषय प्रधान न होकर बच्चों के लिए गतिविधि आधारित हो। प्राथमिक कक्षा के बच्चों के अध्ययन के लिए जीरो कालांश के बाद विषय और भाषा प्रधान अध्ययन कालांशों के बीच स्व-अध्ययन हेतु पुस्तकालय कक्ष का रखा जाए। इसके लिए भी एक उपाय यह हो सकता है कि हम किसी कक्षा कक्ष की दीवार आलमारी को कक्षा -2 व कक्षा -3 के स्व-अध्ययन हेतु तथा कक्षा 4-5 हेतु अलग कक्षा कक्ष में स्व-अध्ययन कक्ष बनाकर उनके स्तरानुकूल पुस्तक और अध्ययन सामग्री को रख सकते हैं जिन्हें विद्यार्थी सहज ही उपयोग में ले सके। स्व-अध्ययन कालांश पश्चात पुन: विषय व भाषा प्रधान कालांश रखे जाए।

एक अन्य उपाय के रूप में विद्यालय में चार कक्षा कक्षों को हिन्दी, अंग्रेजी, गणित व पर्यावरण अध्ययन आदि में बाँटकर मध्याह्न पश्चात छुट्टी से पूर्व दो कालांश बच्चों को इच्छानुसार कक्ष में जाकर पढ़ने के लिए कहा जाए। इन कक्षों की विशेषता यह होगी कि इनमें वे अध्यापक मौजूद होंगे जो इन विषयों को पढ़ाते हो और इन कक्षों में उस समय अध्ययन पुस्तक आधारित न होकर सामान्य जानकारी से पूर्ण हो। ऐसा होने से विद्यार्थी अपने अपने क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रगति कर अपना पूर्ण दे पाएँगे। मध्याह्न पश्चात यह कार्यक्रम सप्ताह में चार दिन हो तथा दो दिन का समय बच्चों के लिए अलग अलग खेल हेतु निर्धारित हो जिससे बच्चों का मानसिक विकास के साथ साथ शारीरिक विकास भी हो सके।

निश्चय ही अध्ययन चिन्तन को विकसित करता है और चिन्तन समस्याओं का हल प्रदान करता है। यदि प्राथमिक शिक्षकों द्वारा अपने कर्म व चिन्तन को प्रधानता देते हुए बदलते परिवेश के साथ ही नए उपायों को अपनाकर शिक्षा प्रदान की जाए तो निश्चित ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाएँगे।

समान यहाँ पर बाल-बाला
ज्ञान पाते यहाँ निराला।
खुल जाता हर कठिनाई का ताला
ऐसी पावन पाठशाला।।

एक नई सोच, चिन्तन व कर्म के साथ आप सभी के सहयोग की आशा में.....

अध्यापिका
श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर (राज.)
मो: 9680693930

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2021

1. गबन/वित्तीय अनियमितता आदि की संभावना निराकृत करने के क्रम में।
2. कक्षा शिक्षण प्रारंभ होने के उपरांत आगामी तीन माह की शिक्षण कार्य योजना बाबत।
3. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का ई ऑक्शन।
4. राजकीय कार्यालयों में उपलब्ध अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का ई-ऑक्शन द्वारा निस्तारण के संबंध में।
5. अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स निस्तारण अभियान।

1. गबन/वित्तीय अनियमितता आदि की संभावना निराकृत करने के क्रम में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-प्रारं/पेंशन/2020/विविध दिनांक : 08.09.2021 ● विषयः गबन/वित्तीय अनियमितता आदि की संभावना निराकृत करने के क्रम में ●परिपत्र।

विभाग के अधीनस्थ सभी कार्यालयों में गबन, चोरी, हानि, वित्तीय अनियमितताएं, निधियों का दुर्विनियोजन, अपव्यय, क्षरण आदि की किसी भी संभावना को निराकृत करने, निधियों का समयबद्ध रूप से निर्धारित उपयोग करने के लिए वित्तीय नियमों/वित्त विभाग एवं विभागीय परिपत्रों द्वारा निर्धारित नियमों/प्रक्रियाओं का पूर्ण पालन किया जाना अति आवश्यक है। समस्त कार्यालय अध्यक्ष/आहरण वितरण अधिकारी तथा उनके अधीनस्थ लेखा संवर्ग संबंधी कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी तथा अन्य संवर्गों के कर्मचारियों को निर्देशित किया जाता है कि पदीय कर्त्तव्यों के निर्वहन में उक्तानुसार विहित नियमों एवं प्रक्रियाओं का पूर्ण पालन करें। निधियों की प्राप्ति तथा इसके उपयोग तथा अन्य अनुषांगिक कार्यों का संचालन करते समय संबंधित नियमों/प्रक्रियाओं का पूर्ण पालन किए जाने और कतिपय वर्ग के अधिकारी कर्मचारियों के लिए निम्नांकित अनुसार विशेषतः निर्धारित कर्त्तव्यों की कार्यालय कार्यों के निष्पादन के दौरान पालना की जाए-

1. सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग प्रथम के परिशिष्ट-1 के अनुसार प्रत्येक कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष, कार्यालय अध्यक्ष घोषित करने संबंधी आदेशों में दिए गए कर्त्तव्यों को पूर्ण करेंगे और परिशिष्ट में संबंधित नियमों के प्रकाश में दिए गए बिन्दु संख्या (i) से (XXVII) में दिए गए कार्यों/निर्देशों की पूर्ण पालना के लिए उत्तरदायी होंगे। यह परिशिष्ट सिद्धांततः प्रतिनिहित आहरण वितरण अधिकारियों पर भी लागू होते हैं।
2. सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग प्रथम के परिशिष्ट-4 में विभाग में पदस्थापित लेखाधिकारियों की पदीय स्थिति/कर्त्तव्य/उत्तरदायित्व/शक्तियों का विस्तृत उल्लेख किया गया है। सभी संबंधित अधिकारी वित्तीय नियमों/उपापन अधिनियम एवं नियमों तथा अन्य प्रसारित निर्देशों/प्रक्रियाओं के पालन के साथ-साथ परिशिष्ट-4 के बिन्दु I से V में विहित पदीय स्थिति, उत्तरदायित्व, शक्तियों के क्रम में दिए गए निर्देशों का पूर्ण पालन करेंगे।
3. सामान्य वित्तीय एवं लेखानियमों के भाग प्रथम के परिशिष्ट-5 में विभाग/कार्यालयों में पदस्थापित अधीनस्थ लेखा सेवा के अधिकारियों/कर्मचारियों के कर्त्तव्य/उत्तरदायित्व/पदीय शक्तियों का उल्लेख किया गया है। विभाग अन्तर्गत पदस्थापित उक्त श्रेणी के सभी लेखाकर्मी परिशिष्ट-5 के बिन्दु संख्या क से ग में दी गई व्यवस्था/निर्देशों का पूर्ण पालन करेंगे।
4. उपर्युक्त बिन्दु संख्या 1 से 3 में कतिपय वर्ग के अधिकारी/कर्मचारियों के विशेषतः निर्धारित कर्त्तव्यों आदि का उल्लेख है। सरकारी नियोजन में पदीय हैसियत से कार्यालय अध्यक्ष/ आहरण वितरण अधिकारी/लेखा संबंधी अधिकारी/कर्मचारी तथा कार्य विशेष के लिए स्पष्ट रूप से नियोजित अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों को कर्त्तव्य निष्पादन के क्रम में विहित संबंधित नियमों/प्रक्रियाओं के ज्ञान की अपेक्षा है। अतः सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने कर्त्तव्य निष्पादन के समय संबंधित नियमों एवं प्रक्रियाओं की पूर्ण पालना सुनिश्चित करेंगे।
5. उपापन प्रक्रिया के संचालन के दौरान सभी संबंधित कार्यालय अध्यक्ष/आहरण वितरण अधिकारी/लेखा संबंधी अधिकारी/कर्मचारी/इस कार्य में नियोजित अन्य कर्मचारी तथा उपापन के विभिन्न कार्यों के लिए नियमों के अन्तर्गत गठित कमेटियाँ प्रवर्तित एवं लागू वित्तीय नियमों, राजस्थान उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एवं
6. कार्मिक विभाग द्वारा सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवाएं समेकित पारिश्रमिक आधार पर लिए जाने/संविदा के आधार पर लिए जाने के संबंध में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्धांत जारी किए गए हैं। अन्य निर्देशों के साथ-साथ परिपत्र क्रमांक एफ. 17(10) डीओपी/ए-II/94 जयपुर दिनांक 10 फरवरी 2016 के बिन्दु संख्या (12) में संविदा प्रतिनियुक्ति आधार पर लगे हुए व्यक्तियों को गोपनीय या संवेदनशील प्रकृति के कार्य या नकदी संभालने/रोकड़ बही को लिखने और रोकड़ियों के रूप में कृत्य करने से संबंधित कार्य न्यस्त नहीं किए जाने के स्पष्ट निर्देश दिए गए है। इसी प्रकार कार्मिक विभाग के समसंख्यक परिपत्र दिनांक 08 फरवरी 2018 के बिन्दु संख्या (11) में समेकित पारिश्रमिक के आधार पर पुनः नियुक्त व्यक्तियों के क्रम में उक्तानुसार निषेध निर्देशित किया गया है। अतः सभी कार्यालय अध्यक्षों को निर्देशित किया जाता है कि संविदा/समेकित पारिश्रमिक आधार पर पुनः नियुक्त व्यक्तियों तथा संविदा आधार पर रखे गए अन्य प्रकृति के कामगारों/ मेन विद मशीन आदि को समय-समय पर जारी परिपत्रों/निर्देशों के अनुसार गोपनीय/संवेदनशील प्रकृति के कार्यो को न्यस्त (Entrust) नहीं किया जाने तथा इस प्रकार के नियोजन के क्रम में जारी सभी दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जावे।

Rajasthan Education Initiative सत्यमेव जयते

7. IFMS/पेमेनेजर सिस्टम का दुरुपयोग/अनधिकृत उपयोग कर किए जा सकने वाले गबन की संभावना को निराकृत करने के विभिन्न सभी कार्यालय अध्यक्षों/आहरण वितरण अधिकारियों और भुगतान प्रक्रिया में विधिपूर्वक नियोजन सभी अधिकारी/कर्मचारियों को निर्देशित किया जाता है कि बिल निर्माण, तदसंबंधी जाँच और इसके कोषालय को ऑनलाइन अग्रेषण की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए निर्धारित लॉगइन-पासवर्ड का हर हाल में उपयोग नियमों में अधिकृत व्यक्ति द्वारा ही किया जाए। किसी भी स्थिति में इस प्रक्रिया में अन्य/अनधिकृत व्यक्ति की भागीदारी नहीं की जावे। इस संबंध में मेन विद मशीन की सेवाओं में आपूर्तित मानव संसाधन के संबंध में विशेष सावधानी बरती जावें और किसी भी सूरत में संबंधित आदेशों में आवर्त कम्प्यूटर पर विभिन्न प्रारूप में टंकण कार्य के अलावा कोई अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं सौंपा जावें।
8. संबंधित कार्यालय अध्यक्ष/आहरण वितरण अधिकारी/लेखा संवर्ग के अधिकारी-कर्मचारी तथा भुगतान प्रक्रिया में विधितः संलग्न अन्य कर्मचारी नियमों में प्रचलित सभी लेखा पुस्तकों एवं सूचनाओं के संधारण के लिए सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे।

उपर्युक्त दिशा निर्देश प्रवर्तित नियमों/परिपत्रों/आदेशों के परिप्रेक्ष्य में सारतः जारी किए जा रहे हैं। कार्यालय अध्यक्ष/लेखा संवर्ग के अधिकारी-कर्मचारी तथा कार्य विशिष्ट में स्पष्टतः नियोजित अन्य सरकारी कर्मचारी उपर्युक्त निर्देशों सहित वित्तीय नियमों/उपापन नियमों/समय-समय पर जारी परिपत्रों एवं आदेशों द्वारा विहित व्यवस्था का पूर्ण पालन करने के लिए आबद्ध है। नियमों/निर्देशों/निर्धारित प्रक्रियाओं का उल्लंघन करने के कारण उत्पन्न गबन/हानि/चोरी/अन्य वित्तीय अनियमितता की स्थिति के लिए सभी संबंधित अधिकारी/कर्मचारी व्यक्तिगत एवं सामूहिक उत्तरदायित्व के अध्यधीन होंगे।

● **(मनोज कुमार तंवर)** मुख्य लेखाधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. कक्षा शिक्षण प्रारंभ होने के उपरांत आगामी तीन माह की शिक्षण कार्य योजना बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा.द./गुण प्र./गुणवत्ता/61186/2020-21 दिनांक : 21.09.2021 ● 1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंभिक, 4. समस्त पी.ई.ई.ओ. एवं यू.सी.ई.ई.ओ., 5. समस्त संस्थाप्रधान ● विषयः कक्षा शिक्षण प्रारंभ होने के उपरांत आगामी तीन माह की शिक्षण कार्य योजना बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि दिनांक 1 सितम्बर 2021 से कक्षा 9 से 12 के लिए कक्षा शिक्षण प्रारंभ हो चुका है तथा दिनांक 20 सितम्बर 2021 से कक्षा 6 से 8 तथा दिनांक 27 सितम्बर 2021 से कक्षा 1 से 5 की नियमित कक्षा शिक्षण सभी विद्यालयों में कोविड-19 तथा एस.ओ.पी. में उल्लेखित निर्देशों के अनुरूप प्रारंभ हो रहा है।

यद्यपि सभी विद्यार्थियों के लिए स्माइल 3.0 तथा आओ घर में सीखें 2.0 कार्यक्रम के अंतर्गत ई-कक्षा, सप्ताह में दो बार गृहकार्य की वर्कशीट तथा साप्ताहिक क्विज के द्वारा विद्यार्थी, अध्ययन निरंतर कर रहे थे तथापि उक्त अध्ययन प्रक्रिया में नियमित सहज व्यक्तिशः प्रबोधन अभाव था। अतः प्रारंभ हुए कक्षा शिक्षण में न केवल गत समय के लर्निंग गेप को चिह्नित करना है, वरन लर्निंग लॉस को पूरा करना है साथ ही वर्तमान कक्षा के पाठ्यक्रम को भी शेष उपलब्धि समयावधि में पूरा कराने का प्रयास करना है।

इस संबंध में आगामी 3 माह के लिए शिक्षकों, संस्थाप्रधानों एवं अध्यापकों के लिए निम्नानुसार कार्य किए जाने आवश्यक होंगे-

विद्यार्थियों की विद्यालय में उपस्थिति- एक लंबे अंतराल के उपरांत कक्षा शिक्षण अनुमत होने के कारण विद्यार्थियों की उपस्थिति के संबंध में ही संस्थाप्रधान एवं शिक्षकों को संवेदनशील होना आवश्यक है।

यद्यपि विद्यार्थियों को स्वैच्छिक रूप से विद्यालय में कक्षा शिक्षण हेतु उपस्थित होना है तथापि शिक्षकों का दायित्व है कि सामान्य परिस्थितियों में कोविड-19 के गाइड लाइन की पालना करते हुए विद्यार्थियों की उपस्थिति अनुमत सीमा तक विद्यालय में सुनिश्चित करें जिससे कि विद्यार्थियों का अध्ययन बाधित ना हो।

शाला दर्पण पर मासिक उपस्थिति दर्ज करने हेतु मॉड्यूल उपलब्ध है। अब इस विद्यार्थी उपस्थिति मॉड्यूल में एक बार दर्ज की जाएगी।

कक्षा	प्रथम एक बार शाला दर्पण पर अंकन	अक्टूबर माह तक के कार्य दिवस	उक्त कार्य दिवसों में उपस्थिति
9 से 12	1 अक्टूबर 2021	22	
6 से 8	5 अक्टूबर 2021	13	
1 से 5	10 अक्टूबर 2021	11	

एक बार उक्त तिथियों को उपस्थिति के उपरांत प्रति माह उपयुक्त तिथियों को संबंधित कक्षा की उपस्थिति शाला दर्पण पर अंकित करना सुनिश्चित करेंगे।

प्रवेशोत्सव- कक्षा 9 से 12 में प्रवेश की तिथि 30 सितम्बर 2021 बढ़ा दी गई है। कक्षा 1 से 8 का प्रवेश आरटीई नार्मस के अनुसार सत्रपर्यंत रहेगा, ऐसे में कैचमेट परिक्षेत्र के आउट ऑफ स्कूल बालक-बालिकाओं का प्रवेश विद्यालयों में कराने के साथ यह भी सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी विद्यार्थी ड्राप आउट न हो।

सामुदायिक सहभागिता एवं अध्यापक अभिभावक बैठक- विद्यालय में कक्षा शिक्षण प्रारंभ होने से पूर्व ही इस हेतु वातावरण निर्माण के लिए सामुदायिक सहयोग अपेक्षित है। एसएससी/एसडीएमसी की सहभागिता से शिक्षक परिक्षेत्र के अभिभावकों को जागरूक करेंगे।

1. पीटीएम-प्रत्येक विद्यालय में दिनांक 28.09.2021 को पीटीएम का आयोजन कोविड-19 की गाइडलाइन की पालना करते हुए किया जाना है।
2. पीटीएम मॉनिटरिंग- मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, उनके कार्यालय के समस्त एसीबीईओ एवं आरपी तथा जिले की डाइट का शैक्षिक स्टाफ किसी न किसी विद्यालय की पीटीएम में उपस्थित होकर

अभिभावकों को कक्षा शिक्षण हेतु विद्यालय की तैयारियों से अवगत कराएंगे।

कलस्टर वर्कबुक से लर्निंग गैप दूर करना (ब्रिज कार्यक्रम):– गत वर्षों में रहे लर्निंग गैप्स को दूर करने के लिए अंग्रेजी, हिन्दी एवं गणित तीनों विषय की एक कलस्टर वर्कबुक कक्षा 3 से 8 तक की तैयार की गई है। कक्षा 1 एवं 2 की एंटीग्रेड वर्कबुक तैयार की गई है।

- सभी मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पीईईओ, अधीनस्थ विद्यालयों में दिनांक 27.09.2021 से पूर्व विद्यालयों एवं विद्यार्थियों तक पहुँचाना सुनिश्चित करेंगे। यदि इस कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही बरती गई तो संबंधित पीईईओ एवं सीबीईओ के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही प्रारम्भ की जाएगी।
- क्योंकि वर्तमान में 50 प्रतिशत क्षमता के साथ विद्यार्थी विद्यालय आएंगे, अतः वे विद्यालय की उपस्थिति दिवस को प्रत्येक विषय (हिन्दी, अंग्रेजी, गणित) की वर्कबुक की दो वर्कशीट विषयाध्यापक की सहायता से हल करेंगे तथा अनुपस्थिति दिवस (आगामी घर रहने वाले दिवस) को अन्य दो-दो वर्कशीट गृहकार्य के रूप में हल करेंगे, जिसे आगामी कार्यदिवस को शिक्षक द्वारा चैक कर विद्यार्थी को अपडेट किया जाएगा।
- वर्कशीट से लर्निंग गैप्स हेतु यह निदानात्मक कार्य दिनांक 01.10.2021 से प्रारम्भ किया जाएगा।
- कुल 8 कालांश में से प्रथम चार कालांश में वर्कशीट आधारित शिक्षण (गत दिवस एवं वर्तमान दिवस की वर्कशीट) कार्य किया जाए तथा शेष चार कालांश में एटग्रेड की विषयवस्तु का अध्यापक कराया जाए।

क्र.सं.	वर्कबुक	पढ़ाने हेतु/ गृहकार्य दिवस	कालांश/ समायोजन
1	पहल (कक्षा 3 के लिए)	4 कालांश	मुख्य विषयों के 5 कालांश के पश्चात शेष रहे कालांश तथा कला शिक्षा, कार्यानुभव, स्वास्थ्य एवं शा. शिक्षा के कालांशों के स्थान पर
2	प्रयास (कक्षा 4 एवं 5 के लिए)	4 कालांश	
3	प्रवाह (कक्षा 6 एवं 7 के लिए)	4 कालांश	
4	प्रखर (कक्षा 8 के लिए)	4 कालांश	
5	कक्षा 1 एवं 2 के लिए एट ग्रेड वर्क बुक	4 कालांश	

विद्यालय का समय विभाग चक्र

कक्षा/ कालांश	1	2	3	4	5	6	7	8
1	हिन्दी वर्कबुक	गणित वर्कबुक	अंग्रेजी वर्कबुक	गणित वर्कबुक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्य पुस्तक	अंग्रेजी वर्कबुक	निदानात्मक शैक्षिक गतिविधियाँ एवं अन्य विषय
2	गणित वर्कबुक	अंग्रेजी वर्कबुक	हिन्दी वर्कबुक	गणित वर्कबुक	अंग्रेजी वर्कबुक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्यपुस्तक	निदानात्मक शैक्षिक
3	पहल गणित वर्कबुक	पहल अंग्रेजी वर्कबुक	पहल गणित वर्कबुक	पहल हिन्दी वर्कबुक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्यपुस्तक	पर्यावरण पाठ्यपुस्तक	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक
4	प्रयास अंग्रेजी वर्कबुक	प्रयास गणित वर्कबुक	प्रयास हिन्दी वर्कबुक	प्रयास गणित वर्कबुक	गणित पाठ्यपुस्तक	पर्यावरण पाठ्यपुस्तक	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक
5	प्रयास अंग्रेजी वर्कबुक	प्रयास गणित वर्कबुक	प्रयास हिन्दी वर्कबुक	प्रयास गणित वर्कबुक	पर्यावरण पाठ्यपुस्तक	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्यपुस्तक
6	प्रवाह गणित वर्कबुक	प्रवाह हिन्दी वर्कबुक	प्रवाह गणित वर्कबुक	प्रवाह अंग्रेजी वर्कबुक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्यपुस्तक	पर्यावरण पाठ्यपुस्तक	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक
7	प्रवाह गणित वर्कबुक	प्रवाह हिन्दी वर्कबुक	प्रवाह गणित वर्कबुक	प्रवाह अंग्रेजी वर्कबुक	पर्यावरण पाठ्यपुस्तक	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्यपुस्तक
8	प्रखर हिन्दी वर्कबुक	प्रखर गणित वर्कबुक	प्रखर अंग्रेजी वर्कबुक	प्रखर गणित वर्कबुक	हिन्दी पाठ्यपुस्तक	गणित पाठ्यपुस्तक	पर्यावरण पाठ्यपुस्तक	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक

नोटः– क्योंकि विद्यालय में 50 प्रतिशत विद्यार्थी अनुमत है अतः उपस्थिति दिवस को विद्यार्थी उक्तानुसार अध्ययन करेंगे तथा आगामी अनुपस्थिति दिवस (आगामी घर रहने वाले दिवस) को अन्य दो-दो वर्कशीट गणित, अंग्रेजी एवं हिन्दी के वर्कबुक की, गृहकार्य के रूप में हल करेंगे।

कक्षा 9 से 12 का समय विभाग चक्र विद्यालय के स्वयं के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लिए स्वयं नियत किया जाएगा। जिन कक्षाओं के लिए कलस्टर वर्कबुक का अध्ययन, निर्धारित कालांश में वे कक्षाएँ एक साथ बैठकर अध्ययन कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम पूरा करने हेतु योजनाः– शिक्षण हेतु निर्धारित समयावधि घट जाने के कारण 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम को कम किया गया है। इस संबंध में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर द्वारा संशोधित संक्षिप्त पाठ्यक्रम जारी किया जाना है। इस संशोधित किए जाने वाले पाठ्यक्रम में वह पाठ एवं विषय वस्तु अवश्य शामिल किए जाएंगे जो कि डिजिटल माध्यम यथा स्माइल 3.0, शाला दर्शन, शाला दर्पण आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को भिजवाए गए हैं।

डिजिटल अध्ययन की निरंतरताः– जो विद्यार्थी विद्यालय में उपस्थित नहीं हो रहे उनके लिए डिजिटल विषय वस्तु स्माइल 3.0, आओ घर में सीखें 2.0 के माध्यम से विद्यार्थियों को व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से अथवा व्यक्तिशः उन्हें अथवा उनके घर पहुँचा कर विषय वस्तु का अध्ययन जारी रखा जाना है। कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थी, जो विद्यालय नहीं आ रहे हैं, उसकी वर्कशीट के आधार पर पोर्ट फोलियों का संधारण पूर्व की भाँति रखा जाए।

साप्ताहिक क्विजः– पूर्व की भाँति प्रत्येक शनिवार को सप्ताह भर के डिजिटल अध्ययन के आधार पर साप्ताहिक क्विज लिया जाना जारी रहेगा। क्योंकि अब कक्षा 1 से 12 तक की सभी विद्यार्थी विद्यालय में उपस्थित होंगे। अतः कक्षा शिक्षक का यह दायित्व होगा कि क्विज में अधिकांश विद्यार्थी भाग ले जिससे कि साप्ताहिक आकलन निरंतर रह

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

सके। क्योंकि अब विद्यालय में कक्षा शिक्षण प्रारंभ हो गया है। अतः उपस्थित एवं अनुपस्थित दोनों ही तरह के विद्यार्थियों का क्विज में ऑनलाइन अथवा प्रिंट लेकर भाग लेना सुनिश्चित किया जाकर उसे क्विज चैटकॉक्स में अपडेट कराया जाए। इसकी प्रति को पोर्टफोलियो में भी संधारित किया जाना है।

मासिक परख:– गत वर्ष की भाँति आगामी माह अक्टूबर 2021 में भी अध्ययन किए गए विषय सामग्री के आधार पर मासिक परख लिया जाएगा। जिन विषयों की अध्ययन सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध नहीं होगी उसके लिए शिक्षक विद्यालय में कक्षा शिक्षण के दौरान अध्यापन किए गए विशेष सामग्री में से परख के लिए निर्धारित पैटर्न पर टेस्ट लेकर शाला दर्पण पर अपडेट करेंगे।

एन.एस.एस. परीक्षा की तैयारी:– एन.ए.एस. परीक्षा नवंबर माह में 12 तारीख को हो रही है। दक्षता आधारित इस परीक्षा में कक्षा 3, 5, 8 एवं 10 के विद्यार्थी भाग लेंगे। उक्त परीक्षा की तैयारी के लिए एक प्रश्न बैंक राज्य शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर द्वारा तैयार कर विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया है। इसके अतिरिक्त प्रति सप्ताह विद्यार्थियों के लिए नियमित रूप से दिया जा रहा क्विज कार्यक्रम भी दक्षता आधारित प्रश्नों पर तैयार किया जाता है। अतः उक्त दोनों स्तरों पर शिक्षक विद्यार्थियों को दक्षता आधारित प्रश्नों को अधिकाधिक हल करने हेतु प्रेरित करें जिससे कि एन.ए.एस. परीक्षा में राज्य का परिणाम पूर्व की भाँति श्रेष्ठ रह सके।

सघन निरीक्षण (शाला संबलन एप के माध्यम से):– विद्यालय में पुनः कक्षा शिक्षण प्रारम्भ होने के साथ ही निदेशालय/संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के अधिकारी विद्यालयों का विजिट करेंगे। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अपने कार्यालय के एसीबीईओ/आरपी आदि को शाला सम्बलन का प्रशिक्षण देना सुनिश्चित करेंगे तथा विद्यालयों का विजिट करेंगे। 01 अक्टूबर 2021 से शासन/निदेशालय/संभागीय संयुक्त निदेशक/मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के अधिकारी इस सघन निरीक्षण अभियान में निरीक्षण करेंगे।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अपने कार्यालय के सभी एसीबीईईओ/आरपी आदि में पीईईओ को बाँटकर प्रत्येक विद्यालय का निरीक्षण इस अभियान में किया जाना सुनिश्चित करेंगे, जिसकी प्रविष्टि शाला सम्बलन एप पर की जानी सुनिश्चित करेंगे।

क्र.सं.	करणीय कार्य	समयावधि
1	प्रवेशोत्सव	30 सितम्बर 2021
2	पीटीएम	28 सितम्बर 2021
3	उपस्थिति दर्ज करना	प्रत्येक माह की 1, 5 एवं 10 तारीख को (निर्धारित कक्षा अनुसार)
4	वर्कबुक वितरण	1 सप्ताह
5	पाठ्यपुस्तक वितरण	1 सप्ताह
6	निम्न कक्षा स्तर क्षमताएं	1 माह (कक्षा स्तर के साथ-साथ)
7	गृहकार्य	सप्ताह में 3 दिन
8	साप्ताहिक क्विज	प्रति शनिवार
9	मासिक परख	अक्टूबर माह में
10	एन.ए.एस. परख	नवम्बर माह में

उपर्युक्तानुसार आगामी 3 माह के विद्यालय अपने स्तर पर कार्य योजना बनाकर निर्धारित किए गए शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करें। ऐसी विशेष परिस्थितियाँ बहुत कम आती हैं अतः अतिरिक्त समय देने की आवश्यकता अथवा अतिरिक्त श्रम देने की आवश्यकता हो तो भी शिक्षकों से अपेक्षा है कि वह विद्यार्थियों की सहायता के लिए तत्पर रहेंगे।

सभी शिक्षक तथा विद्यार्थी ई-कक्षा की अध्ययन सामग्री के उपयोग के लिए अपने फोन में मिशन ज्ञान एप को डाउनलोड करना सुनिश्चित करेंगे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का ई-ऑक्शन द्वारा निस्तारण।

कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/ माध्य/लेखा/डी-2/28001/2021-22/ दिनांक : 22.09.2021 ● संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, जयपुर/जोधपुर/कोटा/चूरू/अजमेर/बीकानेर/उदयपुर/भरतपुर/पाली ● विषयः बेशी/अप्रचलित /अनुपयोगी सामान ई-ऑक्शन द्वारा निस्तारण। ● प्रसंगः पत्रांक क्रमांक : प.6 (1) वित्त/साविलेनि/ 2005 पार्ट-1 दिनांक : 02.08.2021

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र द्वारा माध्यमिक शिक्षा विभाग में बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान ई ऑक्शन द्वारा निस्तारण के लिए पायलट आधार पर चयन किया गया है। प्रति संलग्न। आप अपने कार्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान ई-ऑक्शन द्वारा निस्तारण की कार्यवाही करने का श्रम करें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(वित्तीय सलाहकार),** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● वित्त (सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम विभाग), राजस्थान सरकार ● क्रमांकः प.6(1) वित्त/सावलेनि/2005 पार्ट जयपुर दिनांक : 02.08.2021 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा बीकानेर, निदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जयपुर, मुख्य अभियंता, PHED, जयपुर ● विषयः राजकीय कार्यालयों में उपलब्ध अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का ई-ऑक्शन द्वारा निस्तारण के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत आपका ध्यान सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 16-27 की ओर आकृष्ट कर लेख है कि इन नियमों में राजकीय कार्यालयों में उपलब्ध अप्रचलित/अनुपयोगी सामान (Stores) के निस्तारण के प्रावधान उपलब्ध है तथा साविलेनि भाग-। के नियम (XXXIV) में ई-ऑक्शन का प्रावधान है।

Rajasthan Education Department

राजकीय कार्यालयों में उपलब्ध अनुपयोगी सामग्री का 'स्वच्छ कार्यालय' के लिए त्वरित निस्तारण किया जाना आवश्यक है। ई-ऑक्शन हेतु प्लेटफार्म 'Eaution.gov.in' बना हुआ है जिसका उपयोग राज्य के विभागों द्वारा ई-ऑक्शन हेतु किया जा सकता है। यह निर्णय लिया गया है कि प्रारंभ में पायलट आधार पर आपके विभाग का अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का निस्तारण ई-ऑक्शन द्वारा किया जावे।

अतः निर्देशानुसार लेख है कि आपके कार्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों में उपलब्ध अनुपयोगी/अप्रचलित सामग्री का त्वरित निस्तारण ई-ऑक्शन द्वारा किया जाए। ई-ऑक्शन वेबसाइट के संबंध में यदि तकनीकी मार्गदर्शन अपेक्षित समझा जाता है तो निम्न अधिकारी से सम्पर्क किए जाने का परामर्श दिया जाता है। श्री चंचल कुमार, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, एन.आई.सी. E-mail Address : c.kumar@nic.in दूरभाष नं. 9829570672, इसको प्राथमिकता प्रदान करें।

● **(विमल कुमार गुप्ता)** संयुक्त शासन सचिव

4. राजकीय कार्यालयों में उपलब्ध अप्रचलित/अनुपयोगी सामान का ई-ऑक्शन द्वारा निस्तारण के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/लेखा/डी-2/2800/2021-22/दिनांक : 21.09.2021

● कार्यालय आदेश

मैं इस कार्यालय समसंख्यक आदेश दिनांक 02.07.2021 प्रति संलग्न द्वारा बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 16 से 27 के अन्तर्गत समयबद्ध रूप से निस्तारण के निर्देश दिए गए थे। इस क्रम में राज्य सरकार के आदेश क्रमांकः प.6(1) वित्त/साविलेनि/2005 पार्ट-1 दिनांकः 17.09.2021 प्रति संलग्न के अनुसार सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 16 से 27 में प्रक्रिया एवं सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।।। के आइटम 11 में दिनांक 31.03.2022 तक शिथिलन प्रदान किया है। राज्य सरकार द्वारा नियमों में शिथिलन के अन्तर्गत विभाग में जारी बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण अभियान अवधि 31.03.2022 तक बढ़ाई जाती है। अभियान की शेष निर्देश यथावत रहेंगे।

● **(वित्तीय सलाहकार)** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स निस्तारण अभियान।

● वित्त (सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम) विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांकः प.6(1) वित्त/साविलेनि/2005 पार्ट-। जयपुर दिनांक : 17.09.2021 ● विषयः अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स निस्तारण अभियान। ● आदेश परिपत्र।

राजकीय विभागों में उपलब्ध बेशी/अनुपयोगी/अप्रचलित सामान का नियमित वार्षिक निस्तारण किया जाना चाहिए। 'स्वच्छ कार्यालय' के लिए भी ऐसी सामग्री का त्वरित निस्तारण अपेक्षित है। राज्य सरकार द्वारा समस्त राजकीय विभागों/स्वायत्तशासी संस्थाओं/कम्पनियों/बोर्ड्स आदि में अनुपयोगी/नाकारा स्टोर्स के निस्तारण का अभियान पुनःचलाए जाने का निर्णय लिया गया है।

सभी प्रशासनिक विभाग यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके अधीनस्थ सभी विभागाध्यक्ष/कार्यालयाध्यक्ष इस अवधि में समस्त नाकारा सामग्री/वाहनों आदि का नियमानुसार निस्तारण अवश्य कर दें।

अनुपयोगी सामग्री के निस्तारण हेतु सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 16 से 27 में प्रक्रिया एवं सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।।। के भाग-। के आइटम 11 में वित्तीय शक्तियाँ उल्लेखित हैं। अभियान अवधि के लिए इन नियमों में निम्नानुसार शिथिलन प्रदान किया जाता हैः

GF & AR Volume-I Part-II :

Rule 18: Committee for Inspection/Survey:

(i) The surplus, obsolete and unserviceable articles shall be inspected by a committee consisting of senior Gazetted Officer and A.O./A.A.O.-I/A.A.O.- II/Jr. Accountant/ Tehsil Revenue Accountant as the case may be. A certificate for such inspection shall be recorded by the committee and a list of articles submitted.

(ii) In case of article valuing Rs. 10.00 lacs and above, the committee for inspection shall consist of a senior Gazetted Officer, F.A./CAO/Sr.A.O.I.A.0./A.A.O.-I and a technical officer having knowledge of such articles.

Rule 22 : The Committees for disposal shall comprise of :

(1) For articles, other than waste paper :

A. For stores of the value of Rs. 10 lacs and above :

(i) Head of Department or Senior Most Officer nominated by the Head of Department

(ii) Head of Office concerned

(iii) Officer nominated by Senior Most Accounts Officer of the Department, which should be not below the rank of AAO-II. However, in cases of value of stores above 15 lacs, it should not below the rank of AAO-I.

B. For stores of the value of Rs. 2 lac and above but below Rs. 10 lacs :

(i) Head of Office Concerned)

(ii) AO/AAO-I/AAO-II of the office of the Head of Office/Regional Offiee/HOD

(iii) AAO-II./AAO-I/jr. Accountant nominated by Treasury Officer/Sub-Treasury Officer

C. For stores of the value upto Rs. 2 lac:

(i) Head of Office/Drawing and Disbursing Officer

(ii) AAO-I/AAO-II/Junior Accountant of the office of Head of Office/Regional office/HOD

(iii) AAO-I/AAO-II/Jr. Accountant nominated by T.O./ STO.

GF & AR Volume-I Part-III (Delegation of Financial Powers) Part-I Item 11 (c) Vehicles Where the vehicle has not covered the prescribed minimum road kilometers or prescribed minimum years, the norms are now relaxed that if any one of these two norms (minimum kms. and minimum years) is not being fulfilled, the vehicle may be declared

Rajasthan Education Department

condemned by the Head of Department on the recommendation of the committee on the ground of vehicle being uneconomical to run. Head of Department : Full Powers on the recommendation of committee.

अन्य महत्त्वपूर्ण निर्देश:

1. मोटर वाहन नियमानुसार नीलाम करने के पश्चात Replacement में नया वाहन लेने की अनुमति वित्त विभाग/सामान्य प्रशासन विभाग से नियमानुसार दी जा सकेगी।
2. नियमों में दिनांक 22.02.2016 को हुए संशोधन उपरांत टाइपराइटर्स को भी अन्य सामान के साथ नीलाम किया जा सकता है।
3. इस अभियान की मॉनीटरिंग के लिए प्रत्येक विभागाध्यक्ष अपने यहाँ पदस्थापित वित्तीय सलाहकार/वरिष्ठतम लेखाधिकारी को नोडल ऑफिसर नियुक्त करेंगे। ऐसे आदेश की प्रति प्रशासनिक विभाग एवं वित्त (जीएण्डटी) विभाग को भेजी जाएगी।
4. अभियान अवधि में नीलामी से प्राप्त राजस्व की सूचना सभी कार्यालय अपने विभागाध्यक्ष को प्रतिमाह भेजेंगे। समस्त विभागाध्यक्ष यह सूचना संकलित कर निदेशक, निरीक्षण विभाग को मासिक रूप से प्रेषित करेंगे।
5. निदेशक, निरीक्षण विभाग सभी विभागाध्यक्षों से अभियान अवधि में प्राप्त नीलामी से आय की मासिक सूचना संकलित कर वित्त (जीएण्डटी) विभाग को भेजेंगे।
6. नीलामी से प्राप्त राजस्व का 50 प्रतिशत तक अतिरिक्त बजट आवंटन कार्यालयों/विभागों के Modernisation, furniture, equipments आदि के लिए आवश्यकतानुसार किया जा सकेगा। इसके लिए प्रस्ताव वित्त (व्यय) विभाग को भिजवाया जाएं।
7. वित्तीय सलाहकार (नोडल ऑफिसर) यह सुनिश्चित करेंगे कि विभाग के अधीन प्रत्येक कार्यालय में नाकारा सामग्री का निस्तारण इसी अभियान अवधि में हो, इसके लिए अभियान के प्रारंभ में ही वे अधीनस्थ कार्यालयों के संबंधित कार्मिकों की Orientation Meeting कर उन्हें नियमों/प्रक्रिया की पूर्ण जानकारी देंगे। नॉडल ऑफिसर का दायित्व होगा कि वे अधीनस्थ कार्यालयों की समस्याओं/शंकाओं का त्वरित समाधान करे और आवश्यकता होने पर वित्त विभाग से परामर्श प्राप्त करें। वित्तीय सलाहकार अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव, वित्त को लिखे जाने वाले अर्द्धशासकीय पत्र में भी इस अभियान की प्रगति इंगित करेंगे।
8. सभी जिला कलक्टर जिले के राजस्व/जिलास्तरीय अधिकारियों की मासिक समीक्षा बैठक में एक एजेंडा 'नाकारा सामग्री निस्तारण अभियान' बाबत भी रखेंगे एवं प्रगति की समीक्षा करेंगे। इस बाबत वे आवश्यकतानुसार जिला कोषाधिकारी का सहयोग ले सकेंगे।
9. विभागाध्यक्षों के यहाँ कार्यरत आंतरिक जाँच दलों एवं निरीक्षण विभाग के जाँच दलों (Audit Parties) का दायित्व होगा कि वे अपनी रिपोर्ट में इस अभियान अवधि में हुई नाकारा सामग्री निस्तारण एवं प्राप्त राजस्व का विशेष उल्लेख करें।
10. समस्त कोषाधिकारी/उपकोषाधिकारी सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम भाग-।। के नियम 22 के क्रम में नीलामी समितियों में प्रतिनिधित्व हेतु आग्रह प्राप्त होने पर अविलंब आवश्यक कार्यवाही करेंगे। विभागीय अधिकारियों को नीलामी नियमों/प्रक्रिया बाबत कोई समस्या/शंका हो तो उस बाबत आवश्यक परामर्श वे कोषाधिकारी/उपकोषाधिकारी से भी प्राप्त कर सकते हैं।
11. नाकारा सामग्री निस्तारण संबंधी अद्यतन नियम (साविलेनि भाग-।। नियम 16 से 27 एवं साविलेनि भाग-।।। के भाग-। के आइटम संख्या 11) एवं संदर्भित परिपत्र आदि वित्त विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।
12. सभी प्रशासनिक सचिवगण से अनुरोध है कि इस अभियान के सफल संचालन हेतु अपने अधीन विभागों/कंपनियों आदि सभी को उचित निर्देश प्रदान करते हुए उसकी प्रति वित्त (जीएण्डटी) विभाग को भी प्रेषित कराए।

अभियान अवधि 31 मार्च, 2022 तक रहेगी।

● **(अखिल अरोरा)** प्रमुख शासन सचिव, वित्त

VII. SURPLUS/OBSOLETE/UNSERVICEABLE STORES.

Rule 16:

(1) Declaring stores as Surplus : Balance of stores shall not be held in excess of prescribed maximum limit/scale, if any.

(2) Stores remaining stock for over a year shall ordinarily be considered surplus unless there is good reason to treat them otherwise.

Note :

1. This applied to those types of stores which are required for the technical working of the Department, Articles of permanent stock like furniture, equipment, fixture shall be declared surplus, if they exceed the prescribed scale.
2. To ensure that balances are not held in excess of requirement of a reasonable period, an inspection of stores shall be arranged once a year.
3. Articles shall be declared surplus if possibility of their use in the department or in other departments has been explored and found that these are not required for use in the Government departments.

Rule 17:

(1) Declaring stores as obsolete and unserviceable : Each order declaring the stores as obsolete and unserviceable shall specify full reasons for declaring them as such and proper record of all such stores shall be maintained for watching their disposal there of in Form SR 5.

(2) The authority declaring stores unserviceable shall take into account the minimum period of serviceability of articles and vehicle as given in annexure "B" before an order for declaring such articles unserviceable is issued.

Rule 18: Committee for Inspection/Survey:

(i) The surplus, obsolete and unserviceable articles shall be inspected by a committee consisting of senior Gazetted

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

Officer and A.O./A.A.O./Accountant/Tehsil Revenue Accountant as the case may be. A certificate for such inspection shall be recorded by the committee and a list of articles submitted.

(ii) In case of article valuing Rs.5.00 lacs and above, the committee for inspection shall consist of a senior Gazetted Officer, F.A./CAO/Sr.A.O. and a technical officer having knowledge of such articles.

(iii) In case of costly machinery and equipments, the committee may obtain report from expert or authorised dealer wherever considered proper before the articles are declared obsolete and unserviceable.

[(iv) In case of vehicles the Committee shall consist of :

(a) Head of Department or his nominee not below the rank of District Level Officer;

(b) Officer nominated by Senior most Accounts Officer of the organisation, not below the rank of AAO-I.

(c) A Mechanical Engineer of the Department, if there is one. If there is no such Engineer available, a Mechanical Engineer posted in any of the Government Department in the district to be nominated by the Collector of the district concerned.

The motor vehicles shall be declared condemned district wise.]

Rule 19: Instructions to be followed in Disposal of Stores : Subject to any special rules or orders applicable to any particular department stores which are reported to be surplus, obsolete, and ordered to be disposed off shall be disposed off by sale or otherwise under orders of the authority competent to sanction the writing off of a loss.

Rule 20 : (1) Separate sanction for writing off not necessary :

(i) Where the competent authority holds that the stores have become obsolete, surplus or unserviceable owing to normal wear and tear;

(ii) When the competent authority holds that stores have become obsolete, surplus or unserviceable owing to negligence, fraud, etc., on the part of individual Government servant, it will be necessary to fix responsibility for the loss and to devise remedial measures to prevent recurrence of such cases. In the later case, the order declaring the stores in question as obsolete, surplus or unserviceable and ordering their disposal would be sufficient to cover the loss to Government and no separate sanction for write off of the loss is necessary.

Rule 21 : Procedure for disposal – Survey report :

(i) On receipt of the orders issued by competent authority under rule 20 the Head of office shall take further necessary action for the disposal of store articles.

(ii) The Survey Report for disposal will be prepared in SR Form 6. This report shall be signed by the Head of Office or other Gazetted Officer after satisfying himself that all the articles included in the report have been ordered to be disposed off.

(iii) In order to ensure that the stores declared surplus, obsolete, unserviceable fetch maximum value, it is essential that action to dispose them off is taken expeditiously, proper protection is given till their removal by purchaser and time lag between the declaration and actual disposal is minimised.

(iv) Reserve price shall be fixed before auction by the committee as prescribed in rule 18, Special care will be taken while fixing reserve price in cases of spare parts rendered surplus and articles having components of metal like brass, copper, lead, zinc, aluminium, etc. The prevailing market rate at the time of fixing the reserve price shall be taken into account.

VIII. COMMITTEE'S FOR DISPOSAL/SALE/AUCTION.

1[Rule 22 : The Committees for disposal shall comprise of:

(1) For articles, other than waste paper :

A. For stores of the value of Rs. 5 lacs and above :

(i) Head of Department or Senior Most Officer nominated by the Head of Department

(ii) Head of Office concerned

(iii) Officer nominated by Senior Most Accounts Officer of the Department, which should be not below the rank of AAO-I. However, in cases of value of stores above 15 lacs, it should not below the rank of AO.

B. For stores of the value of Rs. 1 lac and above but below Rs. 5 lacs:

(i) Head of Office Concerned

(ii) A.O. or A.A.O.-I of the office of the Head of Office/Regional Office/HoD

(iii) AAO-II/AAO-I nominated by Treasury Officer/Sub-Treasury Officer

C. For stores of the value upto Rs. 1 lac:

(i) Head of Office Drawing and Disbursing Officer

(ii) AAO-I of the office of Head of Office/Regional office/HoD

(iii) AAO-II/AAO-I nominated by T.O./STO.

(2) For waste paper :

(i) Head of office/Drawing and Disbursing Officer.

(ii) AAO-I/ AAO-II /Jr.Accountant posted in the department.

(3) For Motor Vehicles and Heavy Machinery and equipments:

1[(i) Motor Vehicles and Heavy Machinery and equipments : Subject to orders issued by the Government in case of particular department, the motor vehicle of all the departments will be auctioned by the Motor Garage Department through a committee constituted as under:

1. Controller, State Motor Garage Department, Rajasthan,

Jaipur -Chairman

2. FA/CAO posted under G.A.D. (Nominated by concerned Admn.Deptt.) -Member
3. Sr. Most Accounts personnel of State Motor Garage Department -Member
4. Store Incharge (Technical Officer), State Motor Garage Department-Member Secretary]

(ii) Once the motor vehicles are declared condemned and it is not feasible/ economical to bring them to Motor Garage Jaipur, they may be auctioned at the District concerned by the Committee constituted as under:-

1. District Collector or his nominee not below the rank of DLO - Chairman
2. Senior most officer of the office concerned not below the rank of district level officer - Member Secretary
3. District Treasury Officer - Member
4. Technical Officer - Member

The order of the constitution of the above committee shall be issued by the District Collector concerned.

Vehicles which does not have relevant documents or which could not be registered, the disposal of such vehicles shall be permitted by way of auction as old iron (Scrap) after keeping relevant record of the vehicle's chassis/engine number etc.

Motor parts and tyre, tubes declared condemned at districts other than Jaipur, may be auctioned at the districts concerned.

(4) For Typewriters: Typewriters shall be declared condemned and disposed off by way of auction alongwith other articles of the department.]

Rule 23 : Duties and Powers of the Committees:

(i) The Committee provided in Rule 22 shall first inspect the articles declared for disposal to ensure that they are in accordance with the list of such articles. They may point out about their serviceability, etc.

(ii) Procedure, terms and conditions for auction shall be in accordance with the instructions contained in the departmental manual/regulations of the department.

(iii) A sale account shall be prepared in SR Form 7. The sale account, proceedings of auction and other papers of bids, etc., shall be signed by the members of the Committee.

(iv) The Committee for disposal shall be the final authority to approve the highest bid offered at the time of auction.

(v) The Member Secretary will ensure that accounts members or members are invariably present in the meeting in their absence the meeting will not be held.

1[Rule 24 : Earnest Money : The earnest money which will be taken from the bidders before the start of auction shall be 2% of the value of the stores, minimum – being, Rs. 500/- and maximum Rs. 50,000/-.

Note : The value of stores would mean the valuation of store articles as recorded in the stock registers.]

2 [Rule 25 : Publicity & Periodicity for auction shall be made as under :-

Value of Surplus Store	Periodicity	Mode of publication
Up to Rs. 0.50 lacs	7 days	Notice Board of all Regional and Divisional H.Qs. as the case may be and also be inform local persons (Kabadi) etc. dealing in purchase of such surplus obsolete/unserviceable articles .
Above Rs. 0.50 lacs and up to 2.5 lacs	10 days	(1) Notice Board of all Regional and Divisional H.Qs. as the case may be. (2) One Regional/State News paper - Local Edition.
Above Rs. 2.5 lacs and up to Rs. 10.00 lacs	15 days	(1) Notice Board of all Regional and Divisional H.Qs. as the case may be. (2) One State News paper.
Above Rs. 10.00 lacs	20 days	(1) Notice Board of all Regional and Divisional H.Qs. as the case may be. (2) One State News paper. (3) One all India level News paper. (4) Any Trade Journal specialising for publication of NITs.

Note :

(i) The minimum time shall be counted from the date of publicity for auction in the first news paper.

(ii) Extension in the date of publicity for auction shall also be published in the news papers and on the website.

(iii) The publicity for auction shall also be publicised by including it on the Website of the Director Information and Public Relations, Rajasthan, Jaipur (DIPR) if the value of the tender exceeds Rs. 10.00 Lacs. The tender below Rs. 10.00 Lacs shall, however, be publicised through the Departmental Website.

(iv) The publicity for auction to be published through the Website of the DIPR shall be sent either through e-mail on "tender@rajasthan.gov.in." by attaching Word/ HTML format.

(v) For waste papers individuals/firms using waste papers for manufacture of indigenous papers as a cottage industry shall also be informed.]

Rule 26 : Action after Sale : The Head of Office or any other Gazetted Officer nominated shall invariably be present when the articles sold are released. His presence is most essential when the release of the articles takes places sometime after the auction or when it involve process of weightment, etc.

Rule 27 : Sales to private persons/local bodies/

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

Government servants, etc. : Sales of any article of stores to private persons of stores other than those which are found to have become obsolete or unserviceable are regulated by special rules and others applicable to particular department. When stock materials are sold to the public or any other department or authority at the value fixed by the Department, supervision charges and storage charges as determined in the Public Works Department shall be added to the value to cover charges on account of supervision, storage and contingencies. This addition may, however, be waived by the Officer empowered to sanction the sale in the case of surplus stock which in his opinion would otherwise be unsaleable.

ANNEXURE-B

LIST OF ARTICLES BEING COMMONLY USED IN THE DEPARTMENTS GIVING THE MINIMUM PERIOD OF THEIR SERVICEABILITY

PART-I

S. No.	Name of article	Minimum period of service-ability (in years)
1.	पलंग लोहे के	15
2.	टी ट्रे आयरन	8
3.	एश ट्रे टिन	5
4.	घाट स्टेण्ड लोहे का	5
5.	साइन बोर्ड	10
6.	नोटिस बोर्ड	10
7.	डोरमेंट (लोहे की)	10
8.	अंगीठी	5
9.	तसला लोहे का	10
10.	घड़ा लोहे का	15
11.	खुरपा, फावड़ा, कुल्हाड़ी आदि	5
12.	सुराही स्टेण्ड लोहे का	5
13.	ताले (बड़े)	10
14.	ताले (छोटे)	3
15.	लालटेन	5
16.	वाटर कूलर / एयर कूलर	10
17.	साइकिल	5
18.	दीवार घड़ी	20
19.	टेबल घड़ी (टाईम पीस)	10
20.	पेट्रोमेक्स	10
21.	टॉर्च	5
22.	इमरजेन्सी ऑटोमेटिक लाइट	5
23.	एम्पलीफायर, ग्रामोफोन, लाउडस्पीकर	15
24.	रेडियो, ट्रांजिस्टर	10
25.	छाता	5
26.	बरसाती	5
27.	फ्लीट पम्प	2
28.	मुढ्ढा	1
29.	लेदर बैग	3
30.	चिकें	5
31.	प्लास्टिक बाल्टी	4
32.	प्लास्टिक का मग	2
33.	थर्मस फ्लास्क	5
34.	टी सैट	2
35.	गिलास शीशे के	5 माह
36.	जग शीशे के	1 वर्ष
37.	फोटोग्राफ	10
38.	तस्वीरें	10
39.	टेबिल ग्लास	5
40.	स्टेनलैस स्टील के गिलास	10
41.	स्टेनलैस स्टील के जग	10
42.	पीतल तांबे का रामसागर	10
43.	पीतल तांबे का लोटा	10
44.	पीतल तांबे का घड़ा	10
45.	पीतल तांबे का भगोना	10
46.	पीतल-तांबे का गिलास, थाली, कटोरी, चम्मच आदि	10
47.	पीतल तांबे का बाल्टी	10
48.	पीतल तांबे का स्टोव	15
49.	पीतल तांबे का तराजू	15
50.	पीतल तांबे का कप	15
51.	पीतल तांबे का चरास	15
52.	एल्यूमिनियम मग	6
53.	सनमाइका ट्रे	5
54.	बिजली के हीटर	5
55.	बिजली के स्टेबलाइजर	10
56.	बिजली की घंटी	2
57.	बिजली की ट्यूब लाइट	3
58.	दरी	15
59.	जूट कारपेट	5
60.	निवार	8
61.	तकिये	5

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

62.	गद्दे	5
63.	कुर्सी/मुढ्ढे की गद्दियाँ	5
64.	पर्दे	5
65.	मेजपोश सूती	3
66.	कम्बल	10
67.	बैड शीट्स	2
68.	डोर मेंट जूट	2
69.	तोलिये	6 माह
70.	राष्ट्रीय ध्वज	5 वर्ष
71.	गलीचा	15 वर्ष
72.	तकिये के कवर्स	1
73.	मेट्रोसेज (साधारण)	10
74.	मेट्रेसेज (फोम)	15
75.	जाजम	10
76.	मेजपोश गरम ब्लेजर	8
77.	मेज, रेक, आलमारी आदि (लकड़ी)	15
78.	कुर्सी, स्टूल, बैंच आदि	15
79.	पेपर रैक / बुक रैक आदि	15
80.	पलंग लकड़ी का	15
81.	सोफा सेट	20
82.	लकड़ी की संदूक	10
83.	लकड़ी के पार्टीशन	15
84.	पेपर टी-ट्रे (लकड़ी)	8
85.	टेलीफोन कैरियर बॉक्स	10
86.	लेटर बॉक्स	10
87.	पायदान लकड़ी का	5
88.	सुराही स्टेण्ड लकड़ी का	2
89.	नेम प्लेट	5
90.	बुडन बाथ बोर्ड	4
91.	वेस्ट पेपर बास्केट लकड़ी	10
92.	डेस्क	10
93.	इजी चेयर्स लकड़ी	10
94.	भगोना एल्यूमिनियम	6
95.	प्लेट एल्यूमिनियम	6
96.	लोटा	6 वर्ष
97.	ब्रीफकेस	6 वर्ष

2[Note :

(a) Articles to be destroyed without the permission of any committee:

Any article used in Treatment/Management of AIDS patient is to be destroyed immediately as soon as the patent leaves the Hospital.

(b) Articles to be destroyed with the permission of the committee at the local level :

Articles like linen, Mattresses, Bed-sheets, Towels, Pillow and Pillow covers having permanent stains of blood and pus and can not be removed on repeated washing or get torn, could be condemned, if the committee thinks that the articles can spread infection to other patients (cross infection) in the Hospitals."]

1[MINIMUM SERVICEABILITY PERIOD OF MOTOR VEHICLES :

PART-II

S. No.	Type of Vehicles	Minimum Kilometers of use	Minimum years of use
1.	Motor Cyelces and three-wheelers	1.20 lacs	7
2.	Light Motor Vehicles	2.00 lacs	8
3.	Medium Motor Vehicles	3.00 lacs	10
4.	Heavy Motor Vehicles	4.00 lacs	10
5.	Tractors and Bulldozers	20,000 Hours in operation	10

SR FORM-5
(See Rule 17(i))

REGISTER OF OBSOLETE AND UN-SERVICEABLE STORES

Office of the .....

Item No.	Particulars of stores	Reference of Stock Register	Brief particulars as to quality make etc.	Year of Purchase	Purchase Price
1	2	3	4	5	6

Circumstances under which rendered surplus, unserviceable obsolete	Present condition of store i.e. whether serviceable or unserviceable	Approximate cost expected to be realised	Any suggestion for disposal	Remarks
7	8	9	10	11

SR FORM-6
(See Rule 21(ii))

SURVEY REPORT

Office of the .....

Item No.	Particulars of stores	Quantity/ Weight	Book Value Original purchase price	Condition & year of purchase	Mode of disposal (sale, Public Auction or otherwise)	Orders of the authority for disposal.
1	2	3	4	5	6	7

Signature.....
Designation.....
Date.....

SR FORM-7
(See Rule 23(iii)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

SALE ACCOUNT

Office of the.....

Item No.	Particulars of stores	Quantity/ Weight	Name and full address of purchaser	Highest bid accepted	Highest bid rejected	E.M. realised on the spot
1	2	3	4	5	6	7

Date on which the complete amount is realised and credited into Treasury	Whether the article were actually handed over on the spot, if not, the actual date of handing over of the articles	Auctioner's Commission and acknowledgement for its payment	Remarks, if any
8	with quantities 9	10	11

Certified that the above entries have been checked with the survey report. Recommendation of the Committee.
Dated.....

Signature of the Officer Committee members who supervised the Auction.

SR FORM-8

(See clause 10 of Annexure 'A' to Rule 12 (3))

REGISTER OF SERIOUS IRREGULARITIES

S. No.	Reference of Inspection Report	Name of the Office	Date of Stock verification done by the Departmental Officer	Stock verification conducted by the Departmental officer under Rule 12(1) of GF&AR Part II or not	Result of physical verification of stock duly recorded in the Stock ledger or not	Other serious irregularities stating the amount involved	Initial of the section Incharge
1	2	3	4	5	6	7	8

माह : अक्टूबर, 2021	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.10.21	शुक्रवार	जयपुर	3	हिन्दी	6	आदमी का धर्म
02.10.21	शनिवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती (उत्सव) **No Bag Day**		
04.10.21	सोमवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	4	जलवायु ।।
05.10.21	मंगलवार	बीकानेर	11	राजनीति विज्ञान	7	राष्ट्रवाद
06.10.21	बुधवार	कोटा	7	सामाजिक विज्ञान	5	जल
08.10.21	शुक्रवार	जयपुर	6	हिन्दी	6	पार नजर के
09.10.21	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	**No Bag Day**		
11.10.21	सोमवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	3	कुछ खास हैं हम
12.10.21	मंगलवार	उदयपुर	12	राजनीति विज्ञान	2	दो ध्रुवीयता का अंत
14.10.21	गुरुवार	कोटा	10	हिन्दी	व्याकरण	विशेषण
16.10.21	शनिवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	**No Bag Day**		
18.10.21	सोमवार	जोधपुर	9	सामाजिक विज्ञान-भूगोल	3	अपवाह
20.10.21	बुधवार	उदयपुर	3	हिन्दी	10	काठ की पुतली
21.10.21	गुरुवार	जयपुर	6	हिन्दी	9	टिकट अलबम
22.10.21	शुक्रवार	बीकानेर	8	संस्कृत	7	भारत जनताऽहम्
23.10.21	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	**No Bag Day**		
25.10.21	सोमवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	23	हमारी विरासत
26.10.21	मंगलवार	जोधपुर	11	राजनीति विज्ञान	3	समानता
27.10.21	बुधवार	बीकानेर	10	हिन्दी	8	कन्यादान
28.10.21	गुरुवार	कोटा	11	अंग्रेजी अनिवार्य	Grammer	Determiners
29.10.21	शुक्रवार	उदयपुर	3	हिन्दी	4	समय सुबह का
30.10.21	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	**No Bag Day**		

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

● **(इन्द्रा सोनगरा)** प्रभारी अधिकारी शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, राजस्थान अजमेर
● कार्य दिवस-22 ● कुल प्रसारण दिवस अवकाश-09 ● पाठ्यक्रम आधारित-17 ● गैरपाठ्यक्रम-5

राज. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
(प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान अजमेर)

शिक्षावाणी माह अक्टूबर प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 01.10.2021 से 11.10.2021 तक)

प्रसारण समय–प्रातः 11.00 से 11.55 तक

क्र.स	दिनांक	वार	प्रारंभ से 15 मिनट		16 मिनट से 35 मिनट तक							36 मिनट से 55 मिनट तक						
			मीना की कहानियां	डाइट/यूनिसेफ	कक्षा	विषय पाठ्युस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	कक्षा	विषय पाठ्युस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
1	01.10.2021	शुक्रवार	फक्र की बात	यूनिसेफ	7	विज्ञान	6	भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन	जोधपुर	शमीम	संयुक्ता गुप्ता	11	राजनीति विज्ञान	5	अधिकार	जोधपुर	गजेन्द्र सिंह कुम्पावत	संयुक्ता गुप्ता
2	02.10.2021	शनिवार	नाटक की तैयारी	No bag day - बीकानेर 1. नारी शक्ति														
3	04.10.2021	सोमवार	स्कूल जैसा कोई नही	यूनिसेफ	7	गणित	5	रेखा व कोण	जयपुर	निधि शुक्ला	वर्तिका गुलाटी	11	राजनीति विज्ञान	8	स्थानीय शासन	जयपुर	संतोष यादव	विजयश्री कंवर
4	05.10.2021	मंगलवार	दर्द का राज	यूनिसेफ	8	हिन्दी	18	टोपी	कोटा	मुकेश आजाद	मंजेश चौरसिया	9	अंग्रेजी	5	The Snake and the mirror	कोटा	दीप्ति भार्गव	ऊषा पंवार
5	06.10.2021	बुधवार	सही चुनाव	यूनिसेफ	8	हिन्दी	7	क्या निराश हुआ जाऐ	उदयपुर	वीणा व्यास	डॉ0अंजली कोठारी	10	विज्ञान	7	नियंत्रण एवं समन्वयन	उदयपुर	सुरेश पंचाल	अनुराग मेड़तवाल
6	08.10.2021	शुक्रवार	दूर की बात	यूनिसेफ	8	विज्ञान	10	किशोरावस्था की ओर	बीकानेर	रजनी शर्मा	जितेन्द्र सिंह राठौड़	9	विज्ञान	9	बल तथा गति के नियम	बीकानेर	विनोद यादव	सुनीता
7	09.10.2021	शनिवार	फायदे का सौदा	No bag day -जयपुर 1– वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थी जीवन और तकनीकी– विश्वेन्द्र प्रताप 2– ऑनलाइन–ऑफलाइन शैक्षिक गतिविधि में समय प्रबन्धन–ऋषभ कुमार जैन														
8	11.10.2021	सोमवार	तन की शक्ति	यूनिसेफ	5	हिन्दी	5	दशहरा	जयपुर	कृष्णा शर्मा	संतोष मीणा	11	जीवविज्ञान	1	जीव जगत	जयपुर	सुजीत शर्मा	डॉ रश्मि गोगर

(इन्द्रा सोनगरा)

प्रभारी अधिकारी शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग–राज. अजमेर

Rajasthan Education Department

NAS- NATIONAL ACHIEVEMENT SURVEY

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण-2021

❒ रमेश कुमार हर्ष

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2001 से नियमित अंतराल पर 2001 से राष्ट्रीय स्तर पर 'राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण' का कार्य करवाया जा रहा है। RTE Act 2009 के अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष आयुवर्ग के बच्चों को शिक्षा का अधिकार प्रदान किया गया है। यह एक्ट बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने एवं सीखने को सुनिश्चित करने पर बल देता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को जाना जाए। 'राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण' का आयोजन इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। यह पूरे देश में नियमित अंतराल से आयोजित किया जाता है। यह सर्वेक्षण दक्षता आधारित सर्वे है तथा इसका मुख्य उद्देश्य शैक्षिक तंत्र की गुणवत्ता को उजागर करना है। गत NAS वर्ष 2017 में आयोजित किया गया था, जो कक्षा 3, 5 व 8 के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता के आकलन के लिए किया गया था। इस वर्ष यह सर्वेक्षण कक्षा-3, 5 व 8 के साथ-साथ कक्षा 10वीं के लिए भी किया जाएगा। यह सर्वेक्षण विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) पर आधारित होगा। इस वर्ष यह सर्वेक्षण (NAS-2021) किए जाने की संभावित तिथि 12 नवम्बर 2021 है।

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के मूल सिद्धांतों के अनुसार हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना है। नई शिक्षा नीति का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है कि बच्चे की अवधारणात्मक समझ के विकास पर जोर दिया जाए। ना कि परीक्षा परिणाम प्राप्त करने के लिए रटने की पद्धति से शिक्षा दी जाए। NAS-2021 में अच्छा परिणाम प्राप्त करने के प्रयासों से नई शिक्षा नीति के लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में सहयोग मिल सकेगा।

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण कार्य से निम्नलिखित अपेक्षाओं की पूर्ति की आशा की जाती है-

- शैक्षिक प्रक्रियाओं में गुणात्मक वृद्धि।
- कक्षा स्तरीय अधिगम गतिविधियों को सम्बलन।
- शिक्षकों का क्षमता संवर्द्धन।
- सीखने के दौरान अधिगम न्यूनता की पहचान करना।
- सीखने के प्रतिफलों (L.O.) की प्राप्ति।

आगामी सर्वेक्षण NAS-2021 की तैयारी हेतु निम्नांकित कार्य एवं गतिविधियाँ प्रभावी रूप से करनी होगी।

- शिक्षकों का NAS प्रश्न पैटर्न पर आमुखीकृत होना।
- सीखने के प्रतिफलों पर गहरी समझ बनाना और उन्हें पाठ्यपुस्तक और चैकलिस्ट संकेतकों के साथ संरक्षित करना।
- कक्षा मूल्यांकन प्रक्रिया (FA & SA) को देखना।
- छात्रों के अभ्यास के लिए नमूना मॉडल प्रश्न पत्र तैयार करना।
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर अधिक ध्यान देना।
- विद्यार्थियों के उपचारात्मक शिक्षण पर भी ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक।

NAS-2021 की तैयारियों हेतु विभिन्न स्तरों पर तैयारियाँ की गई है तथा समय-समय पर दिशा निर्देश व आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई जा रही है। RSCERT, उदयपुर द्वारा एक उपचारात्मक शिक्षण लर्निंग पैकेज विकसित किया जा रहा है। जिला स्तर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को नोडल अधिकारी और प्राचार्य डाइट को जिले का संयोजक नियुक्त किया गया है।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों से अपेक्षा की गई है कि ब्लॉक स्तर पर PEEOs की संवेदीकरण कार्यशालाएँ आयोजित करते हुए ब्लॉक के लिए एक प्रभावी कार्य योजना बनाए तथा उसकी क्रियान्विति कराए। सीखने के प्रतिफलों से संबंधित शिक्षकों के लिए स्कूल स्तर पर की जाने वाली गतिविधियों का वियोजन करें। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने तैयारियों की जानकारी प्राचार्य, डाइट और मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी के साथ नियमित रूप से साझा करते रहें।

आगामी 'राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण-2021' में समस्त राजकीय, गैर राजकीय, केन्द्रीय व अनुदानित विद्यालय सम्मिलित किए गए हैं, जिनमें कक्षा 3, 5, 8 व 10वीं के भाषा, गणित, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन और सामाजिक विज्ञान को लिया गया है। कक्षा 3 व 5 में तीन विषय कक्षा 8 में चार विषय और कक्षा 10 में पाँच विषयों हेतु यह मूल्यांकन किया जाएगा।

NAS-2021 की तैयारियों हेतु सामग्री की उपलब्धता निम्नानुसार है-

क्र. सं.	सामग्री	उपलब्धता
1.	Lo Booklet Class 1-8	NCERT वेबसाइट (www.ncert.nic.in)
2.	Lo Booklet Class9-10	NCERT वेबसाइट (www.ncert.nic.in)
3.	Check list indi cation (Class1-5)	शालादर्पण (SIQE Section) एवं विद्यालय स्तर पर
4.	Question Bank (Class 3, 5 & 8)	PEEOs स्तर एवं शाला दर्पण के सिटीजन विंडो पर
5.	Text Book Class 1-12	विद्यालय स्तर पर
6.	Work Books (साथी सीख, समर्थ) एवं (पहल, प्रयास, प्रवाह, प्रखर)	विद्यालय स्तर पर

Google drive link-

1. https://drive.google.com/drive/folders/1b2ge60BEA-pf p9euhktxPqotmrf DMO9? usp= Sharing
2. Hrrpa://bir.ly/ RAJ NAS MATERIAL

LO Booklets-NCERT (कक्षा 1 से 10) वेबसाइट www.ncert.nic.in एवं RSCERT की वेबसाइट (कक्षा 1 से 5 एवं 6-8) पर उपलब्ध।

Rajasthan Education Department

विद्यार्थियों की समझ को विकसित करने की दृष्टि से NAS-2021 की तैयारियों हेतु महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। गत NAS-2021 में राजस्थान राज्य पूरे देश में दूसरे स्थान पर रहा था। ऐसे में स्वाभाविक है कि हमारे समग्र प्रयास एक नम्बर पर आने अथवा अपनी पूर्व स्थिति को बरकरार रखने के होने चाहिए। शिक्षकों से आशा की जाती है कि वे LO को भली भाँति पहचानें, उनसे सम्बन्धित अधिक से अधिक प्रश्न-बैंक तैयार करें, प्राप्त करें और उनका खूब अभ्यास करावें। संस्थाप्रधान और PEEOs शिक्षकों का पूरा सहयोग और मार्गदर्शन करावें। आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाकर सुनिश्चित करें तथा अपनी समस्त तैयारियों और कार्य योजनाओं से सम्बन्धित CBEOs को अवगत करावें। विद्यालय स्तर/ PEEO स्तर पर शिक्षकों का संवेदीकरण करें। वे नियमित रूप से इन तैयारियों की समीक्षा शिक्षकों के साथ बैठक कर लेवें।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अपने-अपने ब्लॉक के PEEOs के साथ आमुखीकरण कार्यशाला करेंगे। वे PEEOs के साथ अपने ब्लॉक की एक कार्य योजना तैयार करेंगे। कार्ययोजना की क्रियान्विति की नियमित समीक्षा की जाएगी। वे अपने ब्लॉक में हुई समस्त गतिविधियों, PEEOs/ संस्थाप्रधानों से प्राप्त प्रतिवेदनों को CDEO तथा Principal DIET को भिजवाएंगे। CDEO स्तर पर भी इसकी नियमित समीक्षा की जानी अपेक्षित है।

इस सर्वेक्षण हेतु राजस्थान के समस्त विद्यालयों में से कुछ विद्यालयों का चयन किया जाएगा। यह सर्वेक्षण कार्य एम.एड. तथा डी.एल.एड. के छात्राध्यापकों के माध्यम से किया जाएगा। इसे हेतु इन्हें FI (फील्ड इन्वेस्टीगेटर) लगाया जाएगा। समस्त शिक्षकों और PEEOs से आशा की जाती है कि सर्वेक्षण कार्य में इन FI का पूरा सहयोग करें।

NAS-2021 में सर्वेक्षण कार्य में संस्थाप्रधान, शिक्षकों और विद्यार्थियों को OMR Sheet भी भरनी होती है। छोटे बच्चों के लिए यह कार्य बिना अभ्यास कराए ठीक से कर पाना जटिल होगा। NCERT की अधिकृत वेबसाइट पर सभी के लिए निर्धारित OMR Sheet का नमूना उपलब्ध है। OMR Sheet के नमूनों के प्रिंट लेकर संस्थाप्रधान, शिक्षक स्वयं एक बार उनके कॉलम्स व सूचनाओं को भली भाँति पढ़ व समझ लें। विद्यार्थियों को भी इन सूचनाओं को समझा दें तथा गोलों को भरने के सही तरीके का अभ्यास भी करवा दें, गलत रूप से OMR Sheet भरने के कारण कोई उत्तर स्केन होने से रह नहीं जाए अथवा गोले को अधिक फैला कर काला करने से दो विकल्प पढ़े जाने की स्थिति उत्पन्न नहीं हो। विद्यार्थी द्वारा सही उत्तर की जानकारी होने के बावजूद इस असावधानी के कारण विद्यार्थी/विद्यालय का मूल्यांकन कमतर नहीं हो।

राजस्थान राज्य इस बार भी अपनी उत्कृष्ट स्थिति बरकरार अथवा और भी अधिक अच्छा प्रदर्शन करेगा। इसकी आशा है और यह हमारे सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।

प्राचार्य
डाइट, बीकानेर (राज.)
मो. 9414004164

गिफ्ट ए बुक : शिविरा की नवाचारी पहल

आदरणीय निदेशक महोदय के कुशल व संवेदनशील नेतृत्व में शिविरा की नवाचारी एवं प्रोत्साहनकारी पहल की श्रृंखला में 'गिफ्ट ए बुक' नवाचार का शुभारंभ किया जा रहा है जिसके तहत समसा द्वारा प्रतिमाह विभिन्न कार्य निष्पादन प्रतिमानों के आधार पर जिलों की परफोरमेन्स आधारित रेंकिंग में जो जिला प्रदेश भर में प्रथम रहेगा उस जिले के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समसा; जिले में प्रथम स्थान प्राप्त ब्लॉक के मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी तथा साथ ही संबंधित ब्लॉक परिक्षेत्र का वह विद्यालय जो ब्लॉक में प्रथम रहा हो (जिसका प्रमाणीकरण मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा किया गया हो) उस विद्यालय के संस्थाप्रधान को शिविरा पत्रिका में प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली विभिन्न शैक्षिक, साहित्यिक, बालोपयोगी व ज्ञानवर्द्धक समीक्षित पुस्तकों की एक-एक प्रति उक्त नेतृत्वकर्त्ताओं को श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए सम्मान स्वरूप भेंट की जाएगी। जिन्हें संबंधित अधिकारीगण स्वयं पठनोपरांत अपने कार्यालय या विद्यालय के पुस्तकालय में शिक्षकों, कार्मिकों व छात्र-छात्राओं के पठनार्थ उपलब्ध करवाएंगे ताकि पठन-पाठन की प्रवृत्ति का विकास हो सके।

-वरिष्ठ सम्पादक

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

शिविरा पत्रिका में आगामी माह से 'मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!' के नाम से स्थायी स्तंभ का प्रारंभ किया जा रहा है, जिसमें शिक्षक स्वयं रिपोर्टर की भूमिका में होंगे जो अपने कार्यरत विद्यालय के नवाचार, उत्कृष्ट शैक्षणिक-सह शैक्षणिक गतिविधियों, भामाशाहों-दानदाताओं के सहयोग से विद्यालय के संस्थागत विकास, पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन के अनुपम कार्यों तथा विद्यालय स्टाफ के ऐसे अभिनव कार्य जो प्रेरकीय-अनुकरणीय हो, की रिपोर्ट मुद्रित अथवा सुपाठ्य हस्तलिपि में मय फोटोग्राफ्स संस्थाप्रधान से प्रमाणित करवाकर स्वयं के नाम, पद, कार्यरत विद्यालय का नाम मय मोबाइल नम्बर शिविरा पत्रिका के ई-मेल shivira.dse@rajasthan.gov.in अथवा वरिष्ठ संपादक, शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011 के पते पर भिजवाएँ ताकि शिविरा पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित की जा सके।

-वरिष्ठ सम्पादक

शौक्षिक चिंतन

शिक्षक एक परामर्शदाता

❒ डॉ. रविबाला सोलंकी

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इस व्यापक उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षक विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करता है। आज का बालक कल के राष्ट्र की धरोहर है। शिक्षक का दायित्व है कि बालक की समस्त ऊर्जा का उपयोग कर उसकी प्रतिभा में निखार लाए। साथ ही बालक की आत्मा का शिल्पी बने तथा सृजनरूपी हथियार द्वारा बालक की ऐसी मूर्ति बनाए जो संसार में शिक्षक, माता-पिता एवं राष्ट्र का नाम रोशन करे। शिक्षक बालक का मित्र, संरक्षक, आदर्श, परामर्शदाता, सहयोगी और भी न जाने कितनी भूमिकाओं का निर्वहन वह समय-समय पर करता है। जिससे बालक प्रेरित होकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। ऐसा ही उदाहरण हाल ही में देखने को मिला। महाराष्ट्र के पैरा स्विमर सुयश नारायण जाधव पैराओलंपिक के लिए क्वालिफाई करने वाले पहले भारंतीय तैराक बने। यह संभव हुआ शिक्षक की सलाह से, जिससे उनकी पूरी जिन्दगी ही बदल गई। सुयश ने 11 वर्ष की उम्र में दुर्घटना की वहज से हाथ गँवा दिए थे। एक दिन टेस्ट में उन्हें 40 में से 36 अंक मिले। शिक्षक ने किस कारण अंक कम दिए, उन्हें स्पष्ट किया। लेकिन उन्होंने शिक्षक से कहा आपको मेरी हालत देखकर पूरे अंक देने चाहिए। तब शिक्षक ने उन्हें समझाया कि हमदर्दी के कारण अभी आपको अंक दे देंगे तो आप हमेशा ऐसी ही उम्मीद करेंगे, जो कि सही नहीं है। इसके बाद उन्होनें खुद पर मेहनत करना शुरू किया जिससे पढ़ाई में अव्वल रहे ही साथ ही आगे चलकर पैरा ओलंपिक के लिए भी क्वालिफाई किया।

एक सफल शिक्षक वही है जिसे अपनी विषयवस्तु पर जो उसे पढ़ानी हैं, पर स्वामित्व हो, उसका पूरा ज्ञान हो। तभी वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो सकता है। शिक्षक आत्म ज्ञान, आत्मनिर्देशन तथा ज्ञान का भण्डार होता है। वह विभिन्न क्रियाकलापों व व्याख्यानों के द्वारा बालकों तक ज्ञान का हस्तान्तरण करता है। शिक्षक का महत्त्वपूर्ण कार्य है कि वह बालकों की सहानुभूतिपूर्ण सहायता करके उनका उचित दिशा में मार्गदर्शन करे।

शिक्षक को मनोविज्ञान के अतिरिक्त समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, समाज कार्य का भी आधारभूत ज्ञान होना चाहिए। शिक्षक वाकई में इन मापदंडों पर खरे उतरते हैं, क्योंकि वे उपर्युक्त कौशलों में निपुण होते हैं। एक कक्षा में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थी होते हैं, जो विभिन्न परिवारों से आते हैं जिनका सामाजिक-आर्थिक स्तर भिन्न-भिन्न होता है, परिवार का शैक्षिक स्तर भिन्न होता है। कक्षा के सभी विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य भी एक जैसा नहीं होता। कक्षा में नियमित रूप से उपस्थिति दर्ज कराने वाले विद्यार्थी या शारीरिक रूप से दिव्यांग बालक या अन्य कोई मानसिक, स्वास्थ्य से सम्बन्धी कोई परेशानी है, तब शिक्षक का दायित्व एक परामर्शदाता के रूप में उभर कर आता है।

शिक्षक द्वारा छात्र परामर्श के प्रयोजन निम्न हो सकते हैं-

1. विद्यार्थी को उसकी सफलता के महत्त्व के विषयों की जानकारी देना।
2. विद्यार्थी के बारे में वे सूचनाएँ प्राप्त करना जो उसकी समस्याओं के समाधान में सहायक हो।
3. विद्यार्थी और अध्यापक के बीच पारस्परिक समझ की भावना स्थापित करना।
4. विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक।
5. विद्यार्थियों के व्यवहार में सुधार लाने में सहायक।
6. विद्यार्थी की अपनी कठिनाईयों को हल करने की योजना बनाने में सहायक होना।
7. विद्यार्थी का अपनी रुचियों, योग्यताओं, झुकावों तथा अवसरों इत्यादि को समझकर अपने को अधिक अच्छी तरह जानने में सहायता करना।
8. विद्यार्थी को सामाजिक वातावरण के अनुसार ढालने में सहायता करना।
9. विद्यार्थी को स्वयं निर्णय लेने में सक्षम बनाना।
10. शैक्षिक प्रगति के लिए समुचित प्रयास करने की प्रेरणा देना।
11. शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन की योजना बनाने में छात्र की सहायता करना।
12. विशेष योग्यताओं तथा सही दृष्टिकोणों को प्रोत्साहित एवं विकसित करना।

परामर्श पारस्परिक रूप से सीखने की प्रक्रिया है, जिसमें दो व्यक्ति सम्मिलित होते हैं- एक जिसे परामर्श की आवश्यकता है (विद्यार्थी या उपबोध्य)तथा दूसरा परामर्शदाता (शिक्षक)

एक शिक्षक जब परामर्शदाता की भूमिका का निर्वहन करता है तब उत्तम आधारभूत बुद्धि, शैक्षिक योग्यता, शिक्षण अनुभव, गहन विशिष्ट जानकारी, पारस्परिक सम्बन्ध की भावना, विशेष वैयक्तिक गुण, कार्य अनुभव, नेतृत्व जैसे गुणों से परिपूर्ण हो अपने दायित्व की ओर अग्रसर होता है। शिक्षक विद्यार्थी से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित करने के लिए उसके सहपाठी, अन्य मित्र, माता-पिता, रिश्तेदार, अन्य शिक्षक आदि से विचार विमर्श करता है। यह गोपनीय विचार विमर्श इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि विद्यार्थी की समस्या का समाधान प्रभावपूर्ण ढंग से हो सके।

परामर्श प्रक्रिया में निम्न पद सम्मिलित होते हैं-

1. **विश्लेषण-** यह वह प्रक्रिया है जिससे तथ्यों का संकलन किया जाता है ताकि विद्यार्थी का अध्ययन किया जा सके।
2. **संश्लेषण-** इस पद में एकत्र की गई जानकारी को संगठित किया जाता है।
3. **निदान-** इस पद में समस्या के कारणों के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है।
4. **पूर्व अनुमान-** निदान के उपयोग के बारे में कथन देने को पूर्व अनुमान कहते हैं।
5. **परामर्श-** परामर्शदाता और विद्यार्थी द्वारा समायोजन के लिए उठाए गए कदमों को इस पद में रखा गया है।
6. **अनुवर्तन-** परामर्श की प्रक्रिया की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने या नई समस्याओं के हल में विद्यार्थी की सहायता

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

करने के प्रयास इस पद में सम्मिलित रहते हैं।

शिक्षक विद्यार्थी के मध्य चलने वाली परमर्श की क्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा निम्न तकनीकी अपनाई जाती है–

1. प्रश्न करना
2. पुनर्बलन/प्रतिपुष्टि अथवा प्रशंसा
3. आलोचना
4. व्याख्या
5. सलाह एवं सुझाव
6. सहमति
7. परिचय अर्थात् विद्यार्थी के अनुभवों को सहमति प्रदान करना।

अत: शिक्षक एक ज्ञान प्रदाता, सुविधा प्रदाता, सामाजिक परिवर्तनकर्त्ता, चिन्तनशील व्यवसायी जैसी महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं का निवर्हन तो करता ही है लेकिन उससे भी ज्यादा अति महत्त्वपूर्ण भिन्न भूमिका में अपने दायित्व का निर्वहन सफलतापूर्वक करता है – वह है परामर्शदाता के रूप में। इसके लिए उपबोध्य (विद्यार्थी) के स्वभाव, उसकी समस्याओं, उसके अभिप्रेरण, उसकी आत्म-प्रतिमा एवं सामाजिक प्रतिमा जैसे आधारभूत तत्वों पर विचार करता है।

जब कभी किसी विद्यार्थी के समक्ष कोई समस्या आती है, चाहे शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक या व्यक्तिगत हो उसके समाधान के लिए शिक्षक उचित उपायों व अनुक्रियाओं को अपनाने में विद्यार्थी की सहायता करता है। शिक्षक उपबोध्य (विद्यार्थी) के प्रेरकों (Motives) को समझने में मदद करता है। जिससे वह स्वयं समाधान करने योग्य बन सके और परिपक्वता की ओर उन्मुख हो सके। इसलिए शिक्षक आदिकाल से पूजनीय रहा है और रहेगा।

हाल ही में हम सभी कोविड-19 की दूसरी लहर से उबर कर आए हैं। विद्यार्थी परिवार में घटित विभिन्न समस्याएँ जो कि स्वास्थ्य संबंधी, आर्थिक, मानसिक, सामाजिक हो सकती है, तब शिक्षक का एक परामर्शदाता के रूप में भूमिका का महत्त्व और बढ़ गया है।

प्राचार्या
तिलक टीचर ट्रेनिंग कॉलेज (फॉर वुमन)
जयपुर (राज.)
मो: 9460150387

कालीबाई एवं नाना भाई खांट

जो शिक्षा के लिए शहीद हो गए

❐ **ओमप्रकाश सारस्वत**

देश को स्वतंत्र हुए पहचत्तर वर्ष होने को है। स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर देश में 75 सप्ताह तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। यह उत्सव नहीं महा उत्सव होगा। अतः इसका नाम आजादी का अमृत महोत्सव (महा+उत्सव) रखा गया है। विगत सात दशकों में निसंदेह शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के समय भारत एवं राजस्थान की साक्षरता दर क्रमशः 16.10% एवं 5.46% थी जो वर्तमान में बढ़कर क्रमशः 74.04% एवं 66.11% हो गई है। आजादी के अमृत महोत्सव के इस मुबारक अवसर पर शिक्षा हितैषी उन दीवानों को स्मरण करना एवं उन्हें सम्मान देना आवश्यक है जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए शिक्षा की मशाल को जलाया एवं थामे रखा। शिक्षा को जागृति का बीज मंत्र मानने वाले इन सत्ताधीशों को लगता था कि पढ़-लिखकर जनता अपने हक-हकूकात की बात करने लगेगी और इससे उनकी राजशाही खतरे में पड़ जाएगी। इस वजह से वे स्वयं की ओर से तो शिक्षा की कोई उचित व्यवस्था नहीं करते और कतिपय जागरूक सामाजिक कार्यकर्ताओं, दानवीरों के द्वारा ऐसे प्रयास करने पर उसको हतोत्साहित कर ऐसा नहीं करने के लिए विवश करते। उनकी अवज्ञा करने वालों पर अमानवीय अत्याचार करते जिसके परिणामस्वरूप सम्बन्धित की दर्दनाक असमय मृत्यु तक हो जाती।

ऐसा ही एक किस्सा अब से 74 वर्ष पूर्व आजादी प्राप्त करने के महज 2 माह पूर्व 19 जून 1947 का है जब तीन शिक्षा हितैषी शिक्षा दिलाने, शिक्षा देने और शिक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्तियों को अपने प्राण न्यौछावर करने पड़े थे। राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में रास्तापाल कांड के नाम से जाना जाने वाला यह शर्मनाक वृत्तांत मानवता के माथे पर काले टीके जैसा ही है। शिक्षा के लिए स्कूल खोलने वाले सामाजिक कार्यकर्त्ता, पढ़ाने वाले शिक्षक एवं पढ़ने वाली एक छोटी बालिका (The Student) इन तीन की निर्मम हत्या रोंगेटे खड़े कर देने वाली घटना है। एक तरफ राज्याज्ञा की 'स्कूल नहीं चलेगी' तो दूसरी तरफ सच्चा संकल्प कि 'स्कूल चलेगी' एक तरफ 'राजा' तो दूसरी तरफ 'प्रजा' के अदने से प्रतिनिधि जिद्द और साहसपूर्ण संकल्प का नतीजा तीन बलिदान। आज दिखाई देने वाला शिक्षा का भवन शहादत की ऐसी ही नींव पर टिका है।

डूंगरपुर के रास्तापाल गाँव में एक शिक्षा प्रेमी समाज सुधारक नाना भाई खांट ने अपने घर में स्थान देकर एक विद्यालय स्थापित किया जिसमें सेंगाभाई शिक्षक बने। दोनों समाज सुधारक एवं सच्चे संकल्प वाले पुरुष थे। भील बालकों के लिए संचालित इस स्कूल की सूचना जब महारावल को मिली तो वे आग बबूला हो गए। रियासत में चल रहे 'पाठशाला बंद करो अभियान' के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए कि वे जाकर तुरंत स्कूल बंद करवाए। शिक्षा रूपी दुश्मन से लड़ने के लिए निकल पड़े महारावल के सिपाही एवं अफसर। कितना विचित्र लग रहा है। शिक्षा व स्कूलों से युद्ध। लेकिन यह सच है और राजा-महाराजाओं के अत्याचारों की श्रृंखला में इतिहास में सुरक्षित है। आज चल रहे 'स्कूल खोलो' अभियान के विपरीत 'स्कूल बंद करो' अभियान तब चल रहे थे।

मेहनतकश भोले भाले भीलों के गाँव रास्तापाल में सब कुछ आम दिनों की तरह था। किसान खेतों में काम कर रहे थे। नानाजी खांट के घर में मास्टर जी सेंगा भाई बच्चों को पढ़ाने के लिए हाजिर थे। अचानक एक जीप स्कूल के आगे आकर रुकती है। जीप से मजिस्ट्रेट एवं

Rajasthan Education Department

पुलिस कप्तान (SP) एवं अन्य सिपाही उतरते हैं। उस समय नाना भाई खांट एवं सेंगाभाई स्कूल एवं शिक्षा की बेहतरी के लिए चर्चा कर रहे हैं।

'किसके हुकुम से यह स्कूल चला रखा है? पता नहीं है आदेश का? तुरंत स्कूल बंद करो तथा ताला मारकर चाबी मुझे दो।' मजिस्ट्रेट चिल्लाया।

सब तरफ सन्नाटा। आसपास के ग्रामीण अपने घरों में दुबक गए। छोटे-छोटे बच्चे सहम गए। उनकी आँखों में भय तैरने लगा। सब इधर-उधर सिमट गए। नाना भाई एवं सेंगा भाई शांत रहे। कुछ नहीं बोले।

'सुना नहीं तुमने... क्या कहा मजिस्ट्रेट साब ने? तुरंत बंद करो इस अखाड़े को, नहीं तो इसे देखा ही है।' हाथ में रही बंदूक को लहराते हुए पुलिस कप्तान ने घुड़की दी।

'नहीं..नहीं बंद होगा यह स्कूल। हम आपसे क्या चाह रहे हैं? बच्चों को दो आंक सिखा ही तो रहे हैं।' नाना भाई ने विनयपूर्वक कहा। शिक्षक सेंगवाजी ने भी ऐसा ही निवेदन किया। मजिस्ट्रेट ने गुस्से में कहा कि वे आदेश लेकर आए हैं। उसने यह कहकर आदेश उन्हें दिखाया। इस पर नानाजी ने कहा कि वे इस आदेश को नहीं मानते। यहाँ तो भोगीलाल जी पंड्या का आदेश चलता है। आप उनसे बात करो। उनकी स्थितप्रज्ञता देखने लायक थी। वे संकल्पनिष्ठ थे।

गुस्से में तिलमिलाए मजिस्ट्रेट ने राज्याज्ञा की अवहेलना करने वाले नाना भाई एवं सेंगा भाई को सबक सिखाने का आदेश दिया। फिर क्या था पुलिस कप्तान एवं उसके सिपाही शिक्षा के इन सिपाहियों (नाना भाई खांट एवं सेंगा भाई) को निर्ममतापूर्वक पीटने लगे। बंदूक के कुन्दों से मार-मार कर अधमरा कर दिया। ' न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी' की तर्ज पर इन आततायियों ने शिक्षक सेंगा भाई को रस्सी से बांध कर पुलिस के ट्रक के पीछे लटका दिया। ट्रक के पीछे घसीटते ग्राम गुरुजी (Techer of the village) को देखकर नाना भाई उन्हें छुड़ाने के लिए बार-बार दौड़कर आते। घायल तो वे थे ही। पुलिस के सिपाही उन पर बंदूकों के कुंदों से प्रहार करते। बेथाह मार से नानाभाई के प्राण पखेरू उड़ गए। एक शिक्षा प्रेमी शिक्षा के लिए प्राण उत्सर्ग कर गया। जो पाठशाला उन्होंने खोली थी, उसी के आगे यह शिक्षा सपूत हमेशा-हमेशा के लिए चला गया। अमर हो गए नाना भाई।

ट्रक के पीछे घसीटते, लहुलूहान हुए शिक्षक सेंगाभाई को गाँव के लोग देख रहे थे। सब असहाय थे। राज के लोग बंदूकें ताने खड़े थे। शिक्षा से लड़ रहे सिपाहियों के लिए सब कुछ जायज था। इसी दौरान एक बारह-तेरह वर्ष की बालिका काली बाई खेत से घास काट कर आ रही थी। ट्रक के पीछे जब उसने अपने गुरुजी को बंधा देख तो वह दुर्गा, साक्षात चण्डी बनकर चिल्लाई, 'छोड़ दो मेरे गुरुजी को, इन्हें छोड़ दीजिए, ऐसा मत कीजिए।' वह ट्रक के पीछे भागती रही। मगर कौन सुनता उसकी बात को। एक छोटी सी बालिका के क्रंदन से वातावरण व्यथित हो गया। उसके हाथ में घास काटने वाला हंसिया था। हाथ में हंसिया खंजर की तरह लग रहा था। आखिर ट्रक को रोकना पड़ा। सिपाही बंदूकें लहराते हुए काली से बोले, 'हट जाओ, वरना गोली मार दी जाएगी।'

सिपाहियों की चेतावनी की तनिक भी परवाह नहीं करते हुए बालिका काली बाई ने हंसिये के एक ही वार से सेंगा भाई के बंधन काट दिए। सेंगा भाई लुढ़क कर एक तरफ गिर गए। उन्होंने धीरे से पानी मांगा। बालिका ने जोर से चिल्लाकर पानी लाने के लिए कहा। सिपाहियों ने एक छोटी से बालिका पर गोलियों की बौछार कर उसका काम तमाम कर दिया। जरा भी रहम और शर्म नहीं आई इन हत्यारों को। अपने गाँव की शिक्षा एवं अपने शिक्षक के लिए हँसते-हँसते बलिदान हेतु स्वयं को प्रस्तुत कर दिया बालिका काली बाई ने। राजा-महाराजाओं के नाम पर किस्से हैं लेकिन शिक्षा के पवित्र उद्देश्य के लिए एक छोटी बालिका की यह बलिदान गाथा सर्वोपरि है।

कालीबाई पर गोली प्रहार करते ही सिपाहियों की उल्टी गिनती प्रारंभ हो गई। भीलों ने खतरे के समय बजाया जाने वाला ढोल बजा दिया। सैंकड़ों भील हथियार लेकर रास्तापाल आ गए। राज के चाकर अपनी जान सांसत में जान वहाँ से भाग छूटे। भीलों ने नाना भाई खांट के मृत शरीर तथा बुरी तरह से घायल काली बाई को चारपाई पर रखकर उठाया तथा डूंगरपुर की तरफ चल पड़े। आग की तरह सब जगह पहुँच गई यह खबर। रास्ते में लोग जुड़ते गए। हजारों भीलों का यह भीमकाय काफिला लगभग 30 मील चलकर डूँगरपुर पहुँचा। काली बाई को अस्पताल लेकर गए जहाँ लम्बी बेहोशी में ही अगले दिन हमेशा-हमेशा के लिए हमसे दूर चली गई। अपने गाँव में ग्रामीण भाई-बहिनों की शिक्षा एवं गुरुजी के लिए प्राण देने वाली बालिका काली को आधुनिक दौर का एकलव्य कहा जाता है। कालीबाई को साक्षरता की देवी (Goddess of Library) कहकर भी मान दिया जाता है।

वीर शहीद काली बाई का नाम अमर है। उनका पेनोरमा गाँव मांडवा खापरड़ा में है जहाँ शहीद नाना भाई खांट एवं सेंगाभाई की प्रतिमाएं भी लगी हैं। डूंगरपुर में बहुत सुन्दर नाना भाई पार्क नगर परिषद् द्वारा विकसित किया गया है। डूंगरपुर जिले में स्थित जनजातीय बालक छात्रावासों का नामकरण नाना भाई खांट एवं जनजातीय बालिका छात्रावासों का नामकरण कालीबाई के नाम पर किया गया है। शिक्षा सम्बन्धी कई अन्य योजनाएं भी इन महात्माओं के नाम से संचालित की जा रही हैं।

एक पढ़ने वाली बालिका काली बाई एक पढ़ाने वाले गुरुजी सेंगाभाई एवं एक पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था करने वाले समाज सुधारक नाना भाई, एक साथ इन तीनों की शहादत राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में स्वर्ण अक्षर मंडित है। शिक्षा के हित में कुछ करने की चाह रखने वालों को राह दिखाने के लिए इससे बड़ा दृष्टांत कोई और हो नहीं सकता। ये शिक्षा के तीर्थ हैं। इनसे शिक्षा लेकर शिक्षा के पावन पथ पर चलने का संकल्प हमें लेना चाहिए।

संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेवजी रोड,
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401
मो: 9414060038

Rajasthan Education Department

पर्यावरण संरक्षण

सुखी-स्वस्थ जीवन का आधार

❒ हरपाल सिंह चौधरी

हम सभी जानते हैं कि जीवन के लिए पर्यावरण का होना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है लेकिन आज के इस भौतिकवादी युग में मानव अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण को आए दिन प्रदूषित करता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि होने से मानव रहने के लिए मकानों और कारखानों का निर्माण आदि के लिए जंगलों से वन काट रहे हैं। इस धरती पर ऐसे ही पेड़ पौधे खत्म होते रहे, तो आने वाला कल सभी जीवों के लिए घातक होगा। इस प्रकृति के प्राणियों में श्रेष्ठ जीव मानव है। मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अन्य सभी जीवो के बारे में सोच सकता है। मानव को यह चिंतन करना होगा कि हम इस प्रकृति को कम से कम प्रदूषित करें।

प्राचीन काल में मनुष्य अपने चारों ओर की सुंदर प्रकृति को सहेज कर रखता था, मनुष्य का जीवन बहुत ही सीधा-साधा और सरल था। वह अपनी पूरी मेहनत और लगन से काम करता और साथ ही अपने आस-पास पेड़ पौधों की देखभाल भी पूरी लगन से करता था। उसके चारों ओर एक सुंदर और स्वस्थ वातावरण रहता था। धीरे-धीरे उसके जीवन में परिवर्तन आया और अपने कठिन परिश्रम से मनुष्य ने अपने जीवन में प्रगति की साथ ही उसका रहन सहन ओर बेहतर होने लगा। धीरे-धीरे समय बदला और मनुष्य ने अपने जीवन में नए- नए आविष्कारों से न जाने कितनी उपलब्धियाँ हासिल कर ली, गगनचुंबी इमारतें खड़ी कर बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ आदि बना ली और उपलब्धियों के साथ, जाने और अनजाने में वह प्रकृति के साथ छेड़छाड़ भी करता गया और प्रकृति को नुकसान पहुँचा जिसका उसे अहसास तक नहीं है। आज हम देखते हैं कि पहले जिस प्रकार वन उपवन आदि से चारों ओर एक प्राकृतिक सौंदर्य दिखाई देता था।

आज लोग उसी प्रकृति को नष्ट करते जा रहे हैं। हर जगह जहाँ पर भी घने वृक्ष आदि है उन्हें काटकर वहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई जा रही है घने जंगलों को काट कर फैक्ट्रियाँ आदि बन रही है। इसका हानिकारक प्रभाव मनुष्य के जीवन पर ही पड़ रहा है वह अनभिज्ञ है या फिर समझना नहीं चाहता। यदि मानव से अनजाने में (विशेष परिस्थितियों) पेड़ कट जाता है तो मानव को उसी वक्त ही संकल्प लेकर एक पेड़ की एवज में दो पौधे लगाकर उन्हें पेड़ बनाने का प्रयास करें और साथ ही हम सभी मिलकर पेड़ पौधों का महत्त्व बताते हुए लोगों को पेड़ काटने से मना करना होगा।

इसी प्रकार यातायात के साधनों से जो प्रदूषण फैल रहा है, वह भी एक चिंता का विषय बन चुका है। लोगों के स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा है, लोग श्वास संबंधी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। पर्यावरण दूषित होने के कारण ही पृथ्वी पर रह रहे सभी जीवों के लिए बड़ा खतरा बन रहा है। यही वजह है कि कई जीव जंतु विलुप्त हो रहे हैं। आजकल ज्यादातर घरों, ऑफिसों और कारों में एयर कंडीशनर लगे हुए हैं, जिनका अधिक इस्तेमाल करने से बाहर का तापमान बढ़ता जा रहा है। हम समाचार-पत्रों में पढ़ते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है जिससे पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है, जिसके फलस्वरूप ग्लेशियर पिघल रहे हैं। ये सब समस्याएँ पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने का कारण है। पर्यावरण देश, प्रदेश की ही समस्या नहीं है, यह पूरी दुनिया की समस्या बन गई है। मानव को इस विषय पर गंभीर रूप से विचार करना होगा कि प्रकृति से खिलवाड़ नहीं करना है और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखना है। हमें यह जागरूकता लानी ही होगी कि अपने आसपास जहाँ संभव हो वृक्षारोपण करें, ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाएँ। हम अपने बच्चों का जन्मदिन बहुत प्यार से मनाते हैं, पार्टी करते हैं, उनके दोस्तों को बुलाते हैं, हमारे बच्चे खुश भी हो जाते हैं। कितनी बार तो माता- पिता पैसा भी खर्च करते हैं। हमारा भी यही मानना है कि हम जन्मदिन मनाएँ, लेकिन कभी-कभी हम कुछ अलग कर सकते हैं- जैसे बच्चों के जन्मदिन पर उनके हाथों से एक पौधा लगवा सकते हैं और अपनी प्रकृति की महत्ता को समझ सकते हैं, अपने हाथों से एक पौधा लगाकर बच्चे को बहुत खुशी तो होगी ही, साथ ही वह उस पौधे की देखभाल भी बहुत प्यार से करेगा और धीरे-धीरे वह पेड़ पौधों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है को समझ सकेगा।

हमें साफ-सफाई का भी बहुत ध्यान रखना चाहिए। जहाँ-जहाँ हो सके, हमें अपने आसपास सफाई रखनी चाहिए। कई लोग इस ओर जरा भी ध्यान नहीं देते, जहाँ मन आया कचरा फेंक देते हैं। फिर चाहे वह सड़क हो या उनके घर के आस-पास की जगह यह बिल्कुल गलत है, इस तरह गंदगी फैलाने से अनेक बीमारियाँ फैलती है। प्लास्टिक की थैली आदि से जो गंदगी और प्रदूषण फैल रहा है। यह हमारे लिए एक चिंता का विषय है, क्योंकि इससे हमारे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँच रहा है इसलिए प्रत्येक नागरिक को सजग रहना बहुत जरूरी है। सरकार द्वारा भी गाँवों व शहरों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इस स्वच्छता अभियान में प्रत्येक नागरिक का फर्ज बनता है कि हम पूरी तरह इस कार्य में सहयोग करें, तभी संभव है कि हम एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में रह पाएँगे। राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार देश में 33.3 प्रतिशत भूभाग पर वन होना चाहिए। लेकिन चिंता की बात है कि देश के केवल 19.5 प्रतिशत भाग पर ही वन है। प्रत्येक नागरिक को सोचना होगा कि धरती भी माँ है और इस माँ को सभी नागरिक मिलकर एक हरी चुनरी ओढ़ाने का प्रयास करें।

इस वर्ष 2021 में विश्व पर्यावरण दिवस की थीम का नाम पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली (Ecosystem Restoration) रखा गया। पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली कई तरह से की जा सकती है , गाँव- शहर को हरा-भरा करना, पौधे लगाना, जगह-जगह वाटिका का निर्माण करना, नदियों और समुद्र की सफाई करना आदि।

आखिर मानवता का अस्तित्व प्रकृति पर ही निर्भर करता है। प्रकृति को बचाने के लिए सिर्फ एक व्यक्ति काफी नहीं है, इसलिए हम सभी को साथ आना चाहिए और समय रहते एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण के लिए काम करना होगा। इसलिए आज से ही हम सब सजग होते हुए अपने लिए और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित पर्यावरण का निर्माण करें, साथ ही प्राकृतिक स्रोतों का सदुपयोग करते हुए वर्षा ऋतु में अधिकाधिक वृक्षारोपण करें।

हम सब ने यह ठाना है।
प्रकृति को बचाना है।।

अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय भवानीपुरा,
झाड़ली, ब्लॉक-मालपुरा,
टोंक (राज.)

Rajasthan Education Department

शिक्षा में संस्कारों की प्रधानता आवश्यक है

❐ नटवर लाल पुरोहित

भारतीय संदर्भ में शिक्षा का विशेष महत्त्व रहा है। ऋषि-मुनियों द्वारा गुरुकुल आश्रम संचालित किए जाते रहे हैं। वहाँ राजा-महाराजा अपने राजकुमारों को गुरु के पास शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजते थे। तत्समय गुरु जी अपनी तत्परता से राजकुमारों को विशिष्ट आधार की शिक्षा देकर उन्हें तैयार करते थे। राजकुमारों को अनुशासनबद्ध रहना पड़ता था और गुरु के प्रति हार्दिक सम्मान भी रखना पड़ता था। यह तो विदित ही है कि शिक्षा यानी विद्या का प्रभाव सभी पर अनुशासित रूप में होता था। नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालयों में दूर-दूर से विद्यार्थी पठन-पाठन हेतु आते थे तथा सम्पूर्ण रूप से सुशिक्षित होकर अपने देश को लौटते थे। इसमें महाबन्ध नामक विद्यार्थी का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। अपनी विद्या को सम्पूर्ण करते हुए वह अपने गुरुजी के पास गया और उनसे अपने घर जाने की प्रार्थना की। किन्तु गुरुजी ने कहा पुत्र! मेरा एक कार्य करना है, उसे पूर्ण करके घर चले जाना। शिष्य ने कहा-गुरुजी! आप आज्ञा दे कि मैं कौनसा कार्य पूर्ण करूँ। गुरुजी ने कहा कि जाओ और अपने चार योजन जंगल में से मुझे फिजूल पौधा लाकर दे दो। फिर चले जाना। उसने आज्ञा स्वीकार की और चार योजन जंगल में चला गया। उसने एक-एक पौधे को देखते हुए लगभग दो-तीन वर्ष लगा दिए। जब वह काफी अर्से बाद लौटकर आया तो उसका चेहरा उदास सा महसूस हो रहा था। गुरु ने पूछा अरे शिष्य घर गए नहीं, तुम्हें काफी विलम्ब हो गया है। शिष्य ने प्रत्युत्तर दिया कि गुरुजी! आपके द्वारा सौंपे गए कार्य को करते हुए मुझे बहुत खोज करनी पड़ी, परन्तु अफसोस है कि मैं आपको फिजूल पौधा नहीं सौंप पाया, क्योंकि जंगल में सभी पौधे उपयोगी है। गुरुजी ने कहा, 'अच्छा बेटे' अब आप अपने घर जा सकते हो, क्योंकि मुझे परम प्रसन्नता हुई है कि तुम्हें सभी पौधों के बारे में गहन ज्ञान हो चुका है। वस्तुतः शिक्षा का यह बेमिसाल उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

वर्तमान में शिक्षा, जो कि पहले विद्या थी का स्वरूप ही बदल गया हैं। उदाहरण देखिए-

विद्याददाति विनयम्, विनयाधानि पात्रनाम।
पात्रत्वधनमाप्योति, धनःधर्मम् ततः सुखम।।

अर्थात् विद्या विनयशीलता देती, विनय से वह सुपात्र बनता है। सुपात्र बनने पर धन प्राप्त करना हैं। धन से धर्म और सुख प्राप्त होता है। वस्तुतः यही बात यहाँ कहनी अनिवार्य है कि शिक्षा में संस्कारों की परमावश्यकता होती है। संस्कारयुक्त व्यक्ति समाज, देश और अपने राष्ट्र का नैतिक बल ऊँचा उठाता है तथा नैतिक चरित्र का भी उत्थान होता है।

शिक्षा के उद्देश्य स्वावलम्बी होना है, यदि डिग्रियाँ हासिल करके नौकरी हेतु सरकार मुखापेक्षी बनना। अपने आपको आत्म निर्भर बनाने, साहसिक एवं नेतृत्व प्रदान करने की शिक्षा ही महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षित एवं सुसंस्कारित व्यक्ति प्रदेश एवं राष्ट्रहित हेतु बहुत उपयोगी बन जाता है।

महात्मा गाँधी ने भी शिक्षा का उद्देश्य स्वावलंबन की ओर बढ़ना कहा है। स्वावलंबी पुरुष परमुखापेक्षी नहीं होता है। जितने भी शिक्षाविद् एवं महापुरुष हुए हैं वे सब स्वावलंबन पर ही निर्भर हुए है और वे कर्त्तव्यनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता और सांप्रदायिक सद्भावना के प्रतीक हुए हैं।

शिक्षा व्यवस्था में प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक सैद्धांतिक शिक्षा के साथ श्रम आधारित शिक्षा रोजगारोन्मुखी शिक्षा हेतु समय-समय पर आयोग गठित हुए हैं और सुझाव भी पेश किए हैं। शिक्षा में परिवर्तन एवं परिवर्द्धन हेतु मुदालियर आयोग (1958) के तहत व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया गया। कोठारी आयोग ने सन् 1964 में कार्यानुभव शिक्षा तथा विविधता वाले पाठ्यक्रम शुरू करके हस्तशिल्प, गृह विज्ञान और प्रायोगिक शिक्षा पर जोर दिया। शिक्षा नीति सन् 1986 में व्यावसायिक शिक्षा, रोजगार परक शिक्षा पर जोर दिया गया।

इसी प्रकार शिक्षा नीति में नाना प्रकार के प्रयोग भी सुझाए गए। इस हेतु व्यावसायिक शिक्षा संस्थान की स्थापना, कौशल विकास प्रारंभ कर आत्मनिर्भर भारत की ओर शिक्षा में कदम उठाए गए। रिसर्च एण्ड डवलपमेंट संस्थाएं, नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, मेडिकल कॉलेज, उच्च शिक्षा में आई.आई.टी., आई.आई.एम. तथा सी.बी.एस.सी., सी.बी.एस.सी.एफ., एन.सी.ई.आर.टी. तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आँगनबाड़ियाँ, प्रत्येक पंचायत स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में प्रगति के सूचक है।

नई शिक्षा नीति में शिक्षा का विकेन्द्रीकरण भी किया जाना तथा व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास की शिक्षा, हस्तकला आदि को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया। शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न आयामों की स्थापना करते हुए देश में चहुँमुखी विकास करने का प्रयत्न किया गया है। वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य स्वावलंबन की ओर बढ़ावा देने का हर संभव प्रयत्न किया जा रहा है। शिक्षा का स्वरूप विशुद्ध अकादमिक एवं व्यावसायिक हो तो व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात व्यक्ति सरकारी नौकरी मुखापेक्षी नहीं बनेगा।

व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने की परमावश्यकता है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार सामाजिक आवश्यकतानुसार होना चाहिए। समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही शिक्षा का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। शिक्षा में संस्कारों की प्रधानता होनी चाहिए। शिक्षा में संस्कारों की प्रधानता ने ही भारत को विश्वगुरु तक माना है।

शिक्षा से चारित्रिक विकास, साहस और नेतृत्व की भावना उत्पन्न होती है। अतः भारत के गाँवों में भी शिक्षा का प्रचार-प्रसार अवश्यंभावी है। शुद्ध ध्येय, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं सीखने-सिखाने की लगन विद्यालयों के विद्यार्थियों में होनी चाहिए ताकि वे अवकाश के समय अपने घर-गाँव और पड़ोसियों को शिक्षा देने हेतु प्रोत्साहित होवे।

वरिष्ठ सहायक
(बजट-अनुभाग)
कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर (राज.)
मो: 8290261434

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

डॉ. अजय जोशी : चयनित व्यंग्य

संपादन व चयन : चंद्रकांता; **प्रकाशक** : इण्डिया नेट बुक्स प्रा. लि., नोएडा-201301; **संस्करण** : 2021; **मूल्य** : ₹ 275; **पृष्ठ** : 117

डॉ. अजय जोशी : चयनित व्यंग्य चंद्रकांता के सम्पादन में डॉ. अजय जोशी के व्यंग्यों का दूसरा संग्रह आया है। अजय जोशी की व्यंग्य में नूतन और मौलिक विषय उठाने की क्षमता एकदम अलग है। वे बहुत ही सतही आम जीवन का विषय उठाते हैं और अपनी सहज वृत्ति में तीखा कटाक्ष करते हैं। इसी वजह से उनके व्यंग्यों में ताजगी और गहन पठनीयता का भाव देखा जा सकता है। यह तो किसी भी लेखक के साथ नहीं होता कि उसकी सभी रचनाएँ एक स्तरीय ढाँचे में बुनी गयी हो तथा वे शत प्रतिशत खरी उतरे व्यंग्य की बुनियाद पर, लेकिन अजय जोशी की यह अद्‌भुत क्षमता है कि वे लघु कलेवर में गहरा व्यंग्य बोध कराते हैं। उनका गाँधीजी के तीनों बंदर गहरी व्यंग्य भावभूमि से पूर्ण रचना है। वे इस रचना में सापेक्ष भाव से करारा कटाक्ष करने में सफल हुए हैं। इस व्यंग्य को देखिए-'अब ऐसा लगता है कि गाँधीजी के तीनों बंदरों ने एक चेन बना ली है, चेन के पहले सिरे पर बैठा बुरा न देखने वाला पहला बंदर बुराई को ध्यान से देखता है और उसे बुरा नहीं सुनने वाले बंदर के पास भेज देता है और बुरा नहीं बोलने वाले बंदर तक ट्रांसमिट कर देता और बुरा नहीं बोलने वाला बंदर जोर-शोर से चीखकर ऊलजलूल बकने लगता है। इस चेन ने सारे सिस्टम को बेचैन किया हुआ है। यह अजय जोशी की सर्वथा नूतन व मौलिक सोच है जिससे वे इतना तीखा विश्लेषण कर पाए हैं।

'छपाक लो...एक और आ गया एक अच्छा व्यंग्य है, इसे देखिए 'व्यंग्य महासागर में पहले से ही कूदे लागे तो आलरेडी फंसमफंसी में थे। उनको हिलने-डुलने की जगह भी नहीं मिल रही थी। उनके शरीर पर कीचड़ मला था। जब सागर छपाक वालों से लबालब भरने के कगार पर हो तोसाफ पानी में कोई कैसे सुविधाजनक स्थिति में रहने की सोच सकता है। यह सर्वथा मौलिक कथ्य है। यही नहीं ऐसी सघनता जोशी के हर व्यंग्य में परिलक्षित होती है तथा इससे उनकी पहचान को और अधिक स्पष्टता मिलती है। इसी तरह गूगल बिना ज्ञान कहाँ से लाऊं, 'भूमि के भोमिये', 'हम हो गए नंबर वन', 'अथ श्री चम्मच व्यथा' तथा 'सफलता का चांस' जैसी व्यंग्य रचनाएँ हैं, जो जोशी को व्यंग्य की भीड़ से अलग करती है।

भाषा पर तो जोशी का कमाल का कमांड है। वे सहज सरल ही नहीं इस भाव के प्रति धीर-गंभीर भी है। इण्डिया नेट बुक्स, नोएडा ने इसे पेपर बैंक में बहुत ही साफ-सुथरा छापा है। साथ ही चंद्रकांता का चयन भी श्लाघनीय है। अजय जोशी और नए तेवर में आगे दिखे जाने की उम्मीद के साथ इस संकलन में से सामने आए हैं।

समीक्षक : **पूरन सरमा**
124/61-62, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर (राज.)-302020

संस्कारित बाल कहानियाँ

लेखिका : करुणा श्री; **प्रकाशक** : साहित्यागार, जयपुर- 302003; **संस्करण** : 2021; **मूल्य** : ₹ 250; **पृष्ठ संख्या** : 114

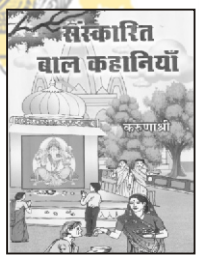

सृजन की चाह व्यक्ति की आदिम चाह है। प्रकृति की भांति व्यक्ति भी स्वयं को विविध माध्यमों एवं कला रूपों में रचता, अभिव्यक्त करता आया है। प्रत्येक देश और प्रत्येक भाषा में मानवीय सृजन, चिन्तन, शिल्पगत कौशल और जीवन जगत के विविध रूपों की उत्कर्ष रचनाओं का शानदार इतिहास आज भी सुरक्षित है। उन्हें देखकर तथा उनका अनुशीलन करने वाली पीढ़ियाँ सृजन के प्रतिमान रचती आई है। मनुष्य अपने मन के भावों को मौखिक या लिखकर काव्य या कहानी विधा में व्यक्त करता है। कहानी विधा एक ऐसा कौशल है जिससे मनुष्य लम्बे समय तक स्मृति बनाए रखता है। परन्तु बालकों का एक ऐसा संसार है जिसमें उतर पाना कठिन तो है ही, परन्तु बहुत कम लोग हैं जो बालकों के भावों को समझ पाते हैं। यह सही है कि बच्चों लिए लिखने के लिए रचनाकार में बालपन का होना आवश्यक है। बालक बन कर ही बालकों की भावनाओं, इच्छाओं को समझा जा सकता है। ऐसा प्रयास प्रसिद्ध बाल रचनाकार करुणा श्री ने किया है जो बालमन में गहरी उतर कर बालकों के लिए रचना करती है। इनकी नवीन कृति 'संस्कारित बाल कहानियाँ' एक ऐसी कृति है जो कहानी विधा में होते हुए सहज ही बाल पाठकों के समझ में आ जाती है।

यह सत्य है कि बालक कहानी विधा से जल्दी व शीघ्र समझ जाता है। बालक को कही हुई बात या कहानी उसे लम्बे समय तक याद भी रहती है। इस पोथी की समस्त कहानियाँ स्तरीय तथा सीखप्रद है। रचनाकार करुणा ने बाल भावनाओं व बाल मन को ध्यान में रखते हुए इस कृति की कहानियों की रचना की है। इस कृति की प्रथम कहानी बालकों में जीवों के प्रति करुणा व दया के भाव उत्पन्न करने में सार्थक सिद्ध होती है। 'सबसे बड़ा मंदिर' में असहाय, निःशक्त व गरीब लोगों की सेवा को ही ईश्वर पूजा बताया गया है। 'आत्मदान का उपहार' कहानी बालकों को यह संदेश देने में सफल रही है कि पात्र लोगों को दिया गया दान या उनकी की गई सहायता व्यर्थ नहीं जाती। इससे बालकों में सकारात्मक भाव उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार एक अन्य कहानी में मनुष्य को अपनी भावनाओं व इच्छाओं को नियंत्रित कर संतोष धारण करने की ज्ञानवर्धक सीख बालकों में पैदा होती है।

'सदैव ईश्वर को याद रखो' कहानी में दया, प्रेम, करुणा व सहयोग करना ही ईश्वर प्राप्ति में मदद करने में आवश्यक है। आत्मविश्वास से हर कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होता है।' 'जमीन का एक टुकड़ा' कहानी जहाँ राष्ट्र सेवा व कर्त्तव्य की सीख देती है, वहीं बिना किसी भेदभाव के एक दूसरे की विपदा में मदद करने को तत्पर रहने की प्रेरणा भी देती है। परन्तु परोपकार करने वाले को ही यदि तुच्छ स्वार्थ के लिए कोई विश्वासघात करता है तो इसे निंदनीय ही कहा जाएगा। 'बचपन में ही होता है आदतों में सुधार' बाल कहानी एक प्रेरणादायी कहानी है जो बालकों में विभिन्न महापुरुषों के जीवन चरित्र व उनके योगदान से सीख लेने की भाव प्रस्फुटित करती है।

Rajasthan Education Department

'साहसी मृगया' एक ऐसी कहानी है जो भारत-पाकिस्तान विभाजन को ताजा कर देती है। मृगया नाम की बालिका को करुणा व दया रखने वाले दम्पत्ति ने पाल-पोष कर बड़ा किया व उसे अपनी बेटी समान रखा व पढ़ाई करवाई। संकट के समय मृगया भी अपना दायित्व निभाना नहीं भूली। परिवार की रक्षा की। ऐसी सीखप्रद व प्रेरणादायी कहानियाँ बालकों के सामने आनी ही चाहिए। तभी तो बालक के परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने लगाव की रुचि पैदा हो सकेगी। 'बेटी का संघर्ष' कहानी में 'रोजी' नाम की बेटी अपने बीमार माता-पिता के लिए कठोर परिश्रम कर समाज में आदर्श उदाहरण स्थापित करती है। इसी प्रकार 'सच्चा ज्ञान', वफादार कुत्ता, पुनर्जन्म के साथ, परिवर्तन तथा अन्य कहानियाँ भी भावप्रद व बालकोपयोगी हैं।

यह सही है कि बालकों में दया, करुणा, सहयोग, परोपकार, देशभक्ति, ज्ञान जिज्ञासा, नेतृत्व के गुण होने ही चाहिए। इस कृति में 29 कहानियाँ है जो सरल भाषा में लिखी गई है। कथ्य और कथानक की दृष्टि से कहानियाँ सटीक हैं। ऐसी प्रेरणादायी कहानियाँ पढ़कर या सुनकर बालक में संस्कार पैदा होंगे। परन्तु आज के डिजिटल प्रधान युग में मोबाइल व इंटरनेट के बढ़ते क्रेज ने विशेषकर बाल साहित्य के प्रति पाठकों की रुचि कम कर दी है। बालकों को बाल साहित्य सुलभ नहीं मिलने से बालकों में अच्छे संस्कारों की कमी पड़ती जा रही है। मोबाइल व इंटरनेट के साथ-साथ बालकों के चारित्रिक विकास पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

इस कृति की भूमिका वरिष्ठ साहित्यकार पूरन सरमा ने लिखी है, जिन्होंने इस संग्रह के बारे में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि 'करुणा श्री की कहानियाँ हर दृष्टि से बच्चों में नैतिक बल प्रदान करने वाली, प्रेरक व उद्देश्य परक कहानियाँ है।' इसी प्रकार महेश सक्सेना ने इस कृति के बारे में लिखा है- 'बाल कहानी का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा प्रदान करना तथा उनके कौतूहल को शांत करना और मनोरंजन करना होता है। बहुत पहले नीति उपदेश, राजा रानी, परियों, भूत प्रेतों आदि की कहानियाँ बच्चों को सुनाई जाती थी, परन्तु आज बच्चों की सोच व रुचि बदली है। वे ऐसी कहानियाँ सुनना चाहते हैं जो वे समाज में देख रहे हैं, समझ रहे हैं तथा अनुभव कर रहे हैं, उससे सम्बन्धित हो।' करुणा श्री ने बाल मन की भावनाओं को समझा है व इसी के अनुरूप अपने शब्द शिल्प के कौशल से रुचिकर कहानियाँ परोसी हैं। रचनाकार साधुवाद की पात्र है जिन्होंने एक साथ 29 कहानियों का सृजन कर बाल साहित्यकार के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने में सफल रही है।

समीक्षक : **रामजी लाल घोड़ेला**

प्रधानाचार्य
C/o राज क्लॉथ स्टोर, लूणकरणसर, बीकानेर
(राज.)-334603
मो: 6350087987

द फिल्थि पीपल

अनुवादक : भूपिन्द्र नायक; **मूल लेखक** : मनोज कुमार स्वामी; **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर; **मूल्य** : ₹ 200; **संस्करण** : 2021; **पृष्ठ** : 120।

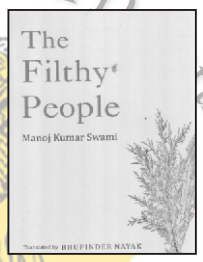

राजस्थानी भाषा के सुविख्यात साहित्यकार मनोज कुमार स्वामी की राजस्थानी कहानियों की पुस्तक 'मनगत' का नवोदित युवा साहित्यकार भूपिन्द्र नायक ने अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया है और पुस्तक को 'द फिल्थि पीपल' शीर्षक दिया है।

अनुवाद से तात्पर्य एक भाषा में लिखे गए विचारों को दूसरी भाषा में प्रकट करना है। किन्तु यह सरल कार्य नहीं है। अनुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि मूल भाषा को अनुदित भाषा में पूर्णतः उतारा जावे। इसके लिए अनुवादक को दोनों भाषाओं का पूर्ण ज्ञान अपेक्षित है। समीक्षित पुस्तक 'द फिल्थि पीपल' को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि अनुवादक भूपिन्द्र नायक का राजस्थानी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है। तभी तो मूल पुस्तक 'मनगत' में व्यक्त कहानीकार के विचारों और उसकी भावनाओं को समझाते हुए अनुदित पुस्तक में अपनी भाषा अंग्रेजी में व्यक्त करने में सफल हुआ है।

'द फिल्थि पीपल' का शाब्दिक अर्थ- घिनौने लोग है। पुस्तक की शीर्षक कहानी 'द फिल्थि पीपल' ऐसे ही घिनौने लोगों की एक कहानी है जिसमें रेवन्तिया और धन्नाराम जैसे निकम्मे, निठल्ले और नशाखोर लोग अपने ही घर की सीधी साधी बहू के जीवन को नारकीय बना देते हैं। भला हो संवेदनशील वार्ड पार्षद वीरेन्द्रजी का जो अपनों से पीड़ित महिला के राशन पानी की व्यवस्था अपनी जेब से करने के लिए आगे आते हैं। इसी प्रकार मनगत, दि ऐगॅनि अव अॅ वुमॅन, पिण्डदान और सीर संस्कार नारी विमर्श की कहानियाँ जिनमें समाज में प्रचलित बेमेल विवाह, अट्टा-सट्टा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों से पाठक रूबरू होते हैं। कहानी 'दि ऐगॅनि अव अॅ वुमॅन' की नायिका नन्ही शायर का अट्टे-सट्टे में अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह कर दिया जाता है। बेचारी शायर घुट-घुट कर अपना जीवन व्यतीत करती है और भरी जवानी में ही बूढ़ी हो जाती है। शायर का बेटा जब विवाह योग्य हो जाता है तो अट्टे-सट्टे में उसकी नन्ही बेटी को बड़ी उम्र के लड़के के साथ विवाह करना पड़ता है। गाँवों में आज भी यह परम्परा चलती आ रही है। बड़ी उम्र के भाई का घर बसाने के लिए छोटी उम्र की बहिन को अपने सपनों को कुर्बान करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण कन्या भ्रूण हत्या और समाज में निरन्तर घटती लड़कियों की संख्या है। इसका एक ही उपाय है कि महिलाओं को शिक्षित और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाया जाए। कहानी 'सीर संस्कार' में मुन्ने की छोटी बहिन सीता की दुर्गति के साथ-साथ अमीरों और गरीबों के अंतिम संस्कार में अन्तर पढ़ने को मिलता है। कहानी का अंतिम वाक्य 'And this much only is the association of a soul with us.' मन में जीवन की अनिश्चितता और नश्वरता के भावों को जाग्रत करता है।

कहानी 'दि अडॉप्शन' एक अलग प्रकार की कहानी है। इस कहानी से पाठकों को एक साथ तीन संदेश मिलते हैं। पहला संदेश बिना परखे किसी को गोद नहीं लेना चाहिए। दूसरा संदेश विधवा का पुनर्विवाह करते समय उसकी राय भी लेनी चाहिए और तीसरा संदेश- अविवाहित युवक का विधवा महिला के साथ विवाह करते समय युवक की भावनाओं की कद्र भी करनी चाहिए। उक्त कहानी में तीनों ही बातों का ध्यान नहीं रखा गया। परिणामतः चिमनाराम को अपना गोदनामा निरस्त करवाने का निर्णय करना पड़ता है।

Rajasthan Education Department
सर्वाधिकार सुरक्षित

'द कॅन्डोलॅन्स मीट्स' राजनेताओं को एक बहुत बड़ी सीख देती है कि उन्हें चुनाव में खड़ा होने से पहले अपने पक्ष में वातावरण बनाने के लिए उन्हें निरन्तर मतदाताओं के सम्पर्क में रहना चाहिए। कहानी 'कॉस्टिज्म' बताती है स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्षों के बाद भी देश में छूआछूत और जाति-पांति की कुप्रथा कायम है। कहानी 'फीस' में निजी शिक्षण संस्थाओं की मनमानी का पर्दाफाश किया गया है तो 'दि एडवरटाइजर्ज' और 'ट्वेल्व आना' में राजकीय कार्यालयों में व्याप्त निकम्मेपन और भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है। कहानी 'मेमवाज' में पतराम मिरासी का जीवनवृत्त पढ़ने को मिलता है। कहानी 'द हाउसहोल्ड इक्सपेण्डिचर' पाठकों को सीख देती है कि अनजान व्यक्ति को बिना अच्छी तरह से जाने परखे उसके साथ जाना ज्यादा सहानुभूति दिखाना सदैव ही घाटे का सौदा ही रहती है।

इस प्रकार पुस्तक में समाज में महिला की वर्तमान स्थिति व बुजुर्गों की समस्या, समाज में व्याप्त कुरीतियों और कुप्रथाओं तथा राजकीय कार्यालयों में फैले भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में बहुत अच्छा पढ़ने को मिलता है। अनुवादक ने मूल लेखक के भावों व विचारों के अनुरूप अंग्रेजी के प्रचलित सरल शब्दों को छोटे-छोटे वाक्यों में पीरो कर पुस्तक को सामान्य पाठकों के लिए उपयोगी बना दिया। अन्त में पुस्तक की प्रस्तावना के विद्वान लेखक भवानी शंकर शर्मा 'विनोद' के विचारों को उन्हीं के शब्दों में मैं यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा।

'So, I congratulate the author for such a fantastic, fresh and meaningful flag bearer stories of new time. I wish this collection prove its worth and lead the stories from rajasthan.'

समीक्षक : **ओम प्रकाश तंवर**
डी-213, अग्रसेन नगर, चूरू (राज.)
मो: 9460565427

धागे के दो छोर

रचयिता : सुरेन्द्र सिंह परमार; **प्रकाशक** : सनातन प्रकाशन, झोटवाड़ा, जयपुर-302012; **मूल्य** : ₹ 195; **संस्करण** : 2021; **पृष्ठ** : 112

किसी समय विशेष पर समकालीन परिस्थितियों में घट रही घटनाओं से कवि की चेतना जागती है। उसकी हृदतंत्री झंकृत हो उठती है और फिर कविता का प्रस्फुटन होता है। इसी प्रस्फुटन से विभिन्न भाव उजागर हो उठते हैं, जिन्हें कवि कविता में पिरोता है।

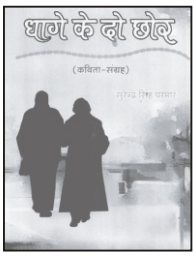

श्री सुरेन्द्र सिंह परमार एक सहृदय कवि है। इस संग्रह की सभी रचनाएँ बहुत ही प्रभावशाली हैं, इनमें सरलता, सहजता, लोकवाणी की मिठास और सहज चित्रण है। इसको पढ़कर पाठक को लगता है जैसे कवि ने उसके मन की बात अपने शब्दों में कही है।

कवि कहना चाह रहा है कि संबंध निर्वहन संवादरत दोनों व्यक्तियों पर निर्भर करते हैं। संबंधों के धागे का एक छोर एक व्यक्ति के पास तथा दूसरा छोर दूसरे व्यक्ति के पास होता है। दोनों व्यक्तियों को चाहिए कि संबंधों के निर्वहन के लिए नम्रता का निर्वहन करें। यदि कभी ऐसा लगे कि संबंधों में कठिनाई आ रही है तो परस्पर समझ से उसे संतुलित कर लेना चाहिए।

इक धागे के दो छोर प्रिये।
इक तुम पर है इक मुझ पर है।
मैं खींचूँ तुम ढीला कर दो,
तुम खींचो मैं ढीला कर दूँ,
इस तरह संतुलन बना रहे
वरना जग के पथ पर सजनी
झटका-झटका पग-पग पर है।

कवि कहता है कि यदि लगे कि संबंध दरकने लगे हैं तो परस्पर मनुहार कर लेनी चाहिए।

'बुद्धिमान हे मित्र! जतन कर, कुछ मनुहार जरूरी है। इसीलिए इस दौड़ धूप में भी कुछ प्यार जरूरी।'

श्री सुरेन्द्र जी ने पारिवारिक रिश्तों में माँ की महिमा पर लिखा है कि बालक को जब भी पीड़ा होती है तो माँ संवेदना से व्याकुल हो जाती है। वो लिखते हैं-

'मत जा राजू, माँ रोती है।
माँ तो केवल, माँ होती है।'

चूँकि श्री सुरेन्द्र जी का पूरा जीवन अध्ययन और अध्यापन में बीता अतः उन्होंने शिक्षा की महत्ता को समझा। वो लिखते हैं-

इस आपा-धापी के युग में,
अनपढ़ एक मजबूरी है।
कोई निवाला नहीं छीन ले,
शिक्षा बहुत जरूरी है।।
भौतिकता की इस आँधी में,
रिश्ते-नाते चूर हुए।
बिना पढ़े का स्वत्व छीनना,
दूनिया में दस्तूर हुए।
शिक्षा बन इस निष्ठुर जग में,
जीवन जोत अधूरी है।।

कवि कहता है कि जीवन में सौहार्द्र के लिए माधुर्य का होना परम आवश्यक है। सौहार्द्र से मनुष्य के हृदय के सभी कटु भाव तिरोहित हो जाते हैं।

मधु जरूरी है बहुत, जीवन में है मित्र।
तभी पूर्ण हो पाएगा, अपना मधुर चरित्र।।
अपना मधुर चरित्र, जिंदगी सब सुख देगी।
द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, अहम, दुख को हर लेगी।।
कहै मित्र 'परमार' मिटहि आपस में दूरी।
कड़वाहट हो दूर, है इसलिए मधु जरूरी।।

वर्तमान परिस्थितियों को देखकर कवि के मन में घोर निराशा का भाव है। देश की स्वतंत्रता के लिए देशवासियों के मन में जो भाव उठे और उन्होंने जो सपने संजाए थे।

वे सभी एक-एक कर टूटते नजर आ रहे थे। कवि इस दृश्य को देखकर निराश है और वो लिखता है-

अंधकार में दीप जला क्या, आजादी के बाद।
फिर से करो विचार मिला क्या आजादी के बाद।।
खूब देश में लूटपाट है आजादी के बाद।
आपस में विश्वासघात है आजादी के बाद।।
भरे सदन में जूत-लात है आजादी के बाद।
नहीं निबल के कोई साथ है आजादी के बाद।।

इस प्रकार यह कृति सहृदय पाठकों के मन में आशा के भाव जगाती है उन्हें सहजता और परस्पर प्रेम से रहना सिखाती है, उनके दिलों में विभिन्न रसों का सींचन करती है।

समीक्षक : **लखन पाल सिंह**
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
सालाबाद, भरतपुर (राज.)-321401

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

अपनी राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

दीपक सा जलता है गुरु

दीपक सा जलता है गुरु
फैलाने ज्ञान का प्रकाश
न भूख उसे किसी दौलत की
न कोई लालच न आस

उसे चाहिए,
हमारी उपलब्धियाँ
हमारी ऊँचाईयाँ,
जहाँ हम जब खड़े होकर
उनकी तरफ देखें पलटकर
तो गौरव से उठ जाए सर उनका
हो जाए सीना चौड़ा

हर वक्त साथ चलता है गुरु
करता हममें गुणों की तलाश
फिर तराशता है शिद्दत से
और बना देता है सबसे खास

उसे नहीं चाहिए कोई वाहवाही
बस रोकता है वह गुणों की तबाही
और सहेजता है हममें
एक नेक और काबिल इंसान को।।

सुभाष गर्ग, कक्षा-11
राजकीय माध्यमिक विद्यालय धमाणा का
गोलिया, जालोर (राज.) मो: 9610714084

सीखना है तो...

सीखना है तो उस कलम से सीखो,
किस तरह अपने आप को उकेरा जाए।

सीखना है तो उस कुर्सी से सीखो,
किस तरह जीवन को संभाला जाए।

सीखना है तो उस कॉपी से सीखो,
किस तरह ज्ञान को खुद में समाया जाए।

सीखना है तो उस बैग से सीखो,
किस तरह अलग-अलग सोच को एक साथ रखा जाए।

सीखना है तो उस पेंसिल से सीखो,
किस तरह कालिक (अज्ञान) को भी ज्ञान बनाया जाए।

सीखना है तो उस रबर से सीखो,
किस तरह अज्ञान को क्षण भर में मिटाया जाए।

सीखना है तो उस स्केल से सीखो,
किस तरह एक ही पथ को पाया जाए।

सीखना है तो उस प्रकार के सीखो,
किस तरह तीक्ष्णता भी कार्य में लाई जाए।

सीखना है तो उस दोस्त से सीखो,
किस तरह दूसरों को हँसाया जाए।

सीखना है तो उस गुरु से सीखो,
किस तरह दूसरों का जीवन बनाया जाए।

सीखना है तो उस स्कूल से सीखो,
किस तरह जिंदगी का एक पल या डगर बनाया जाए।

पुरोहित चिराग, कक्षा-12 रा.उ.मा.वि., गोगून्दा, उदयपुर (राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

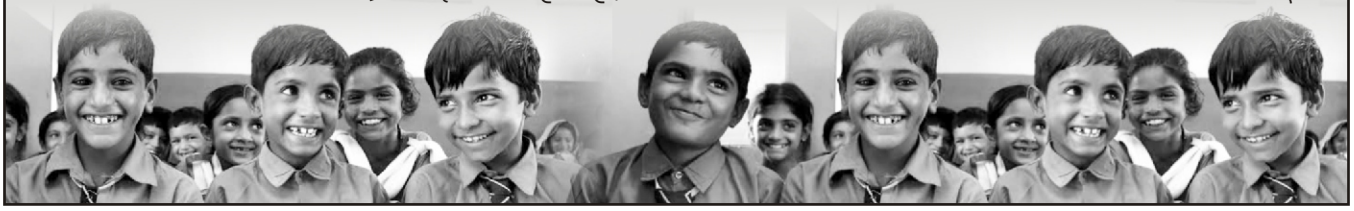

हिन्दी

माँ की ममता है हिन्दी.....
पिता की छाया है हिन्दी....
हिन्दुस्तान की पहचान है हिन्दी
भारत माँ की शान है हिन्दी
शहीद वीर सपूतों की भूमि है हिन्दी
हर भारतीय का आधार है हिन्दी....
हिन्दुस्तान की शक्ति है हिन्दी
भगवान का आशीर्वाद है हिन्दी
माँ की ममता है हिन्दी...
पिता की छाया है हिन्दी....
जन-जन को जो मिलाती है।
वो भाषा हिन्दी कहलाती है।
हिन्दुस्तान की शान है हिन्दी
हर भारतीय का सम्मान है हिन्दी
माँ की ममता है हिन्दी...
पिता की छाया है हिन्दी...

हिंदी वर्णमाला की पूरी जानकारी
कमल खरगोश गमला

किरण जाट पुत्री श्री हरफूल जाट
कक्षा–12, राउमावि. कासोरिया, बनेड़ा, भीलवाड़ा (राज.)

गायत्री, ज्योति, खुशबू–।।, लक्षिता राठौड़ कक्षा–6
श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर (राज.)

गुरु

गुरु वही होता है जो आपको सीखना दे
आपकी आपसे पहचान करा दे।
बना दे आपको हीरे की तरह
दुनियां के रास्तों पर चलना सीखा दे।
तुमको हमेशा चलना सिखाए सच्चे मार्ग पर
आपको अच्छा इंसान बना दे।
मुश्किलों से लड़कर आगे बढ़ जाओ तुम
इतना तुम्हें समझदार बना दे।
वो तुम्हें हारकर जीत जाने का हुनर सीखा दे।
गुरु वही होता है जो आपको जीना सीखा दे।
आपकी आपसे पहचान करा दो।

करिश्मा, कक्षा–8
श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर (राज.)

किंजल परिहार, कक्षा–9
राजकीय महात्मा गाँधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राज.)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

विद्यालय को भामाशाह ने भेंट किए इन्वर्टर और प्रिंटर

उदयपुर– जिले के बड़गाँव ब्लॉक के आदिवासी अंचल में स्थित राउमावि धार के शिक्षकों द्वारा इन्वर्टर और प्रिंटर विद्यालय को भेंट किए गए। प्रधानाचार्य डॉ. सत्यनारायण सुथार ने बताया कि धार विद्यालय आदिवासी अंचल में स्थित विद्यालय है जहाँ पर विद्युत की आपूर्ति अनियमित रहते हुए यह समस्या हर समय बनी रहती है। इसके स्थाई समाधान हेतु स्थानीय विद्यालय और पीईईओ क्षेत्र के शिक्षक आगे आए और समस्या का स्थाई समाधान खोजने हेतु प्रयास किए। परिणामस्वरूप स्थानीय विद्यालय की व्याख्याता श्रीमती बेला सोलंकी ने 25,000/- इसके अलावा अन्य शिक्षकों सर्वश्री दिलीप मेहता, कुसुम कुंवर राव प्रतिभा राव, कृष्णकांत जोशी, जगदीश सिंह राजपूत नवदीप सिंह एवं प्रधानाचार्य डॉ. सुथार द्वारा 8,500 रुपये की अतिरिक्त राशि एकत्र कर कुल 33,500 रुपये का इन्वर्टर खरीद कर विद्यालय को भेंट किया गया। साथ ही सेवानिवृत्त हुई स्थानीय विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती सीता शर्मा द्वारा 17,800 रुपये का स्मार्ट वाईफाई प्रिंटर विद्यालय को भेंट किया गया। विद्यालय परिवार द्वारा इन भामाशाहों का भामाशाह सम्मान पत्र व उपरना ओढ़ा कर धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

स्टाफ ने बनवाया पाँच लाख से प्रधानाचार्य कक्ष

बाँसवाड़ा– जिले के कुशलगढ़ ब्लॉक के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी बड़ी में प्रधानाचार्य श्री राजकुमार बुनकर व समस्त स्टाफ ने मिलकर विद्यालय में पाँच लाख की लागत से प्रधानाचार्य-कक्ष का निर्माण करवाया। विद्यालय विकास प्रबंध समिति के सचिव सुरेश चन्द पहाड़िया ने बताया कि प्रधानाचार्य श्री राजकुमार बुनकर ने जब कार्य ग्रहण किया तब नामांकन के आधार पर कक्षा-कक्षों व कार्यालय-कक्ष की बहुत बड़ी कमी थी। तब प्रधानाचार्य बुनकर की प्रेरणा से विद्यालय में प्रधानाचार्य-कक्ष के निर्माण की योजना बनी। जिसमें स्वयं प्रधानाचार्य ने 1,51,000 (एक लाख इक्यावन हजार रुपये) व स्टाफ शिक्षक सर्वश्री सुरेश चन्द पहाड़िया, नाथूलाल भाभोर, भूरालाल डिण्डोर, दशरथ पाटीदार, जीतमल निनामा, रामकरण मेघवाल, शंकर पिलानिया, भुरजी निनामा, पवन डोडियार ने इक्कीस-इक्कीस हजार रुपये व सरपंच पिता रालू भाई ने पच्चास कट्टे सीमेंट, मांगीलाल भाभोर ने दस कट्टे सीमेंट व पीईईओ क्षेत्र के अध्यापक कमलेश मईड़ा, मनोज पारगी नरेश निनामा व रमेश पारगी ने प्रति शिक्षक पाँच हजार एक सौ रुपए का सहयोग दिया। 15 फ़रवरी 2020 को स्थानीय रीति-रिवाज नोतरा व वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में स्टाफ व ग्रामीणों के सहयोग से जमा अस्सी हजार रुपये से इस प्रधानाचार्य-कक्ष का निर्माण पूर्ण हुआ। शारीरिक शिक्षक श्री कमलेश चौधरी ने बताया कि 15 अगस्त को आयोजित विद्यालय विकास प्रबंध समिति व एसएमसी की सयुंक्त आम सभा में सर्वसम्मति से 8 अक्टूबर 2021 को कुशलगढ़ विधायक श्रीमती रमिला खड़िया व राजस्थान सरकार में अनुसूचित जन जाति विकास मंत्री श्रीमान अर्जुन बामनिया के कर कमलों से इस कक्ष का लोकार्पण करवाए जाने का निर्णय लिया गया। प्रधानाचार्य बुनकर ने बताया कि पदस्थापन के समय यह विद्यालय घाटा क्षेत्र का निरीह जंगल में मात्र पाँच कमरों का विद्यालय था। जिसमें वर्तमान में चार कक्षा-कक्ष रमसा के सहयोग से निर्माणाधीन है व पाँच कमरों की अभिशंषा स्थानीय विधायक रमिला खड़िया ने कर रखी है।

विद्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया

भवानीमंडी– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुढ़ा में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता व्याख्याता श्रीमती लक्ष्मीकान्ता शर्मा की। मुख्य अतिथि एवं वक्ता श्रीमती लक्ष्मी चतुर्वेदी एवं विशिष्ठ अतिथि श्री नईम मोहम्मद थे। कार्यक्रम मे छात्र छात्राओं ने आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया जिसमें लखन सिंह, अन्नु कुंवर, सीमा कुंवर को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रमुख वक्ता श्री परमानन्द लववंशी ने कहा की हिन्दी जन-जन के मन की सम्पदा है जिसे स्वतन्त्र होकर बाँटने से ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए वरिष्ठ अध्यापक श्री जितेन्द्र शर्मा ने हिन्दी की काव्य यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें निज भाषा के साथ-साथ परभाषा का भी सम्मान करना चाहिए। भाषा की समृद्धि में ही देश की समृद्धि है। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ सर्वश्री

Rajshri Education Department

पुखराज मीणा, अब्दुल मुतलिब, दिनेश परमार, विमलेश गुप्ता, मीना कुमारी, सुरेश यादव आदि उपस्थित थे।

एक बच्चा - एक पौधा अभियान चलाया गया

नागौर– राजकीय माध्यमिक विद्यालय किला रियांबड़ी, (नागौर) के वृक्षारोपण प्रभारी श्री कैलाश चंद्र जाट ने जानकारी देते हुए बताया कि स्थानीय विद्यालय में 'एक बच्चा-एक पौधा' योजना के तहत 326 पौधों का रोपण किया। वहीं पौधों के संरक्षण का संकल्प भी लिया गया। संस्थाप्रधान श्री चन्द्रवीर सिंह राठौड़ ने सम्बोधित करते हुए कहा कि पृथ्वी पर बढ़ते तापमान एवं बिगड़ती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वृक्षारोपण करना बेहद जरूरी है। जहाँ तक संभव हो प्रत्येक मनुष्य को जीवन में एक वृक्ष तो जरूर लगाना चाहिए। वृक्ष लगाने के बाद वह सदियों तक कई प्राणियों की सेवा करता है। पेड़-पौधे हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। सिर्फ पेड़ लगाने मात्र से उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती है बल्कि हमें उस पेड़ की बच्चों की तरह लालन-पालन करने की भी आवश्यकता होती है। इसलिए अधिकाधिक मात्रा में वृक्षारोपण करना चाहिए। मानव जीवन के अस्तित्व के लिए धरती पर हरियाली आवश्यक है, इसके लिए सभी लोगों को अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए। विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण हेतु विद्यालय वाटिका क्लब या हरित विद्यालय क्लब जैसे-समूहों का गठन किया गया व इको-क्लब को सक्रिय किया गया। विद्यालय एसडीएमसी तथा पूर्व छात्र-छात्राओं को भी इस कार्यक्रम से जोड़कर उनसे भी वृक्षारोपण करवाया गया तथा उनको भी पौधे गोद दिए गए। इस अवसर पर विद्यालय में 100 पौधे आंवले के लगाकर विद्यालय में बाग लगाया गया तथा साथ ही नीम, जामुन, हेज, अशोक, चांदनी, गुड़हल, नागचम्पा, गुलमोहर, करंज आदि पौधे लगाए गए। इस मौके पर भामाशाह श्री गौतम मोगिया, वरिष्ठ अध्यापक सर्वश्री रामनिवास हुड्डा, रामेश्वर लाल प्रजापत, सुश्री तूहीना प्रकाश, किशोर कुमार, अध्यापक रवि कुमार मीणा, चेनाराम, नाथूलाल, रविन्द्र कुमार, मोहन गुर्जर आदि ग्रामीणों सहित विद्यालय के स्काउट्स भी उपस्थित रहे।

लाखनसर में पृथ्वी का संरक्षण विषय पर हुआ भव्य बाल संसद का आयोजन।

बीकानेर–राजकीय माध्यमिक विद्यालय लाखनसर में सामाजिक विज्ञान पाठ्यान्तर्गत संसाधनों के संरक्षण के तहत एजेण्डा-21 पृथ्वी का संरक्षण विषय पर बाल संसद का आयोजन किया गया। बाल संसद की अध्यक्षता कक्षा 10 की छात्रा कविता कुमारी द्वारा की गई एवं मुख्य अतिथि संस्थाप्रधान श्री राजुराम खिलेरी थे। आयोजन के दौरान कोविड-19 सम्बन्धी निर्देशों की पूर्णतया पालना की गई। बाल संसद के समस्त प्रतिनिधियों द्वारा पृथ्वी के संरक्षण एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किए गए। छात्र बलराम पुनिया ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी विचारों को सिर्फ सोशल मीडिया तक ही सीमित ना रखकर दैनिक जीवन में आत्मसात करना होगा। छात्रा उर्मिला कड़वासरा ने एजेण्डा-21 की नीतियाँ सदन के समक्ष रखीं जिनका अध्यक्षा द्वारा अनुमोदन किया गया। सामाजिक विज्ञान विषयाध्यापक श्री जयपाल सोनी द्वारा सदन के समस्त प्रतिनिधियों को ग्रामीण परिक्षेत्र में एजेण्डा-21 को लागू करने की शपथ दिलाई गई। विशिष्ट अतिथि श्री मालाराम जाट एवं प्रेमप्रकाश मीणा, अध्यक्षा कविता कुमारी द्वारा छात्र प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

भामाशाह ने भवन निर्माण हेतु भूमि का दान किया

नागौर– श्री रामस्वरूप कस्वां, सरपंच टुंकलिया ने रा.उ.मा.वि. टुंकलियां के भवन निर्माण हेतु तीन बीघा भूमि दान की है। इस भूमि पर नए विद्यालय भवन का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। नए विद्यालय भवन में स्वयं, भामाशाहों व ग्रामीणों के सहयोग से 15 कमरे मय बरामदा, हौज, चारदीवारी गेट, प्याऊ व सरस्वती मंदिर का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है। प्रधानाचार्य ने भामाशाहों का आभार व्यक्त किया।

सेवानिवृत्ति अवसर पर भामाशाह ने की भेंट

झालावाड़– राउमावि. झालरापाटन में प्रयोगशाला सहायक श्री भूपेंद्र सिंह झाला ने अपनी सेवानिवृत्ति के अवसर पर विद्यालय की फिजिक्स लैब हेतु दो पंखे भेंट किए। समुदाय के सहयोग से ही कोई भी विद्यालय साधन संपन्न बनता है। इस पुनीत कार्य के लिए प्रधानाचार्य श्रीमती प्रभा

सेन ने पूरे विद्यालय परिवार की और से श्री भूपेंद्र सिंह झाला का आभार प्रकट किया।

प्रधानाध्यापक ने वृक्षारोपण कर जन्मदिन मनाया

जालोर– प्रधानाध्यापक श्री सुरेंद्र सिंह परमार ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल में पौधारोपण किया गया। अध्यापक श्री राजेश बालोत बताया कि प्रधानाध्यापक पद पर कार्यरत श्री परमार ने मिसाल पेश की है। उन्होंने यह प्रेरणा शारीरिक शिक्षक श्री दलपत सिंह आर्य से ली है। क्योंकि उन्होंने अपने जन्मदिन पर भी पौधरोपण किया था। परमार ने कहा कि धरती का सिंगार वृक्ष है। इस मौके पर शारीरिक शिक्षक सर्वश्री दलपत सिंह आर्य अध्यापक श्री राजेश बालोत, छात्राध्यापिका हीना, नीतु राव, पंखु देवी व पवनी देवी उपस्थित थे।

सबसे बड़ी सेवा है जल सेवा

बीकानेर– जल सेवा भी इसी संस्कृति से प्रेरित है। उपनिषद में कहा गया है कि 'अमृत वै आपः' यानी पानी ही अमृत है। इसके अलावा पानी को 'शिवतमः रसः' यानी पेय पदार्थों में सबसे ज्यादा कल्याणकारी बताया गया है। इसी कहावत को चरितार्थ करता उदाहरण राउमावि. कृष्णनगर (लूणकरणसर) गाँव में स्थित एक भामाशाह परिवार ने कर दिखाया। इस भामाशाह परिवार द्वारा इस विद्यालय में लगभग एक लाख पचास हजार की लागत से एक जल घर का निर्माण करवाया। जिसमें एक बड़ा वाटर कूलर, आठ नल और एक पानी की मोटर लगवाई। वोल्टेज कम रहने के कारण एक स्टेपलाइजर भी लगवाया। इस पुनीत कार्य से विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शीतल व शुद्ध जल पीने के लिए मिल रहा है। इस पुनीत कार्य का शुभारंभ 21 जुलाई 2021 को ग्राम पंचायत कृष्णनगर के पीईईओ. श्री राकेश कुमार चोटिया और भामाशाह परिवार द्वारा किया गया। इस जल घर का निर्माण स्व. श्रीमती राजादेवी पत्नी स्व. श्री डूंगरराम सारण की याद में उनके पुत्रों सर्वश्री तेजाराम जी, नानूराम जी, नन्दराम जी व अमराराम जी सारण के द्वारा करवाया गया। इस कार्य के लिए शाला परिवार सदैव इनका ऋणी रहेगा। शाला परिवार द्वारा इन चारों भामाशाहों को 15 अगस्त 2021 को भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया गया।

विद्यालय विकास में भामाशाह का योगदान

सिरोही– भाखर आँचल के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निचलागढ़ में गत वर्षों के सतत प्रयासों से भामाशाह जुड़ने लगे। जो छात्र सुविधा और विद्यालय विकास हेतु दिल खोलकर योगदान दे रहे। सत्र 2019 में श्री बी.के. मुरलीधर भाई द्वारा 65,000 रुपये की लागत से 250 लीटर का आरओ. प्लांट विद्यालय को समर्पित किया। तत्पश्चात भामाशाह के सहयोग से वाटर कूलर भी मिला। गत सत्र में अक्षर ज्योति फाउंडेशन से कोरोना काल मे छात्रों को बचाव हेतु वार्ताएँ आयोजित कर मास्क वितरण किया। साथ ही 10,000 कि लागत से छात्रोपयोगी शिक्षण सामग्री का वितरण भी कुछ दिनों पहले श्री बी.के. अजप्पा भाई के निर्देशन में किया गया। उनके साथ आए श्रीमती शान्ता नाइक प्रिंसीपल ने छात्रों को ध्यान से शिक्षण प्रभावी बनाने के गुर बताए गए। प्रेरक व्याख्याता श्री गणेश कुमार बामनिया के अनुरोध पर विद्यालय में छात्र हित के लिए पुराने पड़े बेंचो के रंगरोगन ओर टूटी मेजों के रिपेयरिंग करवाने का भरोसा दिलाया और दो दिनों में उक्त कार्य को अंजाम दिया। इस मौके समस्त विद्यालय परिवार और शाला प्रबंधन समिति के सदस्य उपस्थित रहे। उन्होंने भामाशाह का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

विद्यालयी छात्राओं ने देखी सेना के हथियारों एवं उपकरणों की प्रदर्शनी

जयपुर– रक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध में विजय के पचास वर्ष पूर्ण के उपलक्ष में चित्रकूट स्टेडियम में सेना के हथियारों एवं उपकरणों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। सेना के इस स्वर्णिम विजय समारोह प्रदर्शनी को महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय मानसरोवर जयपुर की छात्राओं ने विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अनु चौधरी एवं शिक्षकों के नेतृत्व में देखा और बारीकी से जाना। इस प्रदर्शनी भ्रमण से विद्यार्थियों में सेना के प्रति सम्मान, देश-प्रेम, समर्पण और अनुशासन की भावना विकसित होगी।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajshan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल 'Adopt A School'

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय तिजारा, अलवर

(श्री राम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लिमिटेड कम्पनी पथरेड़ी द्वारा गोद लिया गया विद्यालय)

❐ मीरा मुखीजा

हाँ, मैं सपनों का ताना बाना बुनती हूँ, बुनकर ताना बाना सुन्दर चूनर चुनती हूँ, सपनों के चूनर में बालिका शिक्षा गुनती हूँ, संस्कारवान, आत्मरक्षी, हुनरबाज हो बालिकाएँ, ऐसी साधक गढ़ती हूँ।

मैंने वर्ष 2015 में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, तिजारा में पदस्थापन होने के उपरान्त यह पाया कि विद्यालय चारों ओर से खुला हुआ था, जिसमें कोई दरवाजा नही था। पशु, असामाजिक तत्व इत्यादि अनायास ही विद्यालय में प्रवेश कर जाते थे एवं विद्यालय का नामांकन 374 ही था। मन मे एक भाव था कि ऐसा विद्यालय नहीं..। मुझे भौतिक व शैक्षिक रूप मे कुछ विशेष विद्यालय चाहिए, कुछ करना होगा एवं इसके लिए अधिक धनराशि की आवश्यकता भी होगी। विद्यालय के परिक्षेत्र में पौधारोपण या खाद तैयार करने के लिए गड्ढा खोदते समय भगवान से यही प्रार्थना करती थी कि हे ईश्वर! एक स्वर्ण कलश मिल जाए तो मैं अपने विद्यालय को बहुत सुन्दर बना दूँ। शैक्षिक क्षेत्र में हमने अतिरिक्त कालांश (Extra Period) लगाना शुरू किया और फिर ईश्वर ने हमारी पुकार को सुना।

एकता प्रोजेक्ट के तहत विद्यालयों को विकास की ओर बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा था। तत्कालीन अति. जिला परियोजना समन्वयक श्री तिजक राज 'पंकज' जी द्वारा बताया गया कि उक्त प्रोजेक्ट में हमारे विद्यालय का चयन किया गया है एवं श्री राम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लिमिटेड कम्पनी पथरेड़ी के द्वारा यह कार्य करवाया जाएगा। शुरूआत में उन्होंने विद्यालय की आवश्यकताओं में मूल समस्याओं का समाधान किया जिसमें अध्यापकों व क्लर्क की व्यवस्थाएँ की।

विद्यालय को कम्पनी द्वारा 2014-15 से गोद लिया गया है, जिसके उपरान्त निरन्तर विद्यालय को सहयोग किया जा रहा है, जिसमें

मुख्यत: जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान प्रयोगशालाएँ मय उपकरण, विज्ञान कक्ष, तीन मुख्य दरवाजे, लॉन, छतों की मरम्मत, रंगरोगन इत्यादि का कार्य करवाया गया है। इसके साथ ही इ-क्यान तन्त्र के तहत श्री राम पिस्टन्स द्वारा कम्प्यूटर लैब में कम्प्यूटर की मरम्मत, फर्नीचर, इन्वर्टर, कम्प्यूटर शिक्षक की व्यवस्था भी की गई तथा स्टाफ हेतु फर्नीचर, ऑफिस फर्नीचर, विद्यार्थी फर्नीचर 200 की संख्या, आर.ओ., छात्राओं हेतु अतिरिक्त किताबें, रैम्प, कैमरें, लॉन टाइल्स, चार दिवारी, विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण इत्यादि का कार्य गत वर्षों में करवाया गया है। जिसकी अनुमानित लागत 1.50 करोड़ रुपये है।

इसके साथ ही सत्र 2017-18 में सम्पूर्ण बालिकाओं को गणवेश, कक्षा 06 से 11 तक की कक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता छात्रा को 8400, 5400, 3600/- प्रोत्साहन राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जा रही है एवं मेरिट कम मीन्स में न्यूनतम छात्रवृत्ति कक्षा 03 से 08 तक 80 रु. व 09 से 12 में 110 रु. प्रति माह प्रदान करवाई जा रही है, जिससे बालिकाएँ स्टेशनरी व्यय वहन कर सकती है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल की स्थापना उपरान्त श्री राम पिस्टन्स द्वारा वर्ष 2020 में पोर्टल के विकल्प 'Adopt A School' के माध्यम से विद्यालय को तीन वर्ष हेतु गोद का नवीनीकरण किया गया है, जिसमें कम्पनी द्वारा विद्यालय के अनावृर्ती में 12.50 लाख एवं आवृर्ती व्यय 15.00 लाख रुपये (तीन वर्ष में) वहन किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त वर्तमान सत्र में विद्यालय में 05 कक्षा-कक्षों का निर्माण (अनुमानित 60 लाख), कक्षा 01 से 12 तक की छात्राओं हेतु ब्लेजर, यूनिफॉर्म, टीशर्ट-लॉवर/ ट्रेकसूट, स्कूल बैग, स्कॉलरशिप इत्यादि पर भी लगभग 11.50 लाख रुपये का व्यय किया जाएगा। मुझे अहसास हुआ कि सोने का मटका जो मेरी निगाहें गड्ढों को खोदते वक्त ढूँढ़ती थी, वो ईश्वर द्वारा श्री राम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लिमिटेड पथरेड़ी कम्पनी के रूप में मिला।

श्री राम पिस्टन्स के सहयोग का परिणाम है कि विद्यालय का नामांकन 800 से अधिक हो चुका है एवं विद्यालय की छात्राओं द्वारा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर जलसा कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी नृत्य की प्रस्तुति दी गई। उक्त विद्यालय के साथ-साथ कम्पनी द्वारा राउमावि. भिवाड़ी, अलवर को भी गोद लिया गया है एवं चौपांकी, बहादरी, सिरमौली, बम्बौरा इत्यादि विद्यालयों में भी सहयोग किया जा रहा है।

प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
तिजारा, अलवर (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–अगस्त 2021 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	GRAM VIDYALAY VIKAS SAMITI MIRZAWALI MER	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 12 AG MIRJAWALIMER (211160)	HANUMAN GARH	451000
2	MAHESH KUMAR JANGID	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	400000
3	KESHRA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	300000
4	RAJPUT SAWAISINGH BHIMSINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	270000
5	AXIS WEB ART PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL UDSAR LODERA (215300)	CHURU	260000
6	MAHENDRA SINGH	GOVT. SECONDARY SCHOOL SULKHANIYA CHHOTA (215265)	CHURU	250000
7	NARENDAR POONIA	GOVT. SECONDARY SCHOOL SULKHANIYA CHHOTA (215265)	CHURU	250000
8	LEELADHAR	GOVT. SECONDARY SCHOOL ANTROLI (405575)	SIKAR	225000
9	MANOJ SINGH SHEKHAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	150000
10	SANTOSH PRAJAPAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL UDSAR LODERA (215300)	CHURU	100000
11	SOHAN RAM REWAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DEENDARPURA (219773)	NAGAUR	100000
12	KIRTI KULHARI	SHAHEED NAYAK BAJRANG LAL GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHANDHAR KULHARIYON KA BASS (215828)	JHUNJHUNU	100000
13	SEEMA MINERALS AND METALS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RIWADI (220539)	JAISALMER	100000
14	SANTOSH KANWAR	GOVT. SECONDARY SCHOOL BHOJASAR (215559)	CHURU	90000
15	RAMU RAM BENIWAL	GOVT. PRIMARY SCHOOL NAVIN LUHARA (410485)	CHURU	78600
16	PRITI SUNDA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEUWA (215217)	CHURU	77100
17	CHAND MAL AGARWALLA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BARDWA (219754)	NAGAUR	75850
18	MOOLA RAM SARAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RASAL (219966)	NAGAUR	75850
19	INDER SINGH RATHORE	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHARNAI TEH.-MAKRANA (220096)	NAGAUR	75750
20	TEJ PRATAP JAKHAR	GOVT. SECONDARY SCHOOL PITHRASAR (211414)	BIKANER	75750
21	SHYAM LAL SANGWA	GOVT. SECONDARY SCHOOL BUNARAWATA	NAGAUR	75750
22	MOHAN LAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHHAPRA (219599)	NAGAUR	75750
23	RAMNIWASH BAJROLIYA	SHAHID LANCE NAIK LIKHMARAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHARWALIYA (219783)	NAGAUR	75750
24	ROHIT KUMAR JOSHI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PIPLAGUNJ (223042)	DUNGAR PUR	75750
25	RAMSWAROOP	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANSA (213510)	NAGAUR	75750
26	RUGHA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SENANI (220033)	NAGAUR	75750
27	OMSHREE AGRO TECH PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHARIJA (213319)	SIKAR	75750
28	BRN INFRASTRUCTURE PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJLIYA (219965)	NAGAUR	75750
29	BABU LAL KARWA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL KHINWSAR (220018)	NAGAUR	75750
30	BHUPENDRA JOSHI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BHOGAPURA (486720)	BANSWARA	64200
31	GG VALVESPRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MANVAKHEDA (225227)	UDAIPUR	63278
32	ARINDAM GUHA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL PRAGPURA (218351)	JAIPUR	59500
33	ANOOP BHATT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHODAN (223891)	BANSWARA	51000
34	YOGESH SINDHAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BORI TEH PRATAPGARH DIST PRATAPGARH RAJASTHAN (217776)	PRATAP GARH	51000
35	PREM LATA CHAUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NARAYANPURA (219957)	NAGAUR	51000
36	GAJENDRA PURI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LANGERA (220879)	BARMER	51000
37	PRAMOD KUMAR SAINI	JODHRAJ MOHANLAL BAJAJ GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL WARD NO 12 (213233)	SIKAR	51000
38	ILIYAS KHAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LADARAMSA (219789)	NAGAUR	50750
39	ANAND KUMAR YADAV	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MANCHA (216320)	ALWAR	50100
40	RAJKUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SUJAWAS (219133)	SIKAR	50000
41	ABHA BANSAL	SETH PREM SUKH DAS GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEHALA (215582)	CHURU	50000
42	MAHIPAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHEENGSARA (219851)	NAGAUR	50000
43	MARAMAN DEVI	GOVT. SECONDARY SCHOOL DHANI MOJI (215244)	CHURU	50000

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–अगस्त 2021 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	129	2701261
2	NAGAUR	330	1638732
3	SIKAR	123	528010
4	HANUMANGARH	34	469570
5	BANSWARA	328	327067
6	PALI	262	293304
7	AJMER	549	279849
8	CHITTAURGARH	133	264848
9	JHUNJHUNU	86	257281
10	PRATAPGARH	449	241258
11	BHILWARA	728	188571
12	ALWAR	324	173176
13	BARMER	123	146587
14	DUNGARPUR	102	135794
15	UDAIPUR	193	129602
16	KOTA	110	125827
17	GANGANAGAR	74	117271
18	BUNDI	661	107198
19	BIKANER	74	97031
20	JAISALMER	399	94345
21	BARAN	6	75000
22	JAIPUR	70	68802
23	RAJSAMAND	89	68721
24	DAUSA	172	67747
25	JODHPUR	49	56860
26	JHALAWAR	161	48611
27	JALOR	139	46479
28	DHAULPUR	27	42560
29	SAWAIMADHOPUR	12	21000
30	TONK	12	6950
31	BHARATPUR	8	2780
32	SIROHI	5	1400
33	KARAULI	13	1050
	Total	**5974**	**8824542**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट :–

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थाओं/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Project Submit किए गए। अगस्त 2021 में 878.54 लाख की लागत के कुल 29 Projects को स्वीकृति/अनुमति प्रदान की गई है। उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects में से 01 लाख से अधिक की लागत वाले Project निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/व्यय
01	गौसेवी श्री पदमाराम कुलरिया सुथार चेरिटेबल ट्रस्ट	837 838	बीकानेर जिले में राबाप्रावि. दावा, नोखा के नवीन भवन का निर्माण एवं राबाउमावि. सुथारो का बास, नोखा में हॉल का निर्माण	361.39 लाख
02	कालूराम कर्णाराम विश्नोई	844	जालौर जिले के राउमावि हरियाली के नवीन भवन का निर्माण	228 लाख
03	चम्बल फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड	835 836 841	कोटा जिले के 14 राजकीय विद्यालयों में आवश्यकतानुार कक्षा–कक्ष, मरम्मत, चारदीवारी, रंग– रोगन, शौचालय इत्यादि का निर्माण। कोटा व बारां के 30 राजकीय विद्यालयों Comprehensive Career Guidance and Mentoring Program के तहत सहयोग कोटा व बारां के 30 राजकीय विद्यालयों Computer Aided and online Learning Program के तहत सहयोग	207.39 लाख
04	मोजेक इण्डिय प्रा. लिमिटेड	840 847	अलवर जिले के राउमावि बगैर राजपूत एवं राउप्रावि करिरिया में मरम्मत, चारदीवारी, शौचालय, वॉटर हारवेस्टिग इत्यादि का कार्य।	34.66 लाख
05	एस.एम. सहगल फाउडेशन	818	अलवर जिले के राउमावि साहोडी में कक्ष–कक्षों की मरम्मत, फर्नीचर, शौचालय, चारदीवारी, वॉटर हारवेस्टिग इत्यादि का कार्य।	20.83 लाख
06	श्री रेशम सिंह सिद्धु	842	श्रीगंगानगर जिले के राउमावि बुद्धसिंहवाला के मुख्य द्वार का निर्माण कार्य।	07 लाख
07	श्री नारायण टाक	833	नागौर जिले के राउप्रावि नं. 02 नागौर की चार दीवारी का कार्य मय गेट।	05 लाख
08	श्री दुलीचन्द	774	चूरू जिले के राउप्रावि कनकपुरा में कक्षा–कक्ष का निर्माण।	04 लाख
09	श्री कालूराम सांखला	831	नागौर जिले के राउप्रावि नं. 02 नागौर की चार दीवारी का कार्य।	04 लाख
10	श्री शंकर लाल परिहार	834	नागौर जिले के राउप्रावि नं. 02 नागौर में रंगमंच के निर्माण का कार्य।	1.25 लाख

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अक्टूबर, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अरुण कुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा
अक्टूबर, 2021

खुमाराम कक्षा 8 (बाएं) एवं राधेश्याम कक्षा-8 (दाएं)
श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर

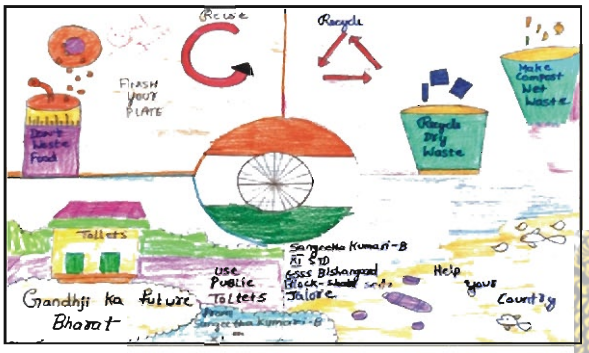

संगीता कुमारी-B कक्षा11 (बाएं) एवं पूजा कुमारी कक्षा-8 (दाएं)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, जालोर

किशोरी बाल मेला में स्वनिर्मित व प्रदर्शित

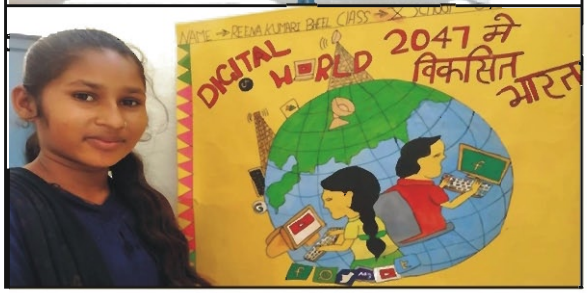

संध्या पाटीदार कक्षा-10, दिनेश गुर्जर कक्षा-9,सपना कुमारी मेहर कक्षा-10 एवं रीना कुमारी भील कक्षा-10
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरड़ा, झालरापाटन, झालावाड़

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अक्टूबर, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2021 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्र वीथिका : अक्टूबर 2021

माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल वार्ड नंबर-10 लक्ष्मणगढ़ सीकर में कक्षा-कक्षों का शिलान्यास एवं भामाशाहों की मदद से सम्पन्न विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं क्षेत्र के उप जिला अस्पताल का निरीक्षण कर आधारभूत सुविधाओं का भी लोकार्पण किया।.

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान-2021 से सम्मानित राजस्थान के शिक्षक श्री दीपक जोशी, श्री जयसिंह एवं श्रीमती अचला वर्मा को महामहिम राष्ट्रपति महोदय की ओर से माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा) श्री पवन कुमार गोयल द्वारा सम्मानित किया गया।

सालासर में रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि श्री सौरभ स्वामी I.A.S. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा स्वयं रक्तदान किया गया,निदेशक महोदय की प्रेरणा से शिविर में 100 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ।